जहाज का पंछी

बी.ए.-II हिन्दी (अनिवार्य)

B.A.-II Hindi (Compulsory)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

रोहतक–124 001

Copyright © 2003, Maharshi Dayanand University, ROHTAK
All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

Developed & Produced by EXCEL BOOKS PVT. LTD., A-45 Naraina, Phase 1, New Delhi-110028

विषय-सूची

अध्याय 1 इलाचन्द्र जोशी का साहित्यिक परिचय 5

अध्याय 2 जहाज का पंछी : कथानक 7

अध्याय 3 'जहाज का पंछी' उपन्यास का कथासार 24

अध्याय 4 'जहाज का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा 26

अध्याय 5 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास के नामकरण का औचित्य 28

अध्याय 6 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की तात्विक समीक्षा 30

अध्याय 7 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास का नायकत्व 33

अध्याय 8 'जहाज का पंछी' उपन्यास में निहित मनोवैज्ञानिकता 35

अध्याय 9 'जहाज का पंछी' उपन्यास का उद्देश्य अथवा समस्या–चित्रण 37

अध्याय 10 'जहाज का पंछी' उपन्यास की भाषा–शैली 39

अध्याय 11 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर नायक का चरित्र–चित्रण 41

अध्याय 12 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर लीला का चरित्र–चित्रण 44

अध्याय 13 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर करीम चाचा का चरित्र–चित्रण 46

अध्याय 14 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर स्वामी जी का चरित्र–चित्रण 47

अध्याय 15 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर बेला का चरित्र–चित्रण 49

अध्याय 16 दीप्ति का चरित्र–चित्रण 51

अध्याय 17 सईद पहलवान का चरित्र–चित्रण 53

अध्याय 18 पंचानन का चरित्र–चित्रण 54

अध्याय 19 'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर प्यारे का चरित्र–चित्रण 55

अध्याय 20 भादुड़ी महाशय का चरित्र–चित्रण 56

बी.ए.-II हिन्दी (अनिवार्य)

जहाज का पंछी

(इलाचन्द्र जोशी)

पूर्णांकः 100

समयः 3 घंटे

जहाज का पंछी (संक्षिप्त संस्करण) इलाचन्द्र जोशी

निर्देशः

1. काव्य पुस्तक से व्याख्या के लिए चार पद्यावतरण पूछे जाएंगे जिनमें से परिक्षार्थियों को दो की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या आठ अंकों की होगा। पूरा प्रश्न 16 अंकों का होगा।
2. काव्य पुस्तक से संबंधित किन्हीं तीन कवियों का साहित्यिक परिचय पूछा जाएगा जिनमें से परिक्षार्थियों को किसी एक का उत्तर देना होगा। यह प्रश्न 10 अंकों का होगा।
3. अंधेर नगरी से चार लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परिक्षार्थियों को दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का होगा।
4. ''जहाज का पंछी'' उपन्यास से चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परिक्षार्थियों को दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा।
5. ''अभिनव गद्य गरिमा'' से चार गद्यांश पूछ जाएंगे जिनमें से परिक्षार्थियों को दो की सप्रसंग व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या 8 अंकों की होगी। इनमें 4 लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से परिक्षार्थियों को किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 5+5 अंकों का होगा।
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहस से दस प्रश्न अति लघुत्तरी पूछे जाएंगे। जिनमें से परिक्षार्थियों को 8 प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। पूरा प्रश्न 16 अंकों का होगा।

अध्याय–1
इलाचन्द्र जोशी का साहित्यिक परिचय

सुप्रसिद्ध मनोविश्लेषणात्मक कथाकार इलाचन्द्र जोशी का जन्म 13 दिसम्बर, सन् 1902 ई॰ को अल्मोड़ा के एक प्रतिष्ठित मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनका पारिवारिक वातावरण सांस्कृतिक तथा शैक्षिक था। इन्हें पढ़ने की बहुत रुचि थी। हाई स्कूल में पढ़ते हुए ही इन्होंने रामायण, महाभारत, कालिदास, शैली, कीट्स, टायस्टॉय, चेरबव आदि को पढ़ लिया था। इन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, बांग्ला, संस्कृत आदि भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था। हाई स्कूल में पढ़ते हुए ही ये घर से भाग कर कोलकाता चले गये थे। वहाँ इन्होंने 'कलकत्ता समाचार' में काम किया तथा यहीं सुप्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार शरत् बाबू से भी इनकी भेंट हुई थीं इसके बाद वे इलाहाबाद चले गए और वहां 'चाँद' के सहयोगी सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे। इसके बाद इन्होंने 'सम्मेलन पत्रिका', 'दैनिक भारत', 'संगम' आदि पत्र–पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। सन् 1951 ई॰ में मुम्बई आकर इन्होंने 'धर्मयुग' साप्ताहिक का सम्पादन किया। बाद में वे प्रयाग आकर 'साहित्यकार' का सम्पादन करने लगे तथा बाद में आकाशवाणी में काम करने लगे। कुछ समय पश्चात् वहां से त्याग–पत्र देकर स्वतंत्र लेखन में लग गए।

रचनाएँ:

इलाचन्द्र जोशी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपनी रचनाओं द्वारा समृद्ध किया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं––

1. **उपन्यास** – घृणामयी, संन्यासी, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, निर्वासित, मुक्तिपथ, सुबह के भूले, जिप्सी, जहाज का पंछी।
2. **कहानी संग्रह** – धूप रेखा, दीवाली ओर होली, रोमांटिक छाया, आहुति, खण्डहर की आत्माएं, डायरी के नीरस पृष्ठ, कटीले फूल लजीले कांटे।
3. **निबंध** – साहित्य सर्जना, विवेचना, विश्लेषण, साहित्य चिन्तन, शरत् : व्यक्ति और कलाकार, रवीन्द्रनाथ, देखा–परखा।
4. **अन्य** – ऐतिहासिक कथाएं, उपनिषदों की कथाएं, महापुरुषों की प्रेम कथाएँ , इक्कीस विदेशी उपन्यासकार।

साहित्यिक विशेषताएँ :

इलाचन्द्र जोशी के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **श्रेष्ठ कहानीकार** – इलाचन्द्र जोशी की कहानियों में मध्यमवर्गीय ह्रासोन्मुख समाज का चित्रण तथा व्यक्ति के अहं भाव का विश्लेषण अधिक प्राप्त होता है। इन्होंने अपनी कहानियों में मनुष्य की उन प्रवृत्तियों का चित्रण अधिक किया है जो वर्तमान समाज के पतन की कारण हैं। ऐसे पतनोन्मुख समाज का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में लेखक सिद्धहस्त हैं। इनके द्वारा रचित कहानी 'सजनवा' हिन्दी की पहली मनोविश्लेषणात्मक कहानी मानी जाती है। इस कहानी में लेखक ने मध्यवर्ग के पतनशील जीवन की विश्लेषणात्मक आलोचना करते हुए व्यक्ति के अहंभाव पर तीक्ष्ण प्रहार किया है।
2. **श्रेष्ठ उपन्यासकार** – इलाचन्द्र जोशी के द्वारा रचित उपन्यासों में मुख्य रूप से मनोविश्लेषण की प्रधानता है। 'जहाज का पंछी' उपन्यास को छोड़कर इनके सभी उपन्यास नारी–पुरुष संबंधों तथा उनमें सामाजिक परिस्थितियों तथा जन्मगत संस्कारों से उत्पन्न कुण्ठित व्यक्तित्व की विकृतियां एवं संघर्ष चित्रित किए गए हैं। 'जहाज का पंछी' में समाज से निरपेक्ष व्यक्ति की पीड़ा का चित्रण न होकर समाज की सामूहिक पीड़ा से व्यथित व्यक्ति को मुखरित किया गया है।

'संन्यासी' में नंद किशोर शान्ति और जयन्ती दो स्त्रियों से प्रेम करता है परन्तु अपनी संदेहशीलता के कारण किसी का साथ अन्त तक नहीं निभाता। 'पर्दे की रानी' में इन्द्रमोहन दो स्त्रियों शीला और निरंजना से प्रेम करता है। 'प्रेत ओर छाया' तथा 'निर्वासित' में एक पुरुष अनेक स्त्रियों से प्रेम करता है।

3. **मनोविश्लेषणात्मकता** – इलाचन्द्र जोशी के अधिकांश उपन्यास फ्रॉयड के यौनवाद तथा मार्क्स के द्वन्दात्मक भौतिकवाद से प्रभावित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में काम कुण्ठाग्रस्त, आत्मनिष्ठ और मानसिक विकृतियों से पीड़ित पात्रों को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य के बाह्य–जगत् के समान ही उसका एक अनतर्जगत् भी होता है, जो उस बाह्य–जगत् की तुलना में अधिक शक्तिशाली होता है। इससे भी अधिक जटिल उसका अवचेतन होता है। चेतन और अवचेतन के सामंजस्य के अभाव में मानव जीवन दुर्बोध बन जाता है। इससे उसकी आकांक्षायें अधुरी रह जाती हैं और वह कुण्ठाओं से ग्रस्त हो जाता है। इन्हीं कुण्ठाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जोशी जी के उपन्यासों में प्राप्त होता है।

4. **व्यक्तिवाद** – इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में व्यक्ति को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। 'जहाज़ का पंछी' के अतिरिक्त इनके सभी उपन्यास 'व्यक्ति' के चारों ओर घूमते हैं। ये पात्र समाज से निरपेक्ष रहकर नितांत वैयक्तिक चेतना –लोक में विचारण करते रहते हैं और अपनी ही निराशा, कुण्ठा और पीड़ा में डूबे रहते हैं। 'जहाज का पंछी' में उन्होंने व्यक्ति के स्थान पर समाज कल्याण के लिए सामूहिक चेतना को प्रधानता दी है।

5. **विशिष्ट जीवन–दर्शन** – इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में दमित वासनाओं, अवचेतन मन–सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, अहंभाव की एकांतिकता आदि से सम्बन्धित अपनी मान्यताओं को एक विशिष्ट जीवन–दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है। 'प्रेत और छाया' फ्रॉयड की काम–ग्रन्थि से प्रभाव लक्षित होता है। उन्होंने 'संन्यासी' उपन्यास में अन्तश्चेतना का विश्लेषण किया है।

6. **प्रेमाभिव्यक्ति** – इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में एक पुरुष अनेक स्त्रियों से प्रेम करता हुआ चित्रित किया गया है। 'प्रेत और छाया' उपन्यास में प्रेम के विकृत रूप के दर्शन होते हैं, 'मुक्तिपथ' में प्रेम का दिव्य रूप प्रस्तुत किया गया है तथा 'जहाज का पंछी' में प्रेम के सात्विक रूप को प्रतिष्ठित किया गया है। लेखक ने पात्रों को चेतन रूप से विवाह को अस्वीकार करते, किन्तु अवचेतन मन से विवाह की आवश्यकता को अनुभव करते हुए उपन्यासों में चित्रित किया है।

7. **सामाजिक विसंगतितयाँ** – इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में वेश्याओं, अवैध संतोनों, अनाथों, व्यभिचारियों, मानसिक रोगियों, चोरों, हत्यारों, भ्रष्ट नेताओं, विधवाओं , प्रौढाओं आदि से सम्बन्धित समस्याओं तथा विकृतियों का अधिक चित्रण किया गया है। लेखक का इस संबंध में मानना है कि उसे इस प्रकार के दुर्बल–स्वभाव के व्यक्तियों को अपने कथा संसार में प्रस्तुत करने से उनकी समस्याओं से समाज को परिचित करना है, जिससे समाज उनके लिए कुछ कर सके।

8. **भाषा –शैली** – इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में मुख्य रूप से तत्सम प्रधान, सहज और सुबोध भाषा का प्रयोग किया है। इनकी रचना शैली आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक एवं विचार प्रधान है। मनोविश्लेषणात्मक प्रसंगों में इनकी शैली गंभीर हो जाती है। इनकी भाषा में मानव मन की गहराइयों तक पहुंचने की शक्ति है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि इलाचन्द्र जोशी का कथा साहित्य मुख्य रूप से मनोविश्लेषणात्मक है। वे व्यक्ति चित्रण में निपुण है। उन्होंने मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का सहजरूप में यथार्थ विश्लेषण किया है।

अध्याय–2
जहाज का पंछी : कथानक

प्रस्तुत उपन्यास 'जहाज़ का पंछी' के लेखक 'श्री इलाचन्द्र जोशी' हैं। 'जहाज़ का पंछी' एक ऐसे मध्यमवर्गीय निराश्रित और असहाय व्यक्ति की कथा है जो कलकत्ते (कोलकाता) में परिस्थितिवश प्रताड़ित जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। उसकी बौद्धिक चेतना उसे इस कार्य के लिए रह–रह कर धिक्कारती है तथा नित नूतन पथ अपनाने को प्रेरित करती है। उसने वहां रहकर कई प्रकार के कार्य किए लेकिन उसका अन्तर्मन संतुष्टि प्राप्त नहीं कर सका है। इसलिए वह 'जहाज के पंछी' के समान इधर–उधर निरुद्देश्य भटक कर फिर अपने उसी उदिष्ट पथ का राही बन जाता है जिसे अपनाने के साथ वह अपने अन्तर्मन में संजोए हुए था। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने आज के सुशिक्षित किन्तु महत्त्वाकांक्षी तथा बौद्धिक चेतना से आक्रन्ति तरुण वर्ग के जीवन का सजीव चित्रण किया है।

कथानायक नौकरी की खोज में कलकत्ता (कोलकाता) महानगरी में आ पहुंचा है। वह पहले भी एक बार कलकत्ता (कोलकाता) आकर रह चुका था। उस समय उसका एक परिचित वहां रहता था, जिसके पास वह रहा था। इस बार जब वह वहां पहुंचा तो पता चला कि उसका परिचित मर चुका है। इसलिए वह इस महानगर में इधर–उधर धक्के खाने के लिए विवश हैं उसकी जेब में इतनी पूंजी नहीं है, जिससे वह भोजन तथा सोने की जगह का प्रबन्ध कर सके। उसे ज्ञात हो जाता है कि बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं की पंक्तियों से निर्मित इस महानगरी में उसे इतना भी स्थान प्राप्त नहीं हो सकता जहां वह अपने–आप को सुरक्षित समझ सके। किसी भी प्रकार की नौकरी प्राप्त करने के उसके सारे प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। जिससे उसकी स्थिति दिन–प्रतिदिन दयनीय बन जाती है। इससे वह शारीरिक रूप से ही नहीं मानसिक रूप से भी अस्वस्थ हो जाता है। वह अपनी स्थिति देखते हुए एक निर्णय लेता है कि वह अपनी करुण कथा किसी व्यक्ति को सुनाकर उसके हृदय में अपने लिये दया भाव उत्पन्न कर सके जिससे वह व्यक्ति उसको कुछ पैसे दे दे और वह अपनी भूख शान्त कर सके। लेकिन कथानायक ऐसा करने का साहस नहीं जुटा पाता है। इसका कारण उसके अपने विगत संस्कारों का उस पर प्रभाव तथा कुछ उसका संकोचशील व्यक्तित्व है। साथ में उसकी स्थिति कुछ ऐसी बन गई थी कि जो भी व्यक्ति उसे देखता––वह उसे जेबकतरा समझकर अपनी जेब सम्भालने लगता था। ऐसा वह उसकी वेश–भूषा देखकर करता था। कुछ ही दिनों में कथानायक के सिर के बाल रूखे–सूखे और अस्त–व्यस्त, दाढ़ी बढ़ी हुई, फटे और मैले कपड़े, चेहरा क्षय रोगी के समान हो गया था। लोगों का अपने प्रति ऐसा व्यवहार देखकर उसके मन पर इतना बुरा प्रभाव पड़ता है कि वह स्वयं को वैसा ही समझने लगता है।

उसके हृदय में अभी कुछ संस्कार शेष है। वह अपने पास बैठे दो नवयुवकों में से एक का गिरा हुआ बटुआ उठाकर उसे वापिस करता है। यदि वह चाहता तो ऐसी स्थिति में रख सकता था। वे नवयुवक उसे धन्यवाद देने के स्थान पर पुलिस के सिपाही को बुला करउसे जेब काटने के जुर्म में पकड़वा देते हैं। ऐसा वे उसकी दुर्दशा देखकर करते हैं। सिपाही उसे धक्का देता हुआ घसीटता है। सिपाही के धक्के से वह फुटपाथ पर जाकर गिरता है, जिससे उसके ओंठ कट जाते हैं और खून निकलने लगता है और वह बेहोश हो जाता है। होश में आने पर वह स्वयं को अस्पताल के एक वार्ड में लेटे पाता है। चारों ओर पलंग–ही–पलंग बिछे हैं। जिस पर कोई–न–कोई रोगी लेटा है। कथानायक स्वयं को पलंग पर लेटे पाकर संतोष अनुभव करता है, क्योंकि वह आज फुटपाथ पर या बेंच पर नहीं है। उसे वहां एक गिलास दूध एवं हल्का खाना खाने को मिलता है। जिससे उसे बड़ी तृप्ति होती है। उसे पुलिस वाले का धक्का वरदान लगता है। कुछ दिनों बाद उसे यह अनुभव होने लगा कि उसके शरीर में शक्ति का संचार हुआ है। जिससे उसे अस्पताल का उदास वातावरण भी सुखद अनुभूति का अनुभव कराता है। वहां रहते हुए कथानायक का मनुष्य के प्रति मनुष्य की सहज संवेदना तथा सहानुभूति के अस्तित्व के प्रति विश्वास जमने लगा था। आपस में रोगियों का एक–दूसरे के प्रति स्नेह तथा व्याकुलता, नर्स का मरीज को दवाई देते हुए स्नेह से बात करना, डॉक्टर का निराश रोगियों में आशा का संचार करना आदि घटनाओं ने उसके मन पर अच्छा प्रभाव छोड़ा था।

अस्पताल में रहते हुए उसका परिचय बराबर के पलंग वाले रोगी से हुआ, जो मौन दृष्टि से उसे कई दिनों से काफ़ी गौर से देख रहा था। वह मौन रहकर भी उस पर प्रश्न रूपी तीरों की बौछार करता प्रतीत हो रहा था। अन्ततः उसने स्वयं ही मौन भंग करते हुए परिचय बढ़ाने का प्रयत्न किया। उस व्यक्ति का नाम प्यारे है वह वैलेजली स्ट्रीट में रहता है। यहां पर वह तिल्ली का इलाज करवाने आया है। वह धोबी का काम करता हैं उसके घर में उसकी पत्नी, भौजी, लड़का एवं लड़के की बहू और लड़की बेला है। अस्पताल के डॉक्टरों और नर्सों की दृष्टि में कथानायक स्वस्थ हो चुका था। इसलिए वे उसे अस्पताल से छुट्टी देने की तैयारी में लग गए थे। किन्तु जैसे ही उसे इस बात का पता चला तो उसकी आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। उसे वही भुखमरी के दिन, फुटपाथों और पार्कों में आवारा घूमते रहने की कटु स्मृतियां याद आने लगीं। वह अस्पताल में पड़े रहने के बहाने खोजने लगा। जिससे उसके खाने तथा रात बिताने का स्थान बना रहे। वह अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए नर्स को आता देख पेट दर्द का बहाना करके ज़ोरों से चिल्लाने लगता है। वह ऐसे नाटक करने का अभ्यस्त नहीं था, इसलिए अपनी चालाकी पर वह स्वयं ही हंस पड़ा। नर्स उसका सारा नाटक भांप जाती है। वह उसे पुलिस के सिपाही की सहायता से अस्पताल से बाहर निकालती है। वह बाहर निकलने से पहले समाज–व्यवस्था के विरुद्ध एक लम्बा चौड़ा भाषण देता है तथा बड़े लोगों का पर्दा फाश करता है। वह निम्न वर्ग के प्रति उच्च वर्ग तथा डॉक्टर के व्यवहार की कटु आलोचना करता है।

जब वह अस्पताल के दरवाज़े से बाहर निकलता है तो उसे एक डॉक्टर पीछे से आवाज़ देता है। वह डॉक्टर नायक की परिस्थितियों से सहानुभूति रखते हुए उसे दस रुपए देता है। उन रुपयों को वह उधार के रूप में स्वीकार करता है। उसके साथ ही एक अन्य बीमार को भी अस्पताल से निकाला जाता है। उसकी ओर देखकर वह दस रुपयों में से पांच रुपये उसे थमा देता है। उसे फिर से कलकत्ता (कोलकाता) के पार्क एवं फुटपाथ याद आने लगते हैं। वह फिर से कटु परिस्थितियों का सामना करने के लिए एक बार फिर से तैयार हो जाता है। वह घूमते हुए अचानक एक पुस्तकों की दुकान पर पहुंचा। जैसा कि उसके साथ पहले भी होता आया था कि प्रत्येक व्यक्ति उसे चोर या गिरहकट समझकर उससे अभद्र व्यवहार करता है और साफ–साफ कहता है कि गिरहकटी करनी हो तो कोई दूसरी जगह पकड़ो। दुकानदार भी उससे ऐसा ही व्यवहार करता है। दुकानदार की बात सुनकर नायक को अपने व्यक्तित्व का आभास होने लगा था। बहुत दिनों से भोजन की कोई नियमित व्यवस्था न होने पर उसका शरीर दुर्बल हो गया था। चेहरे पर चोरों , गिरहकटों, अपराधियों और दुष्कर्मियों जैसी छाप पड़ गई थी। वैसे तो उसे हररोज शीशा देखने का अवसर नहीं मिलता था लेकिन अचानक किसी दुकान पर लगे शीशे पर दृष्टि चली जाती तो वह स्वयं भी अपना चेहरा देखकर डर जाता था। उसके कपाल झुर्रियों से भरे हुए, आंखें गड्ढे में धंसी हुई तथा आंखों के नीचे नीले–नीले दाग, गाल पिचके हुए, बाल रुखे और धूल से भरे हुए और इन सबके साथ चेहरे पर झलकने वाली निराशा, घृणा और विद्रोह की मिश्रित छाया ने कुल मिलाकर ऐसा हुलिया बना दिया था कि यदि कोई मेरे सम्पर्क में आता तो वह कतराकर जेब बचाता हुआ निकल जाता था। लोगों के ऐसे व्यवहार से उसे कोई आश्चर्य नहीं होता था। यह सब सोचते हुए उसे दुकानदार के अभद्र वयवहार से अत्यन्त मानसिक पीड़ा पहुंची थी। केवल बाहरी परिवेश ही परिचय का साधन है–यह एक विषमता ही है।

दुकानदार के भ्रम को दूर करने और अपने अहं की संतुष्टि के लिए वह इस बात पर अड़ जाता है कि इन पुस्तकों को देखने का, नापसन्द होने पर न खरीदने और पसंद आने पर खरीदने का उसे पूरा अधिकार है ! वह उसे बाहर नहीं निकाल सकता। उसकी नज़र 'कॉनफेशन्स ऑफ ए ठग' नामक पुस्तक पर पड़ती है। जिसका मूल्य दुकानदार पांच रुपये बताता है। किन्तु उसकी जेब में चार रुपए चौदह आने थे। वह चार रुपए में पुस्तक का सौदा तय कर लेता है। दुकान से निकलकर वह भटकता हुआ 'चितरंजन एवेन्यू' पहुंचता है, जहां उसे एक विशाल भवन दिखाई देता है। भवन की बनावट और रंग–ढंग से किसी बड़े सेठ का निवास स्थान लगता है। भवन के मुख्य द्वार पर एक दरबान बन्दूक लिए बैठा था। अचानक उसे लगता है कि सम्भवतः उसे यहां कुछ काम मिल जाए। वह वहां के सेठ से मिलता हैं लेकिन वहां भी उसके अनुसार कोई भी काम नहीं था। यहां तक कि चौका–बरतन का काम भी नहीं था। यहां से भी उसे बाहर निकाल दिया जाता है।

इसी तरह घूमते हुए वह एक दिन 'श्री राम निवास' नामक सुन्दर भवन के सामने पहुंचता है। भवन के बाहर मालिक का नाम बंग्ला अक्षरों में पत्थर पर खुदा है। मालिक का नाम–खगेन्द्र मोहन भादुड़ी था। नाम के आगे एम. एल. ए. के अतिरिक्त और भी कई उपाधियां जड़ी हुई थीं। भादुड़ी महाशय कोलकाता महानगरी के राजनीतिक एवं व्यवसायिक जीवन में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे। नायक भवन में प्रवेश पाने के लिए कई कठिनाइयों का सामना करता है। आखिरकार उसका साक्षात्कार भादुड़ी

महाशय से हो जाता है। वह पूरी स्पष्टता से उन्हें अपना वृत्तान्त सुनाता है, लेकिन दुर्भाग्य उसका साथ नहीं छोड़ता है। उसे यहां भी कोई जीविका का साधन प्राप्त नहीं होता है। भादुड़ी महाशय अपनी कार में बैठकर चले जाते हैं। वह अपने इस संघर्षमय जीवन से इतना दुर्बल हो चुका था कि वह इस चोट को सह नहीं सका और वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। कुछ देर बाद होश में आने पर उसने पाया कि उसे काफ़ी लोगों ने घेरा हुआ है। उसके होश में आने पर सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। यह प्रसन्नता उसके होश में आने पर नहीं थी। अपितु यह हत्या उनके सिर पर से टल गई थी। होश में आने की प्रसन्नता में उसे दूध का गिलास पीने को दिया गया। लूची, आलू–परवर की तरकारी, नींबू का आचार, रसगुल्ले, संतरे का रस आदि खिलाया–पिलाया गया। कथानायक यह सब मानवता के कारण समझ रहा था। लेकिन जब एक अधेड़ महिला ने अपने नौकर से यह कहते सुना कि जहां वह जाना चाहता है, उसे टैक्सी में बिठाकर छोड़ आए। यह सुनकर उसे ज्ञान होता है कि यह भोजन उसे इसलिए खिलाया गया है कि हत्या उनके सिर से टल गई है। बाद में आत्मग्लानि में डूबे नायक को उसके कहने पर ईडेन गार्डन्स छोड़ दिया जाता है।

कलकत्ता (कोलकाता) में आने पर उसने एक वस्तु पाई थी जो कदम–कदम पर उसका साथ दे रही थी। वह थी उसकी पुस्तक 'कॉन फैशन्स ऑफ ए ठग'। जिसे वह मन के चाहने पर दिल बहलाने के लिए कभी–कभी पढ़ लिया करता था। एक तो उसके अपने वर्तमान व्यक्तित्व के कारण लोग उसे कोई चोर या पाकिटमार समझते थे लेकिन जब कुछेक व्यक्तियों ने उसे यह पुस्तक पढ़ते देखा तो उन्होंने उसके मुख पर ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करनी शुरू कर दी कि साला पाकेटमार है अपने को अधिक एक्सपर्ट बनाने के लिए 'कॉनफेशन्स ऑफ ए ठग' पढ़ रहा है। ऐसी बातें सुनकर उसे लगता है कि लोग ठीक ही तो कह रहे हैं।

कथानायक का मन ऐसी बातें सुनकर उचट जाता है वह घूमते हुए घाट तक आ पहुंचता है। वहां एक शेख नमाज के बाद भोजन करने की तैयारियां कर रहा होता है। उसके पूछने पर शेख बड़े प्रेम से अपने पास बुलाता है तथा आग्रह करके खाना खिलाता है। वह खाना खाते हुए शेख से काम दिलवाने की प्रार्थना करता है। शेख उसकी शारीरिक दुर्बलता को देखते हुए उसे कोई भारी काम दिलवाने में अपने को असमर्थ पाता है। उसके यह कहने पर कि वह रसोई के काम में सहायता कर सकता है। शेख उसे चार–पांच दिन में काम दिलवाने का आश्वासन देता है। वह शेख से इतवार को मिलने की बात कहकर उससे विदा लेता है। वहीं घाट पर 'लिबर्टी' नामक जहाज़ खड़ा है। उसने किसी भी विदेशी जहाज़ को अन्दर से नहीं देखा था। अपने सामने खड़े विदेशी जहाज़ को देखकर उसकी उसे भीतर से देखने की इच्छा जाग उठी और वह जहाज़ के भीतर चला गया।

जहाज़ को विभिन्न स्थलों से देखते हुए एक कमरे में पहुंचा जहां पर दो विदेशी युवक एवं युवती एक–दूसरे से दूरी बनाएं खड़े थे। दोनों की आंखों के सामने पत्र–पत्रिकाएं थीं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि दोनों पढ़ने के बहाने छिपी नज़र से एक दूसरे को देख रहे थे लेकिन बात करने का अवसर नहीं मिल रहा था। जब एक–दूसरे को छिपी नज़रों से देखते हुए उनकी आंखें चार हो जातीं तो कमरे का सूना वातावरण चंचल हो उठता था। वह दोनों अपने में इतने तल्लीन थे कि कथानायक की उपस्थिति तक का उन्हें कोई आभास नहीं हुआ। कथानायक पहले कभी ऐसे मधुर वातावरण से नहीं गुजरा था इसलिए उसके शुष्क मन और प्राणों में एक सुखानुभूति का संचार हुआ । कथानायक को ऐसा लग रहा था जैसे वह तिरस्कृत एवं अपमानित जीवन के सारे विफल संघर्षों को भूल गया है। वह शारीरिक भूख और प्यास की जलन को भूल गया है, यथार्थ जीवन की कटु और कंटीली वेदनाएं उस क्षण लुप्त होकर शून्य में विलीन हो गई और उसके स्थान पर वायु से भी हल्के माध्यम में प्रवाहित होने वाला दिव्य पारिजातीय परिमल उसकी चेतना के आकाश में मन्द–मन्द संचारित होने लगा था।

उस युवक एवं युवती को परस्पर प्रणयानुभूति करते देख कथानायक चुप–चाप वहां से चले जाना चाहता था। लेकिन अचानक उसके मन में दोनों को एक–दूसरे से अवगत कराने का उपाय सूझा। उसने आगे बढ़कर युवती को अपना परिचय ज्योतिषी के रूप में दिया। युवती ने निःसंकोच अपना भविष्य जानने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। बहुत देर तक वह युवती का हाथ पकड़कर बहुत ही बारीकी से उसके हाथ की लकीरों को देखते हुए इस ढंग से बताना शुरू किया कि जिससे वर्तमान में होने वाली बातें सब नवयुवतियों में समान होती हैं तथा भविष्य किस ने देख है। उसने युवती को बताया कि इस यात्रा के दौरान उसके जीवन में सुखद परिवर्तन आएगा और उसे अपना भावी जीवन साथी भी मिलेगा ऐसी भविष्यवाणी उसने वहां खड़े युवक को देखकर कही थी। ऐसी ही भविष्यवाणी युवक का हाथ देखकर की थी । एक प्रकार से उपन्यासकार ने कथानायक के माध्यम से दोनों के दिलों की बात को स्पष्ट कर दिया। दोनों ने अपने सुखद जीवन के विषय में सुनकर उसे दस–दस के पांच नोट दिए। उन दोनों से विदा लेकर

वह आगे चल दिया। जहाज़ को देखते हुए उसके हृदय में इच्छा उठी कि अमेरिकी यात्रियों के पहले दर्जे के 'केबिन' कैसे होते हैं देखे जाएं। वह कमरे की व्यवस्था देख ही रहा था कि एक विदेशी गोरे व्यक्ति ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और उसके हाथ से पुस्तक लेकर शीर्षक पढ़ा। शीर्षक पढते ही उसे ठग समझ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया था। पुलिस के जेलखाने में वह कई तरह के लोगों से मिला। सबकी अपनी–अपनी कहानियां थीं। उन सबसे वह अच्छी तरह घुल–मिल गया जैसे काफ़ी समय से उनके साथ रहता रहा हो। बाद में अदालत में पेश किया गया जहां कोई नया मैजिस्ट्रेट था। जिस पर न्याय का आदर्श रूप छाया हुआ था। इसलिए वह गवाही के अभाव में छूट गया था।

कई दिनों तक वह इधर–उधर घूमता रहा। एक दिन एक गली के नुक्कड़ पर उसे एक आदमी मिला जिसने मैली चारखाने की लुंगी पहनी हुई थी और ऊपर गन्दा चादरा ओढ़ रखा था। उस व्यक्ति ने उसे संकेत से बुलाया और वह किसी जादू के आकर्षण में बंधा हुआ उसके पास चला गया। उस व्यक्ति ने उसके बारे में उससे अधिक नहीं पूछा। उसने उसे खाना खिलाया। कथानायक अब तक अपनी जीविका के लिए नौकरी ढूंढ रहा था लेकिन मिली नहीं थी और आज अचानक एक अजनबी आदमी ने उसे एक लड़की को हिन्दी पढ़ाने का काम दिलवाया। वह आदमी उसे बनवारी नामक आदमी के साथ करीम चाचा के पास भेज देता है। करीम चाचा का घर ऐसी जगह था, जहां कोई भी आदमी आसानी से नहीं पहुंच सकता था। उन्होंने उसकी बड़ी आवभगत की और सम्मान किया। वे उसे पहलवानों के अखाड़े में ले गए। जिस लड़की को हिन्दी पढ़ानी थी वह पहलवानों के सरदार की लड़की थी। उसका नाम कला था। वह कला को हिन्दी पढ़ाने लगा। कला उसके अध्यापन निर्देश और अभ्यास से अच्छी हिन्दी पढ़ने लगी। इधर करीम चाचा का भी उससे स्नेह बढ़ता गया। करीम चाचा अधिक पढ़े–लिखे नहीं थे लेकिन उन्हें दुनियादारी की पूरी समझ थी। वे कथानायक से हर विषय पर लम्बी–लम्बी चर्चाएं करते थे। उसने करीम चाचा के साथ रहकर हर प्रकार का भोजन बनाना सीख लिया था। करीम चाचा ने उसे कसरत करना भी सिखा दिया था। अच्छे भोजन और कसरत से उसके स्वास्थ्य में सुधार हो गया था।

करीम चाचा के यहाँ रहकर वह हर प्रकार के व्यंजन बनाने में निपुण हो गया। उसने यह कला इसलिए सीखी कि यहां से निकलने के बाद यदि कुछ काम न मिला तो रसोइए का काम तो मिल ही जाएगा।

आरम्भ में उसे जो कमरा दिया गया था उसमें उसका मन नहीं लगा था, लेकिन दस महीने लगातार वहाँ रहने से उस कमरे के प्रति मोह उत्पन्न हो गया था। साथ वाले कमरे में रहने वाले पहलवानों से जान–पहचान होने पर वह उनसे गपशप करने चला जाता है। उसकी जिन्दगी आराम से कट रही थी कि अचानक वहां के लोग उससे कतराने लगे। जिस वातावरण में पहले अपनापन अनुभव होता था वहां अब परायापन झलकने लगा था। उसने कुछ दिन तक तो चाचा से इस बात का जिक्र नहीं किया कहीं वे उसे चुगलखोर न समझ लें। लेकिन जब रहा नहीं गया तो उसने चाचा से नई परिस्थिति से सम्बन्धित बात की । चाचा उसकी बात सुनकर उन्हीं पहलवानों के पक्ष में जाहिलों की ईमानदारी और विश्वास की बातें करने लगे। पढ़े–लिखों से तो यह अनपढ़ एक–दूसरे का साथ देते हैं। अपने साथी की जान या इज्जत बचाने के लिए अपनी जान तक दे देते हैं। परन्तु पढ़े–लिखे शरीफ़ आदमी एक को भूखा मरते देख उसके ऊपर आवाज़े कसते हैं, एक आदमी की जान जाते देखकर हज़ार पढ़े–लिखे तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब इन पढ़े–लिखों के ऊपर जाहिल, चोर, गुण्डे और बदमाश राज करेंगे क्योंकि उनके अन्दर इन्सानियत और ईमानदारी पाई जाती है। कथानायक को ऐसा लग रहा था कि चाचा आज उसकी बात को समझ नहीं पा रहे हैं या फिर वह अपने साथ्यिों के विरूद्ध बात सुनने को तैयार नहीं थे। लेकिन उसके लिए भी इस परिस्थिति से उभरना अनिवार्य था। इसलिए उसने एक दिन चाचा से वहां से जाने की अनुमति मांगी। इससे चाचा को धक्का लगा। फिर आशीर्वाद देते हुए कहा कि इतने दिनों से साथ रहने के कारण उससे मोह हो गया था लेकिन इस मोह के कारण तुम्हें रोकूंगा नही। अभी तुम्हारे आगे उन्नति के रास्ते खुले हैं।

जब कभी भी मेरी ज़रूरत अनुभव हो तो चले आना। वह भी चाचा से कला की शादी में आने का वायदा करता है। वह जाते हुए पहलवान से मिलता है तो पलवान सरदार को भी इस बात का दुःख होता है। वह उसे जाते हुए अढ़ाई सौ रुपए देता है तथा कला को हिन्दी में इतनी जल्दी निपुण करने का धन्यवाद देता है। वह अढ़ाई सौ रुपयों में से पचास रुपए लेता है। कला और उसकी दाई को उसके जाने का दुःख था। वह इन पहलवानों से मिला जो उसके विरुद्ध थे। उन लोगों से उसने जाने–अनजाने में हुई गलती

की क्षमा मांगीं वे मुंह से कुछ नहीं बोले लेकिन उनकी आंखों से ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने माफ कर दिया हो । वह फिर एक बार निराश्रित होकर कोलकाता की सड़कों पर बेकार भटकने लगा। लेकिन इस बार उसकी स्थिति में कुछ अन्तर था।

इस बार भटकते हुए उसके मन में निराशा के स्थान पर आशा का संचार था। उसने व्यक्तित्व के अखाड़े में रहने से परिवर्तन आ चुका था। वहां रहकर उसने उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया था। वह फटे–पुराने कपड़ों के स्थान पर सलेटी पापलिन का एक नया कुर्ता, काली बारीक कन्नी की धोती और बाटा की एक नई जोड़ी चप्पल पहने हुआ था। उसकी जेब में पचास रुपए भी थे। लेकिन वह जेब में रखे रुपए जल्दी से जल्दी खर्च कर देना चाहता था। उसने सड़कों पर इधर–उधर घूमते हुए सारे रुपए खर्च कर दिए। अब उसके पास केवल पांच रुपए शेष थे। जिसमें आठ आने की चाट खाई और चार रुपए वहीं एक मांगने वाली लड़की को दे दिए थे। इस प्रकार उसके पास आठ आने बचे थे। इतने में एक बस आई तो बिना किसी काम के उसमें चढ़ गया। एक व्यक्ति को 'धर्मतल्ले' की टिकट लेते देखकर उसने भी वहीं की टिकट कटा ली। लेकिन बस में मन नहीं लगा तो 'लोअर सरकुलर रोड' पर उतर गया। घूमते हुए वह भादुड़ी महाशय के भवन के आगे पहुंच गया। उसे एक वर्ष पूर्व की घटना याद आई जब वह काम मांगने गया था। उसे वहां पर कोई काम नहीं मिला था। इस बार वह आत्मविश्वास के साथ कोठी के अन्दर प्रवेश कर गया। भीतर कोठी की मालकिन बरामदे में खड़ी थी। पहलवानों के साथ रहकर कसरत करने में उसका शरीर सुदृढ़ हो चुका था। इसलिए वह उसे पहचान नहीं पाई। उसने हाथ जोड़कर बांग्ला भाषा में कहा कि वह काम की खोज में वहां आया है। वह रसोइए का कार्य अच्छी तरह जानता है। यह सुनकर मालकिन ने तुरन्त उसे काम पर रख लिया क्योंकि उनका रसोइया नौकरी छोड़कर जा चुका था।

इस परिवार के सदस्य सुसंस्कृत थे। वहां के लोग उसके बनाए भोजन से बहुत प्रसन्न थे। परिवार के कुछ लोग उसे दादा कहकर पुकारते थे और आदर भाव रखते थे। भादुड़ी महाशय के घर में प्रायः रविवार को कोई न कोई गोष्ठी अवश्य होती रहती थी। उनके परिवार के प्रायः सभी लड़के–लड़कियां साहित्यिक गोष्ठियों में रुचि रखते थे। कथानायक भी साहित्य में रुचि रखता था। ऐसी गोष्ठियों के अवसर पर वह किसी न किसी बहाने वहां पहुंच जाया करता था। उन लोगों की बातों से उसे अपने चारों ओर की दुनिया की गतिविधियों का काफ़ी परिचय मिल जाता था। एक दिन वहां पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जो रवीन्द्रनाथ के जन्मदिन के उपलक्ष्य में थी। इस गोष्ठी की तैयारी भादुड़ी की बेटी दीप्ति ने की थी। अनेक व्यक्तियों ने रवीन्द्रनाथ से सम्बन्धित कविताएं और निबंध पढ़े। कुछेक भाषण भी हुए। एक वक्ता ने अपने भाषाण में एक वाक्य कहा –'रवीन्द्रनाथ ने बंगभूमि का गौरव बढ़ाया है और बंगमाता का मुख उज्ज्वल किया है। यह वाक्य सुनकर कथानायक के बदन में अजीब सी सनसनी दौड़ गई इतने दिनों तक का उसका मौन और संयम एक आकस्मिक और अप्रत्याशित बाढ़ में जैसे पल में बह गया।

जब उस वक्ता का भाषण समाप्त हुआ तब कथानायक उठ खड़ा हुआ और बिना अध्यक्ष की अनुमति के बोलना आरम्भ कर दिया कि अभी एक सज्जन ने रवीन्द्रनाथ जी को बंगभूमि का गौरव और बंगमाता का मुख उज्ज्वल करने वाला बताया है। उसकी इस बात से आश्चर्य होता है। इतने बड़े और विराट व्यक्तित्व को एक अत्यन्त संकीर्ण ढांचे के भीतर ठूंसने का प्रयास किया है फिर भी वे मानते हैं कि उन्होंने रवीन्द्रनाथ की जयन्ती पर उनका गुणगान किया है। क्या सच में रवीन्द्रनाथ ने केवल बंगभूमि का गौरव बढ़ाया है ? तब उनकी कला ही महत्ता की क्या रह गई जिसका गुणगान पूरा संसार करता है ? रवीन्द्रनाथ ने मानवीय विकास को किसी प्रान्त या देश की चारदीवारी के भीतर सीमित कभी नहीं माना है। वह तो विश्वजनीय मानवता की सामूहिक प्रगति पर विश्वास करते थे। प्रांतीयता की बात तो दूर रही उन्होंने तो संकीर्ण राष्ट्रीय भावना तक का विरोध अपनी प्राणों की पूरी शक्ति से किया था। रवीन्द्रनाथ यदि केवल बंगाली होते, विश्वमानव नहीं तो उनकी प्रतिभा का विस्तार बांग्ला के दूसरे कवियों से आगे नहीं बढ़ पाता। वे तो बंगवासियों को यही उपदेश बार–बार देते रहे कि घर की चारदीवारी से निकल कर विश्व के मुक्त प्रागंण में अपने पांव जमाओं तथा बाहरी मानवता के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करो। जो महाकवि जीवन भर यही आवाज़ लगाता रहा हो कि प्रांतीयता का मोह और अंधसंस्कार को त्यागकर विश्वमानवता को अपनाओं, उस केवल आज के समय में इसलिए महान् माने कि उसने बंगभूमि का गौरव बढ़ाया है और बंगमाता का मुख उज्ज्वल किया है तो इससे बड़ा अपमान उनका और क्या हो सकता है ? वे चाहते थे कि सभी मनुष्य विश्व प्रांगण में समान रूप से 'अनन्त आकाश में सिर उठा कर उदार आलोक और उन्मुक्त प्रवास में निर्द्वन्द्व विचरण करें।' उनकी इस उदात्त महामानवता को यदि हम आज केवल बंगभूमि तक ही सीमित रखना चाहें तो यह केवल उस स्वर्गीय आत्मा का अपमान न होगा अपितु हमारे अपने अधः पतन की चरम स्थिति का भी परिचायक होगा।

उसको इस लम्बे भाषण के मध्य किसी ने भी नहीं टोका। लेकिन भाषण समाप्त करने पर उसे इस घर में अपने अस्तित्व तथा मर्यादा का ज्ञान हुआ तो उसे बड़ा संकोच हुआ। दीप्ति के बार–बार कहने पर भी नहीं रुका और अपना काम करने के लिए रसोई घर चला गया। घर में एक–दो लोगों को छोड़कर सभी उसके साहित्य ज्ञान से प्रभावित हुए थे। अप्रसन्न लोगों ने भादुड़ी महाशय के कान भर दिए थे इसलिए उन्होंने उसे रसोइये के रूप में एक कम्यूनिस्ट समझा, जो उनकी राजनीतिक, आर्थिक गोष्ठियों का धीरे–धीरे भेद लेकर बाहर भेज रहा है। उसके बहुत सफ़ाई देने पर उसे नौकरी से निकाल दिया गया। केवल दीप्ति नेउसके प्रति सहानुभूति प्रकट की। नौकरी छोड़ने के बाद वह फिर एक बार कलकत्ता (कोलकाता) के 'मुक्त प्रांगण में' निर्द्वन्द्व विचरने लगा।

कलकत्ता (कोलकाता) में इधर–उधर घूमते–फिरते वह 'वेलेसली स्ट्रीट पहुंचा' वहां आकर उसे ऐसा लगा कि यहीं आस–पास उसका कोई परिचित व्यक्ति रहता है। अचानक उसे याद आया कि अस्पताल में बराबर के पलंग का मरीज प्यारे धोबी इधर ही रहता था। उसने उसे अपना पता तो नहीं बताया था लेकिन अपने घर तक आने का नक्शा जरूर समझाया था। उसे याद करते हुए वह इधर–उधर भटकता रहा लेकिन केवल निराशा हाथ लगी। जब वह वापिस जाने लगा तो उसे सौभाग्य से 'प्यारा' रास्ते में मिल गया। वह उसे अपने घर ले गया। जहां पर उसकी आवभगत हुई। उसके पश्चात् प्यारे ने उसे बताया कि बहुत दिनों से वह लाण्ड्री खोलने का विचार कर रहा है। कथानायक उसके इस काम में सहायता करने को तैयार हो गया। प्यारे ने उसे बीस रुपए माहवार और खाने–कपड़े पर अपने यहां नियुक्त कर लिया। दुकान का नाम 'शुभ्रालाण्ड्री' रखा गया। वह सुबह सात बजे से लेकर काफ़ी रात गए तक दुकान पर बैठा रहता था। वहीं पर एक पुराना तख्त था जिस पर वह सोता था। लेकिन उस कमरे में खटमलों, मच्छरों, चींटियों, तिलचट्टों और मकड़ियों का बसेरा था। शुरू में उसे परेशानी हुई पर फिर वह उस जीवन का अभ्यस्त हो गया।

लांड्री के आस–पास अधिकतर निम्न मध्य वर्ग के व्यक्ति रहते थे जिनसे लांड्री को विशेष लाभ नहीं हो रहा था। लेकिन प्यारा धोबी होने के कारण अपने पुराने ग्राहकों से कपड़े ले आता था और धुलाई में उसे मज़दूरी नहीं देनी पड़ती थी, क्योंकि उसके परिवार के सभी सदस्य धुलाई में उसकी मदद करते थे। उसका अतिरिक्त व्यय वह था जो वह उसके पास खर्च करता था।

कथानायक को वहां अधिक काम नहीं था। अधिकांश समय अवकाश रहता था। एक दिन उस पर अजीब धुन सवार हो गई और वह बाज़ार से सादे कागज़ खरीद कर ले अया और उन पर अपने जीवन के अनुभवों को लिखना शुरू कर दिया। प्यारे के परिवार में भी उसे बहुत अपनापन मिला। बेला को छोड़कर परिवार के सभी सदस्य धोबी घाट पर चले जाते थें बेला का स्वभाव विचित्र था। वह सबकी मुंहलगी ओर भावुक किस्म की लड़की थी। उसे बेला का अकेले में उसके पास चले आना अच्छा नहीं लगता था। उसे वह अपने काम में विध्न डालती अनुभव होती थी। वह उसके रहस्यपूर्ण व्यवहार से भी डरने लगा था। इसका फल यह हुआ कि एक दिन अपना हिसाब–किताब करके वह वहां से चल दिया।

प्यारे धोबी के पास से निकलकर उसके कदम बालीगंज की ओर निरुद्देश्य भाव से बढ़ने लगे। वहां पर उसे एक सुन्दर सा मकान दिखाई दिया जो न बहुत बड़ा था न ही छोटा। उसकी बनावट बहुत ही कलात्मक और किसी प्राचीन बौद्ध–विहार की तरह लगती थी। वहां उसे एक स्त्री दिखाई देती है जिसे पहली नज़र देखकर सुन्दर नहीं कहा जा सकता था। लेकिन उसकी आंखों में ऐसी स्निग्ध चमक थी कि जिसे भुलाया नहीं जा सकता था। उसे लगता है कि इस घर के दरवाजे पर उसका सहज स्वागत होगा। वह इसे विचित्र पागलपन समझते हुए उस घर में पहुंच जाता है। वहां उसका सामना नौकरानी से होता है। वह उससे नौकरी दिलाने की बात करता है।

इतने में घर की मालकिन बाहर आती है। वह वही स्त्री थी जिसे वह बाहर कार में देखता है। उसको देखकर उसे कवियों की पलक–पाँवड़े बिछाने वाली बात याद आती है। वह स्त्री उसे आदर भाव से अन्दर ले जाती है। वह उससे काम मांगता है। वह उसे रसोई के कार्यों के लिए रख लेती है। जब वह उसके साथ अन्दर जाता है तो वहां लगे चित्रों की प्रशंसा करता है। जल्दी ही उसे अपनी गलती का आभास होता है कि वह वहां नौकरी के लिए आया है लेकिन घर की मालकिन हर समय उससे आदर से पेश आती है तथा अपने साथ बिठाकर खाना खिलाती है। वह उसकी स्थिति भांप जाती है तथा उसके अन्दर छिपे गुणों को भी जान जाती है।

यह कथानायक के लिए एक नया अनुभव था कि नौकर होते हुए भी अतिथि सत्कार पा रहा है। वहां ड्राईग रूम में बैठे हुए चारों

ओर देखता है। वहां एक अलमारी में साहित्यिक पुस्तकें थीं, दीवारों पर महान् व्यक्तियों के चित्र लगे थे। उसे यहां आकर ऐसा लग रहा था जैसे बहुत परिश्रम के बाद उसे अवकाश मिला हो। उसे बाहर–भीतर सब कुछ नया, सुखद और मोहक लग रहा था। वहीं एक कोने में सितार पड़ा था। अचानक उसने सितार उठा लिया और बहुत देर तक उसे बजाता रहा। जब रुका तो मालकिन को देखकर घबरा गया और क्षमा मांगने लगा। मालकिन उसके संगीत की प्रशंसा करती है और उससे इतने गुणी होने पर भी रसोई का काम करने का रहस्य पूछती है। वह कहता है कि भोजन, वस्त्र और डेरे की स्वाभाविक आवश्यकता ने उसे ऐसा करने पर विवश कर दिया। जब कोई काम खोजने जाता हूँ तब मेरी लिखाई–पढ़ाई काम नहीं आती। लोग मुझे चोर, बेईमान और बदमाश समझने लगते है। तब ऐसा काम के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं रह जाता था। मालकिन उसे जब तक मन चाहे वहां रहने का आश्वासन देती है। यह सुनकर उसे आश्चर्य होता है। वह उसे बताती है कि आज उसका जन्मदिन है और वह अब तक अविवाहित है। कथानायक को उसके अविवाहित होने पर आश्चर्य होता है क्योंकि ज्यादातर लड़कियां आर्थिक परिस्थितियों के कारण अविवाहित रह जाती हैं लेकिन यहां पर ऐसी कोई समस्या दिखाई नहीं देती है। उसके पूछने पर वह बताती है कि वह आर्थिक सुरक्षा के कारण शादी नहीं करना चाहती क्यों कि उसे अपनी असुन्दरता का आभास है। आज के युवक उसके गुणों से नहीं उसकी सम्पन्नता के कारण उससे शादी करना चाहते हैं। इसलिए वह अविवाहित रहना चाहती है।

कथानायक घर के नौकरों के साथ मिलकर शाम को जन्मदिन की पार्टी की तैयारी करता है। चार बजे मालकिन की जान–पहचान वाले आने लगे। वहां एक लड़की मालकिन को लीला कहकर पुकारती है। इससे उसे मालकिन का नाम पता चलता है। पार्टी में आए लोग उसके बनाए खाने को पसंद करते हैं। वहां अन्त में संगीत का कार्यक्रम होता है। कुल मिलाकर सब अच्छा रहता है। कार्यक्रम के बाद लीला उसे अपने साथ बाजार ले जाती हैं वह अपने–आपको बड़ी विचित्र स्थिति में पाता है क्योंकि यहां काम कुछ नहीं है। केवल अतिथि बने रहने के अतिरिक्त यहां कुछ भी काम नहीं है। रास्तें में लीला उसे अपने बारे में बताती है कि वह छूआ–छूत को नहीं मानती हैं उसने कई साल तक हरिजन आश्रमों में काम किया है। बापू, विनोबा जी के साथ काम किया है। तेरह–चौदह वर्ष की आयु में शान्ति –निकेतन में रही है। वहां रहकर चित्रकला और संगीत सीखा है। आजकल वह स्वयं तीन चार संस्थाओं का संचालन कर रही है। जिसमें एक सांस्कृतिक कला–केन्द्र है। वह कथानायक से सांस्कृतिक कलाकेन्द्र में काम करने को कहती है। उसके इन्कार करने पर उसे मनाते हुए कहती है कि वह रसोई कार्यों के लिए नहीं है। उसमें और कार्यों की भी योग्यता है। इसलिए उसे उसकी योग्यता के अनुसार काम मिलना चाहिए। लेकिन कथानायक उसे कहता है कि उसने जो उसके बारे में धारणा बनाई है वह गलत है क्योंकि कला सम्बन्धी उसके विचार लीला के विचारों से भिन्न हैं। यदि कला जीवन के यथार्थ के साथ जुड़ जाए तो जीवन के समुचित–सामूहिक विकास में बहुत सहायक हो सकती है।

लीला कला को लोक–कल्याण का भौतिक सत्य एवं गौण उद्देश्य मानती है। उसके अनुसार अलौकिक आनन्द की अनुभूति प्रथम उद्देश्य एवं आत्मिक उद्देश्य है। वह आत्मिक उद्देश्य को भौतिक सत्य से बड़ा मानती है। कथानायक उसकी बात को काटना नहीं चाहता लेकिन उत्तर देते हुए कहता है कि आलौकिक आनन्द की अनुभूति शून्य से नहीं होती है। उसका आधार लोकजीवन है और आत्मिक सत्य भौतिक सत्य से निश्चय ही बड़ा है लेकिन भौतिक सत्य ही उसका मूलाधार है। यदि कला को लोक जीवन से भिन्न कर दें तो वह केवल लोकातीत आनन्द की प्राप्ति का साधन मानी जाएगी। इस तरह बातें करते हुए लीला उसे कपड़े की दुकान पर ले जाती है। जहां वह उसके लिए कपड़े खरीदती है।

रात को लीला और कथानायक छत पर खड़े होकर चन्द्रमा को देख रहे थे। वह चन्द्रमा को देखकर कहता है कि यह चन्द्रमा शुभ है। क्योंकि चन्द्रमा की बगल में शुक्र तारा चमक रहा है, दोनों वृष राशि में है। दोनों समान धर्मा और जलग्रह है और इसका फल जल केवल जल है गंगा–यमुना में आंसू–जल। यह सुनकर लीला की आंखों में आंसू आ जाते हैं। यह देखकर वह कहता है कि यही कलात्मक सौन्दर्यजनित आलौकिक आनन्द है। यह अकारण ही रुला जाता है, अकारण ही हंसा जाता है। लीला कहती है कि वह 'पंत जी' के गीत की 'गंगा–यमुना में आंसू जल' पंक्ति सुनकर रो पड़ती है। वह उसे सितार बजाने को कहती है। वह सितार बजाता है तथा लीला तबला बजाती है। दोनों सितार एवं तबला बजाते हुए एक कविता गाने लगते हैं। दोनों बहुत देर तक तद्भव भाव से वह गीत दुहरा–दुहरा कर गाते रहते हैं जिससे वे अपना अस्तित्व भी भूल जाते हैं। कथानायक को ऐसा लग रहा है कि जैसे उसे कलास्रोत के आदिम उत्य में लाकर मुक्त प्रवाह में छोड़ दिया हो । उस मुक्त प्रवाह में युग–युगव्यापी धारा में बहता हुआ, द्रौपदी के चीर की तरह फैले हुए भारत माता के धूल भरे मैले आंचल का छोर पकड़ कर उसके सहारे–सहारे वर्तमान काल में पहुंच कर

भविष्य की ओर अबाध गति से बढ़ता चला जा रहा है। दोनों ने गाना–बजाना छोड़ दिया। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे चारों ओर शून्य ही शून्य है। उसने लीला की ओर देखा तो उसकी आंखों में गंगा–यमुना धारा बह रही थी। वह लीला से कहता है कि संगीत में निश्चय ही अद्‌भुत मोहक जादू है।

वह लीला से भारत माता के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहता है कि न जाने कितने युगों से भारत माता का आंचल मैले का मैला है। आज भी भारत माता चिर–विधवा, अनाथों तथा मिट्‌टी की प्रतिमा के रूप में हमारे सामने जीवित शव के रूप में उसी प्रकार पड़ी है जिस प्रकार बुद्ध के युग में पड़ी होगी। बुद्ध के युग से लेकर आज तक थोड़े–बहुत परिवर्तनों के साथ उसका दैन्यजड़ित तथा चिरशोषित रूप वैसा ही बना हुआ है। आज स्वतंत्रता के बाद भी भारत माता की संतान मूढ़, अशिक्षित, निर्धन और निःसंबल बनी हुई है। धूरे के दिन भी फिरते हैं लेकिन इसके दिन हजारों वर्ष बाद भी नहीं फिर पाए हैं। कब तक यह इसी तरह ध ूल में लौटती रहेगी ? लीला उससे प्रश्न करती है कि वह बुद्ध के युग को दैन्यजड़ित युग क्यों मानता है ? वह लीला के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि उस युग में सम्पूर्ण आर्यावर्त का जनजीवन अत्यन्त दयनीय रहा होगा। इसलिए उस समय के रोग–शोक और दुःख दैन्य के आतंक को बुद्ध ने अपने गहन अनुभूतिशील अन्तर में अत्यन्त मार्मिक तीखेपन के साथ उस सामूहिक पीड़ा को अनुभव किया। उन्होंने सांसारिक पीड़ा से शंकित लोगों के प्राणों को सांत्वना की वाणी सुनाते हुए जीवन को मूलतः अस्वीकार करने का उपदेश दिया। उनकी पुकार पर लोग अपने परम्परागत वैदिक धर्म की जड़ों को उखाड़कर भिक्षु संघ में सम्मिलित हो गए। यदि उस समय का जीवन शोचनीय नहीं होता तो हज़ारों वर्षों की लौकिक और वैदिक परम्परा को सामूहिक रूप से ठुकराने का साहस स्वभाव से रूढ़िवादी जनता कभी नहीं कर पाती। उस समय जीवन की परिस्थितियां अत्यन्त हीन रही होंगी और यह परिस्थितियां बुद्ध के समय से पहले की चली आ रही होगी, तभी तो उस समय वे चरम स्थिति में पहुंचकर विस्फोटक बिन्दु तक पहुंच चुकी थी। तभी बुद्ध के क्रान्तिकारी विचार युग–चेतना में व्यापक महाविस्फोटक करने में समर्थ रहे।

लीला उसकी बातों को ध्यान से सुनती है। उसे लगता है कि कथानायक के मन में निश्चय ही कोई विद्रोह चल रहा है। तभी वह पूछती है कि अगर वह बुद्ध को अपने समय की परिस्थितियों से विद्रोह करके जनता में नई चेतना जागृत करने वाला क्रान्तिकारी मानता है। फिर वह बुद्ध के विचारों और आदर्शों को जीवन–विद्वेषी क्यों मानता है ? वह लीला की बात का उत्तर देते हुए कहता है कि वह वास्तव में बुद्ध को मानव जाति के महानेता के रूप में मानता है। उन्होंने मानव जाति को शान्ति, अहिंसा, प्रेम तथ समता का पाठ अपूर्व लगन तथा आश्चर्यजनक उद्यम के साथ पढ़ाया जो बहुत बड़ी बात है। बुद्ध के जन्म से लेकर अब तक अढ़ाई हजार वर्ष गुजर चुके हैं। यदि इतने लम्बे अरसे में मानवता ने उनके महासंदेश का एक कण भी अपने जीवन में उतारा होता तो पृथ्वी के रक्तरंजित इतिहास में काले पृष्ठों का अस्तित्व ही नहीं रह गया होता। लोगों ने बुद्ध के विचार बाहरी आचार और आडम्बर में अपनाए तथा उसके विचारों के सार और प्राणवान अंशों को बुद्ध की प्रतिमा तथा उनकी राख पर बने महास्तूपों पर खुदवा कर उन्हें जड़, निश्चल और मृत बनाकर खत्म कर दिया। सारा दोष लोगों का भी नहीं है। बुद्ध का ध्येय बहुत महान् सच्चा और सहृदयतापूर्ण होने पर भी उनकी स्थापना के उद्देश्य से जिन उपायों का प्रयोग किया गया वे विरोधाभासात्मक थे। पहले तो उन्होंने कर्मों के मूल सूत्र को अलग करने का उपदेश देकर जीवन की उपयोगिता को ही अस्वीकार कर दिया। जब जीवन ही नहीं है तो शान्ति, प्रेम और पारस्परिक सद्‌भावना की आवश्यकता ही नहीं है। उसके बाद उन्होंने जीवन के कठोर बन्धनों से छुटकारा चाहने वाले नर–नारियों को उसमें सम्मिलित होने की अपील की। उन्होंने ताप–परिताप, रोग–शोक, और दुःख–दैन्य से बुरी तरह पीड़ित जनता को जन्म–जन्म के मानवीय उत्तरदायित्वों से छुटकारा पाने का सरल नुस्खा **''करतल में भिक्षा लो और तरुतल में वास करा।''** बता दिया। फिर कौन मूर्ख होगा जो अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करता सभी भव–बन्धनों को काटने की आशा से संघ में सम्मिलित होने के लिए दौड़ पड़े।

लेकिन इस भिक्षु धर्म संघ से व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक क्षेत्र में विरोधाभास उठ पड़ा कि इतने सारे निर्वाण–प्रार्थी निठल्लों की भिक्षा कहां से जुटाई जाए ? यदि वे लोग कन्द–मूल से निर्वाह करते तब ठीक रहता लेकिन उन्हें गृहस्थों से भिक्षा इकट्‌ठी करने का आदेश था। समाज की आर्थिक स्थिति पहले ही डावांडोल थी अब और भी शिथिल हो गई थीं उन भिक्षुओं की पेट–पूजा के लिए 'अनाथपिंडकों' के एक विशेष वर्ग की स्थापना को प्रोत्साहित दिया गया । जिसका कार्य भिक्षुओं के आराम के लिए तथा खाने के लिए सुचारु रूप से व्यवस्था करना था। खाली बैठ कर उन्हें भोजन खाने की आदत पड़ गई थी। जो सेठ साधारण भोजन कराता था वह निंदा का पात्र बनता। इसका परिणाम यह हुआ कि भिक्षुओं का नियमित भोजन जुटाने वाले 'अनाथपिंडक'

'अनाथपीड़क' बन गए। जो दीन–हीन लोग संघ में सम्मिलित नहीं थे उनका शोषण करके भिक्षुओं का पोषण होने लगा। इस प्रकार धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था में एक विचित्र और विराधाभासात्मक सृष्टि हुई । जीवन की उपयोगिता अस्वीकार करने वाला मृत समाज अपने आप शान्त हो जाता है। यह शान्ति और अहिंसा का वातावरण कुछ समय तक इसलिए रहता है क्योंकि वह शमशान की शान्ति थी। संसार में आज भी शान्ति और अहिंसा की आवश्यकता है लेकिन उसका आधार भीतर की ठोस शक्ति होना चाहिए, दुर्बलता नहीं।

लीला उसकी बातों को चुपचापसुन रही थी। उसकी बातों से ऐसा लग रहा था जैसे उसके अन्दर जमा हुआ कुछ बाहर निकल रहा था। वह आगे कहता है कि 'हृदय परिवर्तन' सम्बन्धी उपायों द्वारा मानव समाज में स्वतंत्रता , भ्रातृत्व और समता की भावनाएं स्थापित नहीं की जा सकती हैं जब तक व्यावहारिक दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाता है। बुद्ध, ईसा और बड़े–बड़े धार्मिक नेताओं के विचार मानव समाज को प्रभावित अवश्य करते हैं लेकिन मानव प्रकृति तथा समाज में सुधार लाने की अपेक्षा सामाजिक प्रगति का पथ अवरुद्ध हो जाता है। बुद्ध की अव्यवहारिकता के कारण जीवन के प्रति विराग की जो भावना फैली वह युगों–युगों तक इस अभागे देश में स्थायी होकर रह गई। उसका प्रभाव आज भी नहीं मिटा है। बुद्ध के बाद भिक्षु संघ कई हिस्सों में बंट गया। सब अपने संघ तथा बिरादरी की रक्षा मुख्य उद्देश्य मानने लगे। शान्ति, प्रेम, अहिंसा, समता और संदर्भ की रक्षा का उद्देश्य गौण हो कर रह गया। जब भिक्षुओं को अपने पोषणकर्त्ता सेठों से आश्रय मिलना कम हो गया तब उन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों का साथ देना आरम्भ कर दिया। जिससे साधारण जन–जीवन और अधिक अलग–थलग, अव्यवस्थित और पीड़ित हो गया था। इस प्रकार भारत माता दुःखी होकर मिट्टी की उदासीन प्रतिमा बनी रही है। वह युगों से वास्तविक जीवन से विमुख होकर भीतर से क्षुब्ध और बाहर से विदेशियों द्वारा आक्रान्त होती चली गई। आज जब वह स्वतंत्र हुई है, तब भी पिछले युगों की जड़ता के अभ्यास के कारण उसके भीतर पराक्रम का तेज़ प्रज्वलित नहीं हो पा रहा है जिससे जन जीवन में नई चेतना लाई जा सके।

भारत की ही नहीं अपितु सारे विश्व के जन–जीवन की स्थिति एक जैसी है। अन्तर्राष्ट्रीय नेता विश्व–शान्ति, मानवीय स्वतंत्रता और मानवीय कल्याण के पक्ष में बड़ी–बड़ी बातें करते हैं लेकिन जब उनके सामने वास्तविकता आती है तब वह अपनी हठधर्मी छोड़ने को तैयार नहीं होते हैं। उनकी मानसिक विकृति और अत्यन्त संकीर्ण स्वार्थों के कारण सारी मानवता खून के आंसू रो रही है। ज्ञान और आदर्श की दृष्टि से कल्पना के आकाश के उच्चतम स्तर पर पहुंचने पर भी वास्तविकता की दृष्टि से आज मानवता नरक के निम्नतम स्तर पर तोड़ रही है। इसलिए उसे उच्चतम आध्यात्मिक नैतिक और कलात्मक आदर्शों के हवाई नारे आज क्रूर परिहास लगते हैं। क्योंकि इससे विश्व का जनजीवन उत्तरोत्तर अधिक विकल, विशृंखल, दलित और शोषित होता चला जा रहा है। इसलिए आज कठोर यथार्थवादी उपाय, संगठित प्रयत्नों द्वारा जन–जीवन को व्यवस्थित और संतुलित करने, सामूहिक विषमताओं को दूर करने तथा सभी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में मूलभूत सुधार करने की आवश्यकता है।

वह अचानक चुप हो जाता है। वह अपने–आप को अन्दर से हल्के अनुभव करता है। क्योंकि कोई उपयुक्त श्रोता न मिल पाने के कारण वह अपने भीतर प्रतिपल उमड़ने वाले इन विचारों को दबाता रहा था। वे विचार आज सहसा बांध तोड़कर बह निकले थे। लेकिन लीला के सामने वह संकोच से भर जाता है। वह यहां पर रसोइए का कार्य करने आया था। परन्तु लीला की अनुभवी आंखें प्रथम दृष्टि में ही उसकी योग्यता को पहचान जाती है। लीला उससे कहती है कि वे रसोई बनाने की कला से संगीत कला में निपुण सिद्ध हुए और अब संगीत काल से भाषण देने की कला में निपुण हो। इसलिए वह उसे रसोई कार्यों से मुक्त करके संगीत सम्मेलनों में गाने–बजाने और सांस्कृतिक गोष्ठियों में भाषण देने के लिए कहती है।

लीला उसके सोने का प्रबन्ध ड्राईंगरूप में करती है। वहां अलमारी में बहुत से पूर्व–पश्चिम के लेखकों की पुस्तकें रखी थीं। बहुत दिनों से पढ़ने का सुयोग न मिलने के कारण उसका पढ़ने का अभ्यास छूट चुका था। लेकिन आज जब उसे उसकी मनपसन्द पुस्तकें मिली तब वह उन पर टूट पड़ा। काफ़ी पुस्तकें उलटने–पलटने के बाद वह 'मूर' का 'युटोपिया' उठाकर पढ़ने लगता है और जल्दी ही सो जाता है। जब वह सोकर उठता है तो लीला बैठी उसके उठने का इन्तजार कर रही थी। वह भयंकर आलस्य का अनुभव करता है। ऐसा उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था। वह मुंह हाथ धोकर निकलता है तब लीला उसे नीचे चलकर चाय पीने का अनुरोध करती है लेकिन वह मना कर देता है और चाय ऊपर ही मंगाने के लिए कहता है। उसकी इस बात पर लीला उसे आलसी कहती है। इस एक वाक्य ने उसकी रीढ़ की हड्डी में कंटीली चुभन उत्पन्न कर दी। लीला और वह चाय पीते हैं। लीला

आग्रह करके उसे बहुत सा नाश्ता करवाती है फिर उसे आराम करने को कहकर बाज़ार चली जाती है। वह फिर से 'यूटोपिया' पढ़ने लगता है। पन्द्रहवीं शताब्दी के घोर सामन्ती युग में कोई आदमी इस तरह के उन्नत विचार रख सकता है उसे पढ़कर विश्वास नहीं होता। वह पढ़ता–पढ़ता सो जाता है। सोकर उठने पर वह अपने कमरे में लीला को देखता है जो उसके लिए सामान खरीद कर लाती है तथा इसे कमरे में रखती है। लीला उसके लिए सिगरेट का पैकेट भी लाती है, जिसका उसे आश्चर्य भी होता है। दोपहर का खाना खाते हुए वह उसे एक जगह चलने के लिए कहती है। वह कहता है कि वह तो नौकर है जहां चाहो ले चलों उसकी इस बात से लीला दुःखी होती है। वह उसे दुःखी नहीं करना चाहता था इसलिए वह अपनी सफ़ाई पेश करता है जिससे लीला गंभीर हो उठती है। उन दोनों के मध्य अदृश्य मौन पसर जाता है। उनका भोजन करने का मन नहीं करता। दोनों उठकर अपने–अपने कमरे में चले जाते हैं। वह कमरे में जाकर वहां से भाग जाने की बात सोचता है लेकिन लीला को दुःखी भी नहीं करना चाहता है। आज से पहले उसके जीवन में कितनी ही नारियां आ चुकी थी। लेकिन आज जैसी अनुभूति उसके हृदय में हो रही थी वैसी पहले कभी नहीं हुई थी। वह सारा दिन बेचैन रहता है। इधर–उधर टहलता रहता है। उसे अधिक बेचैनी इसलिए भी थी भोजन के बाद लीला एक बार भी ऊपर नहीं आई थी। उसे अपनी बात पर नाराजगी थी। वह शाम तक उसी स्थिति में रहता है और सोचता है कि अन्धेरा होने पर लीला का सामना किए बिना वहां से चुप–चाप चला जाएगा। लेकिन तभी लीला सज धजकर ऊपर आती है और उसे चलने के लिए कहती है। उसे तैयार न देखकर झूठे होने का उलाहना देती है। लीला को देखकर वह जल्दी से तैयार हो जाता है।

कथानायक लीला के साथ जाने के लिए गाड़ी में बैठ जाता है। उसे लीला की साधारण वेशभूषा में विशेष आकर्षण दिखाई देता है क्योंकि सादगी में भी लीला का व्यक्तित्व निखर गया था। रास्तें में लीला उसे कहती है कि वह तो भागना चाहता था लेकिन उसने उसे पकड़ लिया है यह सुनकर वह घबरा जाता है कि लीला को कैसे पता चला कि वह भागना चाहता था। वह रास्ते में आपराधिक भावना से चुप रहता है। जब वे गन्तव्य स्थान पर पहुंचे तो वहां कुछ पुरुष और महिलाएं पहले से ही मौजूद थीं। सबके व्यक्तित्व में एक सादगी थी। किसी में भी कोई दिखावा नहीं था। सब लोग उस महिला अतिथि की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो वहां पर मुख्य अतिथि के रूप में आने वाली थी। वह वहां पर अपने आप को अछूत अनुभव कर रहा था। लीला को जब उसका ध्यान आया तो वह सबसे उसका परिचय 'प्रतिभाशाली संगीतज्ञ' के रूप में करवाती है। यह सुनकर वह लज्जा एवं संकोच से सिर झुका लेता है। इतने में कए गाड़ी से एक महिला उतरती है। सब लोग उसका स्वागत करते हैं। उसे मंच पर ले जाकर बिठाया जाता है। लीला सब लोगों से उसका परिचय करवाती है। आदरणीय अतिथि पूंजीपति परिवार से हैं। जब से वे विधवा हुई हैं अपना सारा समय विविध सामाजिक क्षेत्रों में, बड़े–बड़े महत्त्वपूर्ण कार्यों का संचालन और संगठन करने में लगाती हैं। वे हरिजनों, पिछड़ी जातियों, अनाथों, विधवाओं और समाज द्वारा बहिष्कृत और पीड़ित नारियों की सच्ची उन्नति और प्रगति को ध्यान में रखकर कार्य करती हैं। वे नाम और यश के लिए कार्य करने वालो से घृणा करती हैं। लीला उन्हें अपनी बात रखने के लिए आमन्त्रित करती है।

मुख्य महिला अतिथि कहती है कि वह वहाँ उपस्थित लोगों को यह अनुभव कराना चाहती है कि समाज की यथार्थ भीतरी परिस्थितियां किस हद तक विपन्न हैं। समाज के कई स्तरों के नीचे दबी और सर्वत्र फैली हुई दलित जनता, जो वास्तव में समाज की नींव एवं नीड़ है, पर ध्यान देने का समय किसी के पास नहीं है। आज के अखबारी युग में अखबार वालों को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक कूटचक्रों, घृणित दलबन्दियों, सरकारी और ग़ैर सरकारी राजनीतिक प्रचार, जनता के प्रति झूठी और कोरी मौखिक सहानुभूति दिखाने वाले महत्त्वहीन भाषणों को छापने से अवकाश नहीं मिलता है तो वे लोग उनकी पीड़ा का अनुभव करके कैसे छाप सकते हैं। मानवता का दो–तिहाई भाग गलत परिस्थितियों के कारण गौरव नरक को भोग रहा है। इसलिए आप लोगों अर्थात् उन सम्पन्न लोगों से निवेदन है कि आप सभी सुख–साधनों के बीच वास्तविकता को देखें तथा उसकी ओर से आंखें बन्द न करें। आप लोगों की समाज सेवा का कार्य सराहनीय है लेकिन यह सीमित है । इसलिए इसे बढ़ाएँ परिस्थितियाँ सुधारने का उत्तरदायित्व नारियों पर है क्योंकि पुरुष परिचालित समाज में दिन प्रतिदिन परिस्थितियां घोर विशृंखलता की ओर बढ़ रही हैं। यदि आज मातृजाति अपनी भीतरी शक्ति को अनुभव करके युगों की दासता के विरुद्ध संगठित विद्रोह करके उठ खड़ी हो तो सम्पूर्ण मानव–समाज का नक्शा एक दम बदल जाएगा। वह आगे कहती है कि वे एक ऐसी बात की कल्पना कर रही हैं, जिसके सफल होने की सम्भावना बहुत कम है। इसमें सालों भी लग सकते हैं। प्रत्येक नारी को अपने मन में इस स्वप्न को अपने आदर्श का ध्रुवतारा बनाकर अपनी जाति की उन्नति की ओर निरन्तर चलते रहता है। वह सबको शुभकानाएं देती हैं। भाषण समाप्ति पर लीला सबकी ओर से धन्यवाद देती है।

इसके बाद वहां संगीत कार्यक्रम आरम्भ होता है। एक–दो कार्यक्रमों के बाद लीला उसे मंच पर बुलाती है। वह घबरा जाता है। वह वहां से कहीं और जा भी नहीं पाता है, क्योंकि इससे लीला को सबके सामने अपमानित होना पड़ता।

इसलिए वह मंच पर जाता है। वहां जाकर पहले वह एक बांसुरी उठाकर उस पर एक रागिनी बजाता है, जो उसने पहले कभी कांगड़ा की पहाड़ियां में सुनी थी। उस पहाड़ी राग में बंगाल के भाटियाल और कीर्तन की सम्मिलित तर्ज मिलाकर एक नई रागिनी बजाता है। वह धुन में मग्न हो जाता है। जब उसकी चेतना भंग होती है तो वह बांसुरी बजाना रोक देता है। सब लोग तालियों से उसका स्वागत करते हैं। वह उठने को होता है तो लीला उससे सितारवादन का अनुरोध करती है। वह सितार पर भी बांसुरी वाली रागिनी बजाता है। वह उसमें खो जाता है और काफ़ी समय तक बजाता रहता है। जब बहुत गहराई में पहुंच जाता है तो अन्तिम झंकार लेता है। लोग तालियां बचाने लगते हैं। उसके बाद लीला उसे एक गीत सुनाने को कहती है वह रवीन्द्रनाथ का एक गीत सुनाता है। उस गीत में उसे अपने जीवन की असफलता और आज के युग के सामूहिक जीवन की व्यर्थता की पीड़ा के लिए जो सांत्वना मिल रही थी उससे वह भाव विभोर हो जाता है। गीत समाप्त होने पर वह एक दम खड़ा हो जाता है। चारों ओर से उसे उसके कार्यक्रम की सराहना मिल रही थी। उसके बाद कोई भी कार्यक्रम जम नहीं पाया। कार्यक्रम की समाप्ति पर लोगों ने उसे घेर लिया। हर कोई उसे अपने कार्यक्रम में आमन्त्रित करता चाह रहा था। वह सबसे विनम्र भाव से हाँ कह रहा था।

वहाँ लीला उसका परिचय नीरजा नाम की लड़की से करवाती है जो फिजिक्स में एम. एस. सी. कर रही है। देखने में वह सोलह की लगती है, लेकिन वह बीस वर्ष की है। वह नीरजा से कहता है कि भौतिक विज्ञान नीरस विषय से संगीत जैसे विषय का मेल नहीं खाता है। वह एक दम से उत्तर देती है कि संगीत का संबंध गणित से है क्योंकि उसकी तानों के उतार–चढ़ाव पर ध्यान रखना होता है। गणित का संबंध भौतिक विज्ञान से है। इसलिए भौतिक विज्ञान से भी संगीत का संबंध हैं। यह सुनकर कथानायक मुस्करा पड़ता है।

वहां उपस्थित लोगों से वे विदा लेते हैं। चलते समय नीरजा भी साथ चलती है। घर पहुंचकर नीरजा उसे अपने घर आमन्त्रित करती है। वह उसका आमन्त्रण काफ़ी इन्कार के बाद स्वीकार कर लेता है। नीरजा के जाने के बाद लीला उससे अतिथि महिला के भाषण के विषय में बातें करती है। वह उत्साहित होरक कहता है कि तुम लोगों के वर्ग में भी ऐसी क्रान्तिकारी विचार रखने वाली महिला से ऐसी बातें सुनने को मिलीं आश्चर्य है। वह तो समझ रहा था कि सम्पन्न वर्ग की महिलाएं फैशन के लिए समाज सेवा करती हैं। उनकी बातों से जीवन की कठोर वास्तविकता के बारे में सुना तो उसकी आंखें खुली की खुली रह गई। लीला उसके कार्यक्रम की भी प्रशंसा करती है और उससे पूछती है कि यदि वह इतने अच्छे ढंग से गा और बजा सकते हैं तो कतराते क्यों हैं ?वह लीला से कहता है कि उसकी बात वह चाहकर भी नहीं समझ सकती। वह उसे वेदना भरे स्वर में बताता है कि जब वह तीन–चार साल का था तब से ही उसकी अन्तरात्मा संगीत का प्रबल आकर्षण अनुभव करती रही है। उस छोटी सी उम्र में ही कहीं से भी बांसुरी वादन उसके कानों में पड़ता तो वह जो कुछ भी कर रहा होता सब छोड़ देता था। उसे ऐसा लगता जैसे कोई अज्ञात शक्ति किसी माया मंत्र से उसकी बालबुद्धि को किसी अन्य लोक में खीच रही है। वह कुछ नहीं जान पाता था कि वह किस ओर खींचा जा रहा है। एक आलौकिक आनन्द के से भाव की तल्लीनता उसकी सम्पूर्ण चेतना पर छा जाती थी। लीला उससे पूछती है कि जब उसकी आत्मा इस कदर अतीन्द्रिय और आलौकिक आनन्द में डूबी है तो वह गाने से क्यों कतराता है ? उसके मन में इस विचित्र प्रतिशोध का क्या कारण हो सकता है ? वह लीला को बताता है कि यही प्रश्न उसके मन में भी कई बार उठा है। हर बार उसका उत्तर वह नए रूप में पाता है। वह केवल संगीत का ही नहीं अपितु कला के सुन्दर और समुन्नत रूप का भी जन्मजात प्रेमी है। बचपन से ही वह संगीत और सौन्दर्य के अपार रहस्यमय मायालोक में भटकता रहा है।

उसे लगता था कि उसका सारा जीवन प्राकृतिक अभिव्यक्तियों के संसर्ग में आनन्दपूर्वक सहज ही बीतता चला जाएगा। वह वर्षाकाल, शरद् ऋतु और बसन्त ऋतु में प्रकति की अद्‌भुत छटा को देखकर भाव विभोर हो उठता था। उसकी चेतना महाचेतना से घुल मिलकर एक रूप होने लगती थी। हिमालय की हिममण्डित शोभा देखकर उसकी चेतना कैलाश पर शिव के साथ समाधिगत चेतना की होड़ लगाने लगती थी। उसने पूरी प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करके मानवीय चेतना की समीपता के साथ अतिचेतना के क्षणों में अनिर्वचनीय आनन्द की आलौकिक अनुभूति का स्वाद पाया है। लेकिन आज उसकी व्यक्तिगत चेतना के चरम विकास का वह सत्य कुण्ठित हो गया है। जब से वह ज्वलन्त यथार्थ के सम्पर्क में आया है और पग–पग पर घोर कटु और

कठोर परिस्थितियों से घिरा है, उसके`अन्दर का गठन निरन्तर बदलता जा रहा है। आज मनुष्य और मनुष्य के बीच, व्यक्ति और समूह के बीच, जनता और सरकार के मध्य, सम्पूर्ण मानवता और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं के मध्य पारस्परिक स्वार्थों का जो घात–प्रतिघात और संघर्ष वह देख रहा है, उसके कारण उसके मन का ऊपरी स्तर एक अजीब से कुहरे में ढक गया है। जिसकी नमी उसकी आत्मा को गला रही है। इससे कोई भी पथ उसे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है। उसे चारों ओर निराशा और अंधकार के बादल दिखाई दे रहे हैं। उसे इस अंधेरे में कभी –कभी प्रकाश और आशा की किरण दिखाई देने लगती है। इससे उसे लगता है कि एक दिन उसके ऊपर से ही नहीं सारी मानवता के ऊपर से यह सारा कुहासा हटेगा। जीवन की सामूहिक व्यवस्था बदलेगी। उसकी जिस रहस्यात्मक चेतना का विकास पथ रुद्ध हो गया है वह आगे बढ़ेगा। एक दिन ऐसा आएगा जब सभी की वैयक्तिक चेतना विकसित होकर सामूहिक चेतना के विकास में सहायक होती हुई पूर्णतः नई चेतना को जन्म देगी। उसकी पीड़ा कोई व्यक्ति की पीड़ा नहीं है। व्यक्ति के रूप में तो वह शंहशाह है, ऐसा इसलिए नहीं है कि वह लीला के यहां सुख सुविधा का जीवन बिता रहा है बल्कि विकट से विकट परिस्थितियों में भी उसे कभी कष्ट नहीं हुआ है। लीला उसकी बातों से प्रभावित होकर उसे देवता मानने लगती है। वह लीला की बात काटता है कि देवता बनाकर वह उसका ही नहीं, सारी मानवता का ही नहीं स्वयं अपने नारीत्व का भी उपहास कर रही है। यदि वह सचमुच मनुष्य बन जाए तो सच्चे अर्थों में जीवन जी सकता है। देवता बनकर पूजा पा जाना आसान है परन्तु मनुष्य बन पाना बहुत कठिन है। लीला उसकी बातें सुनकर भी अपना देवता मानती है, जिसके साथ रहकर वह अपना जीवन सफल बना सकती है। लीला उससे सदा अपने पास बने रहने का निवेदन करती है।

वह लीला की बातें सुनकर घबरा जाता है। ऐसी स्थिति उसके सामने कभी नहीं आई थी। वह लीला को समझाता है। लीला उसे आराम करने को कहती है। उसे लगता है कि वह शरीर से ही नहीं मन से भी थक चुका है। वह कुछ देर किताब पढ़ता है फिर सो जाता है।उसे एक विचित्र स्वप्न दिखाई देता है। जिससे उसकी नींद उचट जाती है। फिर उसे नींद नहीं आती है। वह इधर–उधर टहलता है । वह अपने आप को लीला के यहां बन्धनों जकड़ा पाता है। उसे लगता है कि उसने लीला को अपनी रहस्यात्मक चेतना के विषय में बता कर मूर्खता की है। एक ऐसी नारी को मनोजाल में फंसा लिया है जो कि शान्त और स्वस्थ जीवन बिता रही थी। उसकी अन्तरात्मा उसे धिक्कारती है कि उसे यहां से जल्दी निकल जाना चाहिए। इस मकान में उसका रहना उचित नहीं है। उसे अनुभव होता है कि जिस दिन से वह लीला के यहां आया है उस दिन से धीरे–धीरे उसके अज्ञात में, भीतर और बाहरी शक्तियों में एक प्रकार की गलनशीलता आ रही है। उसे संभल जाना चाहिए, नहीं तो यह सीलन उसकी आत्मा के भीतर प्रवेश करके उसे चाटकर खोखला बना डालेगी।

वह प्रायः एक घण्टा टहलने के उपरान्त पलंग पर लेट जाता है। लेकिन आज उसे नींद नहीं आती है। नींद की ऐसी शिकायत उसे कभी नहीं रही। उसके साथ फुटपाथों, पार्कों, करीम चाचा तथा प्यारे के यहां खटमलों और मच्छरों के बीच भी कभी ऐसा नहीं हुआ कि उसे नींद नहीं आई हो। यहां बढ़िया, मुलायम गद्देदार पलंग के ऊपर उसकी नींद गायब थी। उसे बहुत देर बाद नींद आई। सुबह आंख खुली तो सूरज निकल चुका था। लीला उसी के कमरे में बैठी थी। वह उसकी तबीयत के विषय में पूछती है । वह कहता है कि उसके सिर में दर्द है। इससे वह घबरा जाती है और उसके सिर पर हाथ रखकर कहती है कि दर्द के साथ बुखार भी लगता है। वह उसका सिर दबाने लगती है। वह लीला से कहता है कि उसके स्नेह से सचमुच उसकी पीड़ा दूर हो गई। वह तो चिर अभागा है। उसे कभी भी किसी नारी का सच्चा प्रेम और सहानुभूति प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं मिला है। लीला उससे उसे अतीत के बारे में पूछती है। वह भावुकता में बह जाता है उसे अपनी मां के विषय में कुछ कभी याद नहीं है। उसके जन्म के आठ–दस महीने बाद उसकी मां मर गई थी। उसे उसकी बुआ ने पाला । वह भी जल्दी ही मर गई थी। उसके बाद पिता जी रह गए थे। जब वह सात–आठ साल का हुआ तो उसके पिता की किसी आकरिमक रोग से मृत्यु हो गई। इस प्रकार भाग्य ने उसे विश्व में निर्द्वन्द्व और मुक्त विचरने का रास्ता अपने आप साफ कर दिया था। मन का रास्ता तो साफ था लेकिन तन की आवश्यकताओं के लिए उसे जो सामाजिक अनुभव हुए वे चाहे जैसे भी हो लेकिन बहुत प्रीतिकर नहीं थे। लीला उसके दुःख से दुःखी हो उठती है। वह लीला से कहता है कि उसने अपने जीवन में आन्तरिक स्नेह नहीं पाया है। वे लोग कितने भाग्यवान होते होंगे जिन्होंने किसी भी रूप में नारी का स्नेह पाया हो। नारी हृदय से निकली सच्ची संवेदना क्या है यह उसने आज लीला के स्नेह की शीतल छाया से जाना था। लीला काफ़ी देर तक चुप रहती है। थोड़ी देर बाद अनभने भाव से बोलती है कि उसका जीवन भी साधारण परिस्थितियों में बीता है। जिस कारण आज तक वह अपने आपको स्नेह वंचिता और अभागिन मानती थी लेकिन उसकी बात सुनकर उसे अपनी सोच पर हंसी आती है।

कथानायक लीला की निकटता से बड़ी सुखद अनुभूति अनुभव करता है। लीला को अपने अतीत से दुःखी अनुभव करता है, इसलिए उसे प्रसन्न करने के लिए उससे हंसी–ठिठोली करता है जिससे वहां का वातावरण सहज हो जाता है। बातचीत के दौरान वह लीला से अपने मन की बात कह देता है कि वह उसे अच्छी लगती है। यह सुनकर लीला लजाते हुए चली जाती है उसके जाने के बाद उसे अपनी भूल का एहसास होता है। उसे अपनी चारित्रिक दृढ़ता पर गर्व था। लेकिन आज वह भी चला गया। उसे अपनी इस बात से भी नाराज़गी थी कि उसने अपनी पीड़ा किसी नारी से ज़रा सी सहानुभूति पाते ही प्रकट कर दी। उसे आत्मग्लानि होती है। वह इस बात से हैरान होता है कि उसके स्वभाव में जो परिवर्तन आ रहा है वह किस कारण से है। वह लीला से अपने व्यवहार की माफी मांगना चाहता है लेकिन साहस नहीं जुटा पाता। लीला तीन घण्टे बाद आती है। उसकी आंखों में पहले से भी ज्यादा प्यार होता है। लीला उसकी तबीयत के बारे में पूछती है। शाम को वह उसे पिक्चर ले जाती है जिससे उसकी तबीयत बहल जाएगी। सिनेमा से आकर उसका मन बहुत शान्त तथा प्रसन्न था लेकिन शरीर थका हुआ इसलिए उसे लेटते ही नींद आ गई परन्तु पिछली रात की तरह ही ऊटपटाँग स्वप्न दिखाई देता है जिससे उसकी नींद उचट जाती है। उसके मन और मस्तिष्क में अजीब और अस्पष्ट विचार मंडराने लगते हैं। एक अनोखी उथल–पुथल सी उसके भीतर मच रही थी। एक विकट विद्रोह का भाव जाग रहा था। विचित्र विचार उसकी सारी चेतना को हिलकोर रहे थे। बहुत देर सोचते रहने से रात के अन्तिम प्रहर में उसका मन और शरीर दोनों थक गए। तब वह हार कर पलंग पर लेट जाता है और थक कर सो जाता है। सुबह वह काफी देर से उठता है। उठते ही उसे लीला का मुस्कराता हुआ चेहरा याद आता है तो वह रात की सारी अशान्ति सारे विद्रोहात्मक मनोभावों को अतीत के दुःस्वप्न की तरह भूल जाता है।

कथानायक नहा धोकर नीचे आता है । लीला उसे मार्केटिंग के लिए साथ चलने को कहकर तैयार होने चाली जाती है। तभी वहां नीरजा आती है और उसे अपने घर चलने के लिए कहती है। नीरजा लीला से पूछती है। लीला न 'हां' करती है न 'न' । नीरजा उसे खींच कर ले जाती है। घर पहुंचकर वह उसका परिचय अपने माता–पिता तथा भाई–भाभी से करवाती है। वे लोग नीरजा के बताये संगीत कार्यक्रम के आधार पर उसे एक पेशेवर गवैया समझते हैं। वह वहां पर स्वयं को एक अजीब सी उदासी से घिरा हुआ अनुभव करता है। नीरजा उसे अपने घर में बने म्यूजियम में लेकर जाती है। वहां दीवारों पर तरह–तरह के अस्त्र–शस्त्र थे। एक ओर बड़े–बड़े केसों में भिन्न–भिन्न युगों की मूर्तियों के ध्वंसावशेष रखे हुए थे। वहां से वह उसे एक और कमरे में लेकर गई जहां पर विविध जन्तुओं की खालें उनकी मुखाकृतियों सहित रखी हुई थीं। एक कमरे में भारत के विभिन्न राज्यों और कुछ दूसरे देशों के प्राचीन बाजे ओर विभिन्न मूर्तियां रखी हुई थीं। उन्हें देखकर उसका मन खिन्न हो गया। वह बहुत थक गया था। इसलिए जब नीरजा ने कहा कि अब और कुछ नहीं है देखने को तो उसने चैन की सांस ली। जब वे ड्राईगरूम में पहुंचे तो वहां कुछ और लोग भी आ चुके थे। कुछ समय बाद वहां पर दो तीन महिलाओं और सज्जनों के साथ साक्षात दुर्वासा ऋषि की सी मुद्रा बनाए एक जटाधरी बाबा आए। उनका परिचय बड़े सिद्ध और पहुंचे हुए बाबा के रूप में करवाया गया। वे बाबा स्वयं को द्वापर युग में कृष्ण के साथी बतातें है जो किसी श्राप के कारण इस कलियुग में आए हैं। वहां उपस्थित नवयुवक वर्ग अपने प्रश्नों के द्वारा बाबा को बड़े ठग के रूप में सिद्ध करने में लगे थे। वह उन्हें अपनी पेट–पूजा के लिए नित नए रूप रचने वाला मान रहे थे। कथानायक सबकी बातें सुनता रहता है। इन सब बातों से उकता कर वह नीरजा से विदा मांग कर वहां से चला जाता है। जब वह घर पहुंचता है तो लीला उसके कमरे में लेटी हुई कोई पुस्तक पढ़ रही थी। वह बड़े ध्यान से बेखबर लीला को देखता रहा। उसे वह बहुत प्यारी लगती है। लीला उसे देखकर पूछती है कि इतनी देर कैसे कर दी ? तब वह उसे नीरजा के यहां आए बाबा के विषय में बताता है । लीला उससे पूछती है कि क्या ऐसा सम्भव है ? वह कहता है कि धूर्तता और मूर्खता का ऐसा जोड़ा मिलना कठिन है। क्योंकि प्रायः यह देखा गया है कि धूर्त लोग मूर्ख नहीं होते और मूर्ख धूर्त नहीं होते परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी देखे जाते हैं जिनमें धूर्तता और मूर्खता का सम्मिश्रण पाया जाता है। ऐसे लोग भयंकर रूप से खतरनाक होते हैं। ये लोग आज की विषम परिस्थितियों में मानवता के बहुत बड़े भाग को संस्कृति के नाम पर बरगलाने में सफल हो जाते हैं। ये लोगों में साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काते हैं, जो समाज के लिए हानिकारक हैं लीला उसकी बातों को ध्यान से सुनती है और कहती है कि समाज, देश और संसार की चिन्ता में घुलकर वह अपना स्वास्थ्य चौपट कर लेगा। इसलिए व्यर्थ की चिन्ता छोड़ दो। वह अत्यन्त उदासीन भाव से कहता है कि वह विश्व कल्याण के लिए सिर्फ चिन्ता के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि उसके पास क्षमता नहीं है। उसे इस बात से भी पीड़ा होती है कि वह सामाजिक कर्त्तव्यों को भुलाकर अपनी निजी सुख–सुविधाओं के लिए लीला के यहां रह रहा है। उसे इससे आत्मग्लानि अनुभव होती है। लीला यह सुनकर भावावेश में आ जाती है और बोलती है कि यह घर उसका है। इसमें आत्मग्लानि

का तो सवाल ही नहीं उठता है। उसकी बातों से उसे पीड़ा होती है। उसकी तो आन्तरिक आकांक्षा है कि वह उस पर अपना अधिकार समझे। लेकिन वह स्वयं को लीला के यहां सोने के पिंजड़े में कैद पाता है। लीला को उसकी बात से पीड़ा पहुंचती है। उसकी आंखों से आँसू टपकने लगते हैं। लीला के इस प्रकार रोने पर वह अपने को मायाजाल में फंसा पाता है। उसे स्वयं समझ में नहीं आता कि वह क्या करे ? वह लीला को कहता है कि उसकी बात का विपरीत अर्थ न निकालो। उसके यहां आने से पहले वह सदा निर्द्वन्द्व विचरण करता रहा है। यहां आकर वह पहली बार स्वयं को ऐसे बंधन में बंधा पा रहा हैं उसे लगता है कि इन बंधनों को तोड़ पाना उसके लिए बड़ी कठिन परीक्षा सिद्ध होगी।

कलकत्ता (कोलकाता) आकर वह जिन परिस्थितियों से गुजरा था उनके बारे में वह लीला को बताता है। उसे अपने संघर्ष के दिन साहसपूर्ण लगते हैं। यहां का वातावरण उसे पराया –सा लगता है। उसे लगता है जैसे वह अपने वर्ग के लोगों के साथ विश्ववासघात कर रहा है। लीला उसकी पिछली परिस्थितियों के विषय में सुनकर पत्थर हो जाती है और इतना कहकर कि ''वह उसे अपने लोगों के साथ समझे,'' वहां से चली जाती है।

इस घटना के बाद से लीला और वह निकट आते चले जाते हैं। वह सभी कार्य उससे पूछकर करती है। एक दिन लीला का नौकर शम्भू उससे एक हफ्ते की छुट्टी मांगने आता है। वह उसे कहता है कि इसके लिए अपनी मालकिन से पूछो। वह कहता है कि उसे उसकी मालकिन ने ही भेजा है। वह छुट्टी दे देता है। वह लीला से कहता है कि यह कैसा परिहास है ? लीला कहती है कि अब से वह घर का मालिक है इसलिए घर के हर काम में उसकी राय ली जाया करेगी। लीला के जाने के बाद उसे लगता है कि जितना वह इन बन्धनों से छुटकारा पाना चाहता है उतना ही इनमें और अधिक उलझता चला जा रहा है। वह लीला से बात करके अपने मन की अशान्ति को दूर करना चाहता है। सुबह उठकर वह उससे कहता है कि बहुत दिनों से उससे बात करना चाह रहा है। पहले वह उससे चल–अचल सम्पत्ति का मूल्य पूछता है। लीला उसकी बात से संदेह में पड़ जाती है। यह बात पूछने का कारण पूछती है। वह लीला को समझाता है कि पहले वह बताए फिर उसकी उत्सुकता शान्त कर देगा। लीला के अनुसार उसके पास चालीस लाख की कुल सम्पत्ति है। यह सुनकार वह कहता है उस दिन उसने उसकी बात सुनकर यह कहा था कि 'मुझको भी तुम लोगों के साथ समझो'। इससे उसे लगता है कि उसके मन में समाज के शोषित वर्ग के लिए सहानुभूति है। इसलिए यदि वह चाहे तो अपनी आधी सम्पत्ति वह उन लोगों के उद्धार के लिए दान कर दे।

इससे कई लोगों की कायाकल्प हो जाएगी। लीला उसकी बात से स्तब्ध रह जाती है। वह उससे पूछता है कि उसके प्रस्ताव पर उसका क्या विचार है। लीला रुखाई से कहती है कि ऐसे गम्भीर प्रश्न का उत्तर वह एक दम नहीं दे सकती वह सोचकर बताएगी और उठकर चली जाती है।

कथानायक को लगता है कि जो बात पिछले कुछ दिनों से उसे परेशान कर रही थी, वह कह देने पर भी वह परेशान है। उसे अपनी सोच पर भी हैरानी होती है कि धन–दौलत में पत्नी नारी ऐसा क्यों करेगी ? उसे लीला के वाक्य 'तुम्हीं घर के मालिक हो' व्यंग्य बाण लगते हैं। वह वहां से भाग जाना चाहता है। वह लीला के दिए एक जोड़ी कपड़े पहनकर वहां से निकल जाता है।

लीला के यहां से निकलकर वह रांची पहुंच जाता है। रांची जाने का कोई विशेष कारण नहीं था। वह वहां कैसे पहुंच गया यह स्वयं उसे भी पता नहीं था। पिछले अनुभवों के कारण वह स्वयं को थका हुआ अनुभव कर रहा था। इसलिए कुछ समय के लिए उसे एकांत में विश्राम की आवश्यकता थी। रांची में काँक को जाने वाली सड़क पर बरगद के पेड़ की छाया में एक स्वामी जी की कुटिया थी। वह उस कुटिया में उनके साथ रहने लगा। स्वामी जी से उसका परिचय रांची के सुप्रसिद्ध मानसिक रोग अस्पताल में हुआ था। एक दिन वह अपने नव परिचित डॉक्टर के साथ उस अस्पताल में कुतूहल से प्रेरित होकर चला गया था। वहां वह कई तरह के लोगें से मिलता है। वहां उसने देखा कि एक हालनुमा कमरे में बहुत से मरीज़ कताई, बुनाई, सिलाई और इसी तरह के दूसरे कामों पर जुटे हैं। वह उनके कार्य करने के ढंग पर गौर करने लगा। सभी मरीज़ इस प्रकार कार्य कर रहे थे जैसे बहुत बड़े अनुभवी और विशेषज्ञ हों। पागलों के प्रति उसके मन में जो भावना थी उसका वास्तविकता से कोई मेल नहीं था क्योंकि सभी अपना कार्य गंभीरता, लगन ओर निपुणता से कर रहे थे। वहाँ से वह आगे बढ़ता है उसे एक मरीज़ मिलता है जो उसकी तरफ देखकर मुस्करा रहा था। वह उससे मुस्कराने का कारण पूछता है। वह मरीज़ कहता है कि आप सब बाहर वाले लोग मुस्कराना बहुत आसान समझते हो। जब जी चाहा मुस्करा लिया। मुस्कराना एक बहुत बड़ी कला है जो कई सालों के अभ्यास से सीखी जाती है। नायक

उससे पिण्ड छुमाकर आगे बढ़ जाता है। वहां बाहर कुछ मरीज इकट्ठे बैठे थे। बाद में पता चलता है कि डॉक्टरी योजना के अनुसार उन लोगों को दिन में एक बार इकट्ठे बिठाया जाता है। जिससे एक दूसरे की हरकतें देखकर उनमें कुछ प्रतिक्रियाएं होती है। जिससे मानसिक संतुलन में प्रेरणा मिलती है। वहां एक मोटा–नाटा व्यक्ति ''हिरन हिज'', ''हिरन हिज' रटता हुआ आता है। वह वहां गेरुआ वस्त्रधारी एक सज्जन से, जो देखने में सुशिक्षित संन्यासी की तरह लगते थे, पूछता है कि स्वामी जी आपने भृगुसंहिता से पता लगाया कि दुनिया कब उलटने वाली है। स्वामी जी कहते है कि भृगुसंहिता कहती है कि हिरन मर गया है गर गया है हिज लापता है अब दुनिया नहीं उलटेगी। सब ठीक हो जाएगा। वह मोटा व्यक्ति वहां से चला जाता है।

स्वामी जी नायक को आवाज लगाते हैं और पूछते है कि उसे क्या कष्ट है। किसी अनजान व्यक्ति द्वारा यह पूछे जाने पर प्रतिरोध की प्रतिक्रिया उसके मन में जागी कि वह चाहे किसी भी कष्ट से पीड़ित हो आपको क्या लेना ? लेकिन स्वामी जी के आसाधारण व्यक्तित्व के कारण वह सहज भाव से उत्तर देता है कि उसका पिछले कई दिनों से मन उचट रहा था उसके शुभचिन्तकों की राय थी कि वह मानसिक रोगों के अस्पताल में भरती हो जाये। उसने अपने मित्रों की बात नहीं मानी । वह तो केवल अस्पताल देखने आया है। स्वामी जी विचित्र रहस्यमयी मुस्कान में कहते हैं कि कोई मित्र ऐसे ही मानसिक रोगों के अस्पताल में भरती होने की सलाह नहीं देते हैं। वह चुप रहता है। वह स्वामी जी के साथ कई और रोगियों से मिलता है। स्वामी जी को सबके इतिहास का पता है। उनके अनुसार स्त्री रोगिणियां अधिकतर असफल दाम्पत्य सम्बन्धों के कारणों से मानसिक संतुलन खो बैठती है और पुरुष रोगी आर्थिक कारणों से दिमाग की बिमारी से पीड़ित हो जाते हें। वह स्वामी जी से पूछता है कि वह यहां कब से हैं ? वे बताते हैं कि वे अठारह महीनों से यहां हैं। वे मरीज न होकर भी मरीज हैं। इसके पीछे की लम्बी कहानी सुनाते हुए वह कहते है कि वे मध्य प्रदेश के एक रियासती परिवार से थे। उनके पिता में सामन्ती युग की अच्छी बुरी सभी आदतें कूट–कूटकर भरी थीं।

इस प्रकार के अत्याचारी जीवन से स्वामी जी को बचपन से ही घृणा थी। जब वे बड़े हुए तो उनके पास विलासिता के सभी साधन जुटाए गए। वे जल्दी ही इनसे ऊब गए। एक दिन उनके चचेरे भाई ने उन्हें विष देकर मारने का प्रयत्न किया। वह उन्हें मारकर उनके पिता को निसंतान करना चाहता था। वह अकेला गद्दी का वारिस बनना चाहता था। इस प्रकार से षड़यन्त्रों की राजनीति से उकता गए और सब कुछ छोड़कर वहां से चले गए। काफी घूमने के बाद हरिद्वार में एक ऋषि के सम्पर्क में आए। उनके पांच शिष्य थें वे उन सबको जड़ बुद्धि मानते थे। स्वामी जी को अपना शिष्य बनाने के उपरांत उन्होंने उन्हें भारतीय संस्कृति परम्परा सम्बन्धी सभी विषयों में पारंगत बना दिया। उनके बाद बहुत से शिष्य वहां ज्ञान के लिए आए। सभी के आश्रय का वहां समूचा प्रबन्ध नहीं था। ऋषि ने मरने से पहले स्वामी जी को अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। इसलिए सभी शिष्यों के उचित रहन–सहन के लिए उन्होंने एक सेठ से , जिसकी उनमें अपार श्रद्धा थी, एक बड़ी रकम ली। इस प्रकार आर्थिक असुविधा दूर हो गई । शिष्यों को पढ़ाने के लिए और अध्यापक रखे गए। उनमें से एक साम्प्रदायिक बुद्धि के थे। उसने जल्दी ही अपना प्रभुत्व जमा लिया। स्वामी जी भारतीय संस्कृति को मानते थे इसलिए किसी विशेष सम्प्रदाय को ऊपर उठाने का उन्होंने प्रयत्न नहीं किया था। वे लोगों में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की जड़ें फैलाना चाहते थे। अंधविश्वासी लोग धर्म के नाम पर उस अध्यापक के चुंगल में आ गये। जो सम्पत्ति दलित लोगों को ऊपर उठाने के लिए खर्च होनी चाहिए थी वह हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए खर्च होने लगी। स्वामी जी को सबसे धृणा हो गई और वे वह स्थान छोड़कर चले गए।

वहां से वह चुपचाप देहाती जनता में जाकर अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार निरक्षरों के शिक्षण व्रत में लग गए। वे अपनी बातचीत में किसी सम्प्रदाय या धर्म का प्रचार नहीं करते थे, जिससे वहां एक विशेष वर्ग उनसे नाराज रहने लगा और धीरे–धीरे उनके विरूद्ध षड़यन्त्र करने लगा। एक दिन उनका नाम उसी गांव की एक विधवा से जोड़ा गया। इससे स्वामी जी के मन को धक्का लगा और उससे भी ज्यादा उन्हें चिन्ता उस निर्दोष विधवा की हुई जो बिना कारण बदनाम हुई। उस विधवा के घर वालों ने यह बात सुनकर उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया। विरोधी दल यहीं तक चुप नहीं हुआ एक कपटी महिला की गोदी में एक दुधमुहां बच्चा देकर गांव में भेज दिया। उस औरत ने उस बच्चे का पिता स्वामी जी को बताया। उसके बाद स्वामी जी ने वह गांव छोड़ दिया। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते हुए प्रयाग पहुंच गए। प्रयाग में उस समय कुम्भ के लिए माघ मेले की तैयारियां चल रही थीं। अधिकारी वर्ग इस प्रकार प्रचार कर रहे थे कि लाखों व्यक्ति पुण्य लाभ के लिए वहां पहुंचने लगे। पहले अधिकारी वर्ग हैजे के टीके तथा कर देने वालों को वहां रहने दे रहे थे लेकिन बाद में इस नियम से मुक्त कर दिया। जिससे वहां चारों ओर

नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखाई दे रहे थे। स्वामी जी भी एक तरफ कुटिया बनाकर रहने लगे। अन्त में वह महादिन आ गया जिसके लिए इतने लोग जमा थे। स्वामी जी भी एक कोने में जाकर कीचड़ में स्नान किया ही था कि चारों तरफ हाहाकार मच गया। पूछने पर पता चला कि हज़ारों लोग कुचले गए। लोगों के कुचले जाने का कारण बांध पर एक तरफ नागा साधुओं की टोली आ रही थी दूसरी ओर से नेताओं की सवारी आ रही थी। जिससे दोनों ओर का जल प्रवाह रुका हुआ था। जिससे लोगों में भगदड़ मच गई और घटना घट गई । अगले दिन अखबार में हज़ारों लोगों के कुचले जाने के स्थान पर कुछ लोगों के कुचले जाने की खबर थी। स्वामी जी के मन पर इस घटना का गहरा प्रभाव पड़ा। वे सोचने लगे कि यदि वे धर्म परायण होते तो इस घटना को धर्म के नाम पर दी जाने वाली बलि के रूप में मानते। लेकिन वे ऐसे नहीं थे। इसलिए वे ऐसा सोच नहीं पा रहे थे। उनके मन में रह–रहकर यह प्रश्न बार–बार उठने लगा कि भीड़ में लोगों के कुचले जाने पर वहां आई जनता अपने मन में कौन सा पुण्य लाभ लेकर लौटी होगी? इससे उनको कौन–सा आध्यात्मिक ज्ञान या आत्मिक सन्तुष्टि मिली होगी ? स्वामी जी के अनुसार अन्ध–धार्मिक विश्वास की जो महाशक्ति इतनी विशाल जनता को संगम में खींच लाई, उसे यदि उपयुक्त दिशाओं में परिचालित किया गया होता तो उसके द्वारा कितनी प्रबल राष्ट्रीय और सामाजिक शक्ति का संचय हो सकता था ? लेकिन हमारे नेता और विद्वान् सुधार का प्रयत्न करने के स्थान पर अन्ध विश्वास की भावना को ही बढ़ावा देने में अपना कल्याण मानते हैं। स्वामी जी कहते हैं कि वे अपनी सोच के कारण कभी–कभी अपने को पागल समझने लगते हैं तो कभी दूसरों को। उन्हें लगता है उनके ही दिमाग में कहीं कुछ कमी रह गई है तभी तो उनके आश्रम में और देहात में उनके विरुद्ध षड़यन्त्र रचे गए जबकि वे किसी का अहित नहीं करते हैं। इस प्रकार सोचते हुए वे प्रयाग से पटना आ पहुंचे। पटना में कुछ दिन गुरुद्वारा में रहे। वहां कुछ लोगों से मित्रता हो गई थी। बेकार की सोच से सिर की नसों में दर्द रहने लगा था। जिस कारण वे सिर की नसों को दबाए रखते थे। उन्हें ऐसा करते देख एक सरदार जी ने उन्हें रांची मानसिक रोग अस्पताल में दिखाने को कहा। सरदार जी भले और प्रभावशाली थे। उन्होंने स्वामी जी के रहने का प्रबन्ध कर दिया। यहां आकर बिना डॉक्टरी इलाज के उनका खोया हुआ आत्मविश्वास जाग उठा था। उन्होंने डॉक्टर से साफ कह दिया था कि यहां का वातावरण ही मेरे इलाज के लिए काफी है। तब से वे यही है। अस्पताल के पास उनकी छोटी सी कुटिया है। दिन में एक बार वे अस्पताल में आकर मरीजों से मिल जाते हैं।

कथानायक बड़े तन्मय भाव से स्वामी जी का किस्सा सुनता रहा। वह उनसे भारतीय संस्कृति परम्परा के सम्बन्ध में पूछता है। स्वामी जी अत्यनत धीर और शान्त भाव से उसके प्रश्न का उत्तर देते हैं कि उनका विश्वास है कि एक दिन संसार की युगों से विकसित सांस्कृतिक धाराएं भारतीय संस्कृति से मिलकर एकाकार हो जाएंगी। इस देश की सांस्कृतिक परम्परा विराट ओर बहुमुखी है। इसलिए यहां संकीर्ण साम्प्रदायिक दृष्टिकोण कभी भी स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकता। आर्य और अनार्य, वैदिक और बौद्ध संस्कृतियां और बाहर से आए यवन, शक, हूण आदि जातियों की संस्कृतियाँ यहां की विराट संस्कृति के महासागर में मिलकर एकाकार हो गई हैं।

कथानायक की स्वामी जी के साथ घनिष्ठता बढ़ती जाती है। उनके साथ नायक की प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर चर्चा होती रहती थी। एक दिन उसकी मुलाकात लीला के मुनीम मगनलाल जी से मानसिक अस्पताल के फाटक के बाहर स्वामी जी कुटिया के पास हो जाती है। वे वहां अपने किसी रिश्तेदार को भरती कराने आए थे। उन्होंने उसे बताया कि उसके कलकता (कोलकाता) से चले आने के बाद से लीला बहुत चिन्तित रहती है। वे उसे कलकत्ता चलने के लिए कहते है परन्तु वह उनके साथ नहीं जाता है। उनके जाने के बाद वह फिर से बेचैन रहने लगा।

फागुन के महीने में एक दिन लीला वहां आ जाती है। उसे अपने सामने देखकर कथानायक आश्चर्यचकित रह जाता है। लीला उसे कलकत्ता (कोलकाता) ले जाने के लिए आई थी। वह स्वामी जी से लीला का परिचय कराता है। लीला के सम्बन्ध में वह पहले ही उन्हें सब कुछ बता चुका था। वह स्वामी जी से अकेले में पूछता है कि क्या वह लीला के साथ कलकत्ता (कोलकाता) चला जाए ? स्वामी जी उसे समझाते हैं कि जब वह तुम्हें लिवा लेने के लिए यहां तक आई है तब स्पष्ट है कि उसने तुम्हारी सब बातें मंजूर कर ली हैं। अब प्रसन्न हो जाओ , चिन्ता की कोई बात नहीं है परन्तु स्वामी जी के समझाने पर उसका मन अशान्त बना रहता है और वह लीला को समझाता है कि उसका मार्ग उससे सर्वथा भिन्न है। इसलिए दोनों का मिलन किसी भी स्थिति में संभव नहीं है। वह स्वयं को उसके समाज के अनुरूप नहीं मानता है तथा वह यह भी चाहता है कि उसके जैसे स्तर के अनुरूप बनने के लिए लीला अपनी सुख–सुविधाओं को त्याग दे।

लीला नायक को समझाती है कि क्या वह उसकी वह बात भूल गया है जो उसने एक दिन उससे कही थी कि मुझे भी तुम अपने ही लोगों में से एक समझों। वह उसे कहती है कि उसके जीवन का ऊपरी ठाठ देखकर उसे यह विश्वास नहीं करना चाहिए कि वह जो उन लोगों में से एक होने की बात कह रही थी वह केवल शब्द नहीं अपितु उसके अन्तरमन की वाणी थी। उसने तो उसके प्रस्ताव पर विचार करने का समय मांगा था। वह बिना उसे कुछ बताये ही वहां से भाग आया था। इसमें सारा दोष वह नायक का ही मानती है।

लीला के अन्तर की सत्यता से परिचित होकर कथानायक उसकी ओर देखता रह जाता है । अब सारी स्थिति उसके सामने स्पष्ट हो गयी थी। वह फिर स्वामी जी से मिलता है और उन्हें सब कुछ बताता है। उसे इस बात का भय है कि दुनिया क्या उस पर सन्देह नहीं करेगी कि उसने एक धनी नारी को अपने मोहजाल में फंसा दिया ? स्वामी जी उसे समझाते हैं कि तुम्हें तो दुनिया वालों के कहने–सुनने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि वे तो सदा दूसरों पर ताने कसते रहते हैं। लीला ने अपना सर्वस्व पीड़ितों की सेवा के लिए अर्पित कर दिया है। वह भी तुम्हारी तरह और तुम्हारे ही वर्ग की हो गयी है। इसलिए बिना किसी दुविधा के उसके साथ जाओ। वह स्वामी जी को भी साथ चलने के लिए कहता है। वे उत्तर देते हैं कि समय आने पर वे भी अपने आप पहुंच जायेंगे। दूसरे दिन कथानायक लीला के साथ कोलकाता चला जाता है।

अध्याय–3
'जहाज का पंछी' उपन्यास का कथासार

'जहाज का पंछी' इलाचंद्र जोशी द्वारा रचित एक ऐसा मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है जिसमें एक अनाथ तथा पढ़े–लिखे समझदार बेरोज़गार युवक की व्यथा–कथा प्रस्तुत की गई है। एक सत्ताईस वर्षीय अनाम नवयुवक बेकारी से छटपटा कर कलकत्ता महानगर में आ पहुंचता है किन्तु यहां भी उसकी आजीविका और आवास का कोई प्रबनध नहीं हो पाता। इधर–उधर फुटपाथों पर भटकते हुए वह जैसे–तैसे अपने दिन व्यतीत करता है। उसका अत्यन्त कृश शरीर और वेश–भूषा की भी अत्यन्त दयनीय अवस्था देखकर प्रत्येक व्यक्ति यह समझता है कि वह कोई चोर या पाकिटमार है। इसी संदेह में वह पुलिस के हाथों पड़ता है और चोट खाकर अस्पताल में पहुंच जाता है। अस्पताल में वह देखता है कि जन–सेवा का ढोंग अपनाया जा रहा है। एक दिन उसे अस्पताल से निकाल दिया जाता है। वह फिर इधर–उधर भटकता हुआ दो –एक घरों में नौकरी की तलाश में जाता है, किन्तु उसे दुत्कार दिया जाता है। इसी अवस्था में उस पर एक बार चोरी का अपराध लगाया जाता है और पुलिस उसे हवालात में बन्द कर देती है। यहां भी वह देखता है कि कैदियों पर पुलिस वाले मनमाना अत्याचार करते हैं और भ्रष्टाचार के कई तरीके अपनाते हैं। समय आने पर उसे मैजिस्ट्रेट के सामने ले जाया जाता है। मैजिस्ट्रेट उसे निरपराध घोषित कर देता है और वह एक बार फिर जीवन के मुक्त प्रांगण में विचारने लगता है।

भटकते–भटकते वह करीम चाचा के संपर्क में आता हैं उनके यहां रहते हुए वह कला नाम की एक लड़की को हिन्दी पढ़ाता है और साथ–साथ करीम चाचा के निर्देशन में व्यायाम करते हुए अपना स्वास्थ्य सुधारता है और पाक–कला की शिक्षा प्राप्त करता है। कुछ कारणों के बाद उसे यह स्थान छोड़ना पड़ जाता है। अब उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार की आभा आ गई थी और उसकी वेश–भूषा भी सुधर गई थी। भादुड़ी महाशय के यहां उसे रसोइये की नौकरी मिल जाती है और उसकी आवास–समस्या का भी अन्त हो जाता है। किन्तु रवीन्द्र जयन्ती के उपलक्ष्य में वहां सम्पन्न हो रही एक गोष्ठी में प्रगतिशील विचारधारा का एक भाषण दिये जाने के कारण भादुड़ी महाशय क्रुद्ध हो उठते हैं और उसे नौकरी से निकाल देते हैं।

भादुड़ी जी के यहां से निकलने के पश्चात् वह प्यारे धोबी के सम्पर्क में आता है। प्यारे से उसका परिचय अस्पतल में रहते हुए हुआ था। प्यारे के यहां लॉड्री का काम संभाल लेता है। उसकी लड़की बेला कथानायक के प्रति आकर्षित हो जाती है और अपना पूर्ण समर्पण करने के लिये उद्यत हो जाती है, किन्तु वह उसे स्वीकार नहीं कर पाता। एक दिन प्यारे उन दोनों को बड़ी ही संदिग्धावस्था में देख लेता है और उसे वह स्थान भी छोड़ना पड़ जाता है।

प्यारे के यहां से निकाले जाने के पश्चात उसे मिस साइमन नाम की एक ऍग्लो–इंडियन स्त्री के यहां रसोइये की नौकरी मिल जाती है किन्तु बाद में उसे यह ज्ञान होता है कि वह एक चकले में आ फंसा है। मिस साइमन के यहां पन्द्रह लड़कियां हैं ओर वह उनसे वेश्यावृत्ति कराती है। यहीं उसका परिचय अमला, जुलेखा, सुजाना आदि लड़कियों से होता है और उनके सम्बन्ध से उसे यह ज्ञान होता है कि उन पर मिस साइमन द्वारा अमानुषिक अत्याचार किया जाता है और वे जीवित रूप में भी रौरव नरक का भोग कर रही हैं। वह उनके उद्धार का भरसक प्रयत्न करता है किन्तु निष्फल रहता है। वह देखता है कि पुलिस के एजेण्ट भी इस काम में मिस साइमन की सहायता करते हैं और अत्याचार का पोषण करते हैं। वहीं उसके मन में यह बात आती है कि जीवन के इस नारकीय पक्ष का अस्तित्व मिटाना होगा। वह बराबर प्रयत्न में लगा रहता है। इन्हीं दिनों मिस साइमन की जीवन–लीला समाप्त हो जाती है। अपने और यहीं के एक साथी फ्रैंक के सहयोग से वह उस चकले को 'टेलरिंग हाउस' के रूप में परिणत कर देता है और सभी लड़कियां अपने हाथों से कपड़े सी कर आत्मसम्मान–पूर्वक अपना जीवन–यापन करने के योग्य बन जाती हैं। किन्तु असामाजिक तत्त्वों का पोषण करने वाला वर्ग यह सहन नहीं कर पाते। उसे पुलिस एजेण्ट–झूठे आरोप में अपने साथ पुलिस स्टेशन ले जाते हैं। रास्ते में वह मौका पाकर भाग निकलता है।

पुलिस से भागकर कथानायक लीला नाम की स्त्री के यहां पहुंच जाता है। लीला एक अविवाहिता और धन–धान्य से समृद्ध नारी है। औपचारिक रूप में उसे वहां रसोइए की नौकरी मिल जाती है किन्तु उसके बौद्धिक स्तर और सौम्य व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लीला उसके प्रभाव में आ जाती है। धीरे–धीरे वे दोनों निकट आ जाते हैं। लीला कथानायक को पति के रूप में वरण करना चाहती है किन्तु वह इस विषय में मानसिक रूप से तैयार नहीं हो पाता। उसे जन–जीवन का व्याकुल पक्ष सदैव स्मरण आता रहता है और उसके उद्धार के लिए वह लीला की सहायता प्राप्त करना चाहता है। लीला भी इस विषय में व्यावहारिक दृष्टि से सोचती है किन्तु इधर नायक को यह संदेह होता है कि वह अपने वर्ग के संस्कारों द्वारा बुरी तरह जकड़ी हुई स्त्री है।

कथानायक मानसिक रूप से खिन्न होकर उस घर को त्याग देता है और अपने आपको एक दिन रांची में पाता है। यहीं उसका स्वामी जी से परिचय होता हैऔर रांची का मानसिक अस्पताल देखने का उसे अवसर प्राप्त होता है। एक बार फिर उसकी आखों के आगे युग–जीवन का कटु यथार्थ घूम जाता है किन्तु स्वामी जी उसे मानसिक रूप से सुस्थिर करते रहते हैं। अचानक ही कहीं से उसकी सूचना पाकर लीला कथानायक को लेने के लिए रांची आ पहुंचती है। वह उसके साथ मिलकर जन–कल्याण के कार्य करना चाहती है। यहां नायक उसकी विचारधारा से सहमत हो जाता है। लीला उसे यह स्पष्ट कर देती है कि वह जन–जीवन के पीड़ित और शोषित पक्ष का उद्धार करने के लिए अपनी समस्त संपत्ति प्रस्तुत कर देगी। कथानायक को अपने उद्देश्य की प्राप्ति हो जाती है और वह सदैव के लिए लीला को अपना लेता है।

इस प्रकार लेखक ने अपने इस कथन को सिद्ध किया है कि जिस प्रकार समुद्री जहाज पर बैठा हुआ पंछी सब तरफ से झटक कर पुनः जहाज़ पर आकर ही शरण प्राप्त करता है उसी प्रकार से कथानायक भी संसार और समाज की विसंगतियों से संघर्ष करते हुए अन्त में जिस लीला को छोड़कर वह भागा था, उसी के पास आश्रय प्राप्त करता है।

अध्याय–4

'जहाज का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा

कथावस्तु अथवा कथानक उपन्यास का अभिन्न अंग होता है । इसके अभाव में उपन्यास की कल्पना ही नहीं की जा सकती। कथावस्तु विस्तृत अथवा संक्षिप्त, काल्पनिक अथवा वास्तविक, सुसंगठित अथवा बिखरी हुई कैसी हो ? इस सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है परन्तु उपन्यास में कथावस्तु की अनिवार्यता सभी स्वीकार करते हैं। इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' एक ऐसे निराश्रित तथा असहाय व्यक्ति की व्यथा–कथा है जो नौकरी की खोज में कलकत्ता आता है और इधर–उधर भटक कर कई नौकरियां करता और छोड़ता है। अन्त में उसे लीला के पास आश्रय मिलता है और दोनों मिलकर समाज के उपेक्षित तथापीड़ित वर्ग की सेवा करने का निर्णय लेते हैं। इस उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **मौलिकता** – उपन्यास की कथावस्तु की मौलिकता से अभिप्राय कथावस्तु के उस गुण से होता है जिससे वह पुरानी अथवा बासी न लगे। पाठक को उसमें नयापन लगे। यह नयापन विषय वस्तु और रचना शैली की नवीनता से उत्पन्न होता है। 'जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने कलकत्ते जैसे महानगर में आश्रय के लिए भटकते हुए एक पढ़े–लिखे युवक के अन्तर्द्वन्द्व को समाज में व्याप्त विसंगतियों का यथार्थ अंकन करते हुए प्रस्तुत किया है। इसके लिए लेखक ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस उपन्यास की विषय वस्तु मौलिक तथा नयापन लिए हुए है।

2. **यथार्थता** – मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मानते थे। इसलिए उपन्यास की कथावस्तु वास्तविक जीवन से सम्बन्धित होनी चाहिए। 'जहाज का पंछी' एक ऐसे बेरोज़गार युवक की कहानी है जो निराश्रित तथा असहाय है। उसके माता–पिता, सम्बन्धी कोई भी नहीं है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कलकत्ता जैसे महानगर में संघर्षरत है । इन्हीं स्थितियों में उसका समाज की विभिन्न विसंगतियों जैसे वर्ग–संघर्ष, मानवीय सम्बन्धों के अवूल्यन, वेश्यावृत्ति, रिश्वत, भ्रष्टाचार, दाम्पत्य जीवन की विषमताओं आदि से साक्षात्कार होता है तो वह इनके उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हो जाता है। उपन्यासकार ने इन सभी सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ के धरातल पर चित्रण किया है। इस कारण इस उपन्यास की कथावस्तु में यथार्थता का समावेश हो गया है।

3. **कथा–संगठन** – कथा संगठन से तात्पर्य उपन्यास की मूलकथा के साथ अन्य प्रासंगिक कथाओं का जुड़ा होना तथा उनका मूल कथा में सहायक सिद्ध होना होता है। इस दृष्टि से 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु में अनेक प्रासंगिक कथा–सूत्रों और पूर्ववृतों की नियोजना की गई है, जिनमें नायक के अनेक अनुभव प्रस्तुत किए गए हैं। इन्हीं अनुभवों ने नायक को समाज की दयनीय दशा से परिचित करा कर उसे पीड़ित वर्ग के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने की प्रेरणा दी है। इसलिए ये सभी प्रासंगिक कथाएं तथा पूर्ववृत्त उपन्यास की कथावस्तु के संगठन में सहायक सिद्ध होते हैं क्योंकि इन्हीं के कारण नायक अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होता है।

4. **मनोवैज्ञातिनकता** – उपन्यास की कथावस्तु में मनोवैज्ञानिकता के आ जाने से पात्रों का चरित्र–चित्रण स्वाभाविक हो जाता है। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास में लेखक ने इस तथ्य का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। माता–पिता के स्नेह से वंचित बालक का अन्तर्मुखी हो जाना एक स्वाभाविक तथ्य है। कथानायक इसी स्थिति में बड़ा हुआ है। माता, पिता और बुआ की मृत्यु के बाद वह अनाथ हो जाता है और स्वयं ही किसी न किसी प्रकार से पढ़–लिखकर नौकरी की तलाश में दर–दर भटकता हुआ कलकत्ता आ जाता है। आत्मकथात्मक शैली में रचित इस उपन्यास में नायक का मानसिक द्वन्द्व

मनोवैज्ञानिक आधार पर चित्रित किया गया है। शारीरिक, नैतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि कारणों से मानसिक संतुलन खो देने वाले पात्रों का भी लेखक ने मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रण किया है।

5. **सरलता** – उपन्यास की कथावस्तु यदि सरल हो तो उसकी रोचकता में वृद्धि होती हैं 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु अनेक प्रासंगिक कथाओं तथा पूर्ववृत्तों के कारण जटिल–सी हो जाती है, परन्तु जहां हम यह देखते हैं कि ये समस्त प्रासंगिक कथाएं तथा पूर्ववृत्त कथानायक के जीवन के अनेक अनुभव हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि इनके माध्यम से ही मुख्य कथा की भूमिका तैयार होती है। इस प्रकार इस उपन्यास में अनेक प्रांसगिक कथाओं के आने से भी मुख्य कथा बाधित नहीं होती है तथा मुख्य कथा की सहजता बनी रहती है।

6. **रोचकता** – किसी भी उपन्यास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी कथावस्तु रोचक हो। यदि उपन्यास की कथावस्तु बोझिल अथवा गंभीर होगी तो पाठक का मन उसमें नहीं रमेगा। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु अत्यन्त रोचक है तथा पाठक की जिज्ञासा निरन्तर बनी रहती है कि आगे चलकर नायक का क्या होगा? नायक के लम्बे–लम्बे भाषण भी बोझिल नहीं लगते क्योंकि उनमें भी जीवन की वास्तविकताओं के दर्शन होते हैं। इस उपन्यास में उठाई गई भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति , शोषण वर्ग–संघर्ष आदि से सम्बन्धित समस्यायें आम आदमी के जीवन से जुड़ी हुई हैं। इसलिए इन्हें पढ़ते हुए पाठक को कथावस्तु रोचक लगने लगती है।

7. **स्वाभाविक** – एक श्रेष्ठ कथावस्तु में स्वाभाविकमता का गुण होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि कथावस्तु केवल कल्पना पर आधारित होगी तो उपन्यास अस्वाभाविक प्रतीत होगा।इसलिए लेखक को उपन्यास की कथावस्तु को जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करना होता है। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास में लेखक ने कथानायक को समाज में व्याप्त अनाचार, भ्रष्टाचार , शोषण, वर्ग संघर्ष, अज्ञान, रूढ़िवादिता आदि विसंगतियों से त्रस्त दिखाया है। वह इन विसंगतियों को दूर कर समाज के पीड़ितों और दलितों के लिए एक नए समाज का निर्माण करना चाहता है। लेखक ने नायक के माध्यम से जिस आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी समाज के निर्माण की कल्पना की है वह मात्र कल्पना न होकर देश के कर्णधारों द्वारा देश में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने की स्वाभाविक प्रक्रिया का ही एक रूप है। इसलिए इस उपन्यास की कथावस्तु को स्वाभाविक कहा जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु सहज, स्वाभाविक तथा प्रसंगानुकूल है। इसमें चित्रित समस्यायें केवल कथानायक से ही सम्बन्धित नहीं है अपितु कथानायक जैसे देश के समस्त युवकों की है, जो अपने अस्तित्व के लिए निरन्तर संघर्ष कर रहे हैं तथा समाज को बदलने का संकल्प लेकर जीवन–संघर्ष कर रहे हैं ।

अध्याय–5
'जहाज़ का पंछी' उपन्यास के नामकरण का औचित्य

संसार के बिना नाम में किसी वस्तु की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतः प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई नाम अवश्य होता है, जिससे विशिष्टता बनी रहे। साहित्यिक क्षेत्र में भी प्रत्येक रचना का नाम, उसकी अलग पहचान बनाये रखने के लिए आवश्यक होता है। उपन्यास के क्षेत्र में नामकरण का बहुत महत्त्व है। फिर भी नामकरण से सम्बन्धित विस्तृत शास्त्रीय विवेचन नहीं प्राप्त होता। हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का नामकरण सामान्यतः निम्नलिखित आधारों पर प्राप्त होता है––

1. **उपन्यास के नायक के नाम पर** – जो उपन्यास नायक प्रधान होते हैं उनका नामकरण नायक के नाम पर किया जाता है। जैसे – 'शेखर एक जीवनी' , 'जयवर्धन' आदि।

2. **उपन्यास की नायिका के नाम पर** – जो उपन्यास नायिका प्रधान होते हैं उनका नामरकण नायिका के नाम परकिया जाता है। जैसे –'सुखदा', 'निर्मला', आदि।

3. **उपन्यास के उद्देश्य अथवा मूल भाव पर आधारित**– जिन उपन्यासों का नामकरण उस उपन्यास में निहित उद्देश्य अथवा प्रतिपाद्य के आधार पर किया जाता है वे इस श्रेणी में आते हैं। जैसे – 'महाभोज', 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि' आदि।

4. **उपन्यास की घटना के आधार पर** – उपन्यासों की किसी घटना के आधार पर उपन्यास का किया गया नामकरण इस श्रेणी में आता है। जैसे – 'त्याग–पत्र', 'सिन्दूर की होती', 'गोदान', 'देशद्रोही' आदि।

5. **उपन्यास के घटनास्थल अथवा स्थान के नाम पर** – जिन उपन्यासों का नामकरण घटना स्थल विशेष के नाम पर होता है, वे इस श्रेणी में आतें हैं। जैसे– 'गोलकुण्डा का कैदी', 'झांसी की रानी', गढ़कुण्डार आदि।

6. **प्रतीकात्मक नामकरण** – इस प्रकार के नामकरण उपन्यास में व्यक्त भावों के आधार पर लाक्षणिक अथवा व्यंजनात्मक रूप में किए जाते हैं। जैसे – 'झूठा–सच', 'निरन्तर', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'जहाज़ का पंछी', 'सारा आकाश' आदि।

उपन्यास के नामकरण के लिए लेखक चाहे कोई भी पद्धति क्यों न अपनाये अपनी रचना का नामकरण करने से पूर्व उस उपन्यास के मूल–कथ्य, पात्र, उद्देश्य , मूल भाव आदि का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। नामकरण सरल, मौलिक, संक्षिप्त एवं जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला होना चाहिए। आकर्षक एवं उपयुक्त नामकरण वाली रचना पाठक एवं आलोचक को स्वयं ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं

'जहाज़ का पंछी' उपन्यास का नामकरण प्रतीकात्मक पद्धति पर रखा गया है। इस उपन्यास का कथानायक समाज में व्याप्त विभिन्न विषमताओं , विकृतियों परिस्थितियों आदि को दूर करने के लिए निरन्तर समाज से संघर्ष कर रहा हैं वह इनसे पलायन कर कहीं कुछ समय के लिए रूकता भी है परन्तु फिर इन विसंगतियों को दूर करने के लिए इन्हीं के बीच आ जाता है। यह सांसारिक विसंगतियां ही जहाज़ हैं जिनसे जूझने के लिए बार–बार कथानायक रूपी पंछी वहां आता है। उनसे भागते हुए कहीं रूकना चाहता है परन्तु उसके मन में जो इन विसंगतियों को दूर करने की भावना है। वह उसे उसी संघर्षपूर्ण वातावरण में खींच लाती है।

कथानायक एक बेरोजगार युवक है जो आजीविका की तलाश में कलकत्ता (कोलकाता) आता है। वह स्वयं कहता है ''विश्वास कीजिए, मैं केवल विवशता के कारण यहां आया हूं, किसी प्रकार की ज्ञात या अज्ञात इच्छा, या कुतूहल या जीवन की गंदगी का

ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता से प्रेरित होकर नहीं।'' अपने इस कथन के विपरीत अनके स्थानों पर नौकरी मिलने पर भी वह वहां टिकता नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत में कहीं ''जीवन की गन्दगी का ज्ञान प्राप्त''करने की उत्सुकता है। इसलिए वह बोला, करीम चाचा, भादुड़ी महाशय, मिस साइमन आदि से मिले आश्रयों को छोड़कर आगे की परिस्थितियों एवं विषमताओं का सामना करने के लिए निकल पड़ता है। यदि कथानायक को नौकरी करके आराम से जीवन व्यतीत करना होता तो वह भादुड़ी महाशय के घर गोष्ठी में अपना ज्ञान नहीं प्रदर्शित करता, करीम चाचा के कहने पर भी पहलवानी का स्थान नहीं छोड़ता और पुलिस द्वारा ले जाने पर ही 'टेलरिंग हाउस' नहीं छोड़ता।

लीला से परिचय होने से पहले वह कहीं भी टिक कर नहीं रहता है । जहां भी वह गया वहां से अनुभव प्राप्त कर आगे बढ़ता चला गया। इस भटकावों ने उसे अनेक विषम परिस्थितियों में उलझा दिया जिस कारण वह मन से चिन्तनशील परन्तु बाह्य दृष्टि से सब की उपेक्षाओं का पात्र बन जाता है। सब उस पर संदेह करते है। इसीलिए वह पुस्तक की दुकान, बगीचे में बैंच पर बैठा, जहाज के केबिन में, जेल की कोठरी में, सेठ के घर, भादुड़ी की कोठी, अस्पताल के कमरे, पहलवानों के आखाड़े आदि में संदेह और आशंका की दृष्टि से देखा जाता है। यहीं से उसमें भटकाव आ जाता है। वह फिर भटकने के लिए निकल पड़ता है किसी दूसरी मंजिल की तलाश में। इसी कारण वह कहता है– ''जिन–जिन क्षेत्रों में मैंने सच्ची लगन से काम किया, वहां मैं ठोकरें खाता ओर ठुकराया जाता रहा। तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थों को तिलांजलि देता हुआ सामाजिक राष्ट्रीय और सामूहिक हित को ध्यान में रखकर अपनी सीमित समर्थता से भरसक ईमानदारी को अपनाता हुआ विघ्नों और अवरोधों से निरन्तर लड़ता हुआ मैं जिन–जिन पथों, नए–नए मोड़ों में कदम बढ़ाता चला गया वहां मैंने सामूहिक विरोध और प्रतिरोध पाया।'' इन कटु अनुभवों , विरोधों और प्रतिरोधों से वह विचलित नहीं होता अपितु और भी अधिक उत्साह से समाज की विसंगतियों में डूबता चला जाता है जिससे वह उनकी तह तक जाकर उन्हें समाप्त कर सके।

लीला के पास आकर कथानायक को सब प्रकार की सुविधायें मिलती हैं। यहां वह अपने ज्ञान और कला का भी खुलकर प्रदर्शन करता है। यहां रहते हुए वह अनुभव करता है कि जब लाखों लोग कलकत्ता (कोलकाता) की सड़कों पर भूखे भटक रहे हैं तो उसे इस प्रकार से आराम का जीवन व्यतीत करने का क्या अधिकार है ? लीला उसे समझाती है कि समाज, देश और संसार की चिन्ता से इस कदर घुलते रहने से न समाज सुधरेगा, न देश और न संसार। केवल तुम्हारा ही स्वास्थ्य चौपट होगा। इसलिए व्यर्थ की चिन्ता छोड़कर खाओ, पिओ और सुखी रहो परन्तु वह सामाजिक कर्त्तव्यों को भुलाकर निजी सुख–सुविधाओं में डूबना नहीं चाहता है। वहां से वह रांची के मानसिक रोगियों के अस्पताल में अनेक विकृतियों को देखता–समझता है। स्वामी जी के माध्यम से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहता है परन्तु वहां लीला आ जाती है और उसे अपने साथ ले जाती है। वह उसे अपने उद्देश्य में सहायक समझ उसके साथ चला जाता है और उसका आश्रय भी स्थिर हो जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कथानायक रूपी पंछी सांसारिक विषमताओं रूपी जहाज को छोड़कर बार–बार इधर–उधर भटकता है किन्तु फिर जहाज़ के पंछी के समान उन विषमताओं से जूझने के लिए उनमें ही आ जाता है। उसका मन समाज की पीड़ा को दूर करने के लिए बार–बार सामाजिक विसंगतियों से जूझता रहता है। मानो जहाज़ का पंछी उड़कर फिर जहाज़ पर आ गया हो। इस कारण इस उपन्यास का शीर्षक 'जहाज़ का पंछी' पूर्ण रूप से सार्थक है तथा उपन्यास की मूल भावना को स्पष्ट करता है।

अध्याय–6
'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की तात्विक समीक्षा

प्रत्येक उपन्यास की रचना विभिन्न उपकरणों के माध्यम से होती है, जिन्हें शास्त्रीय शब्दों में उपन्यास के तत्त्व कहते हैं। इन तत्त्वों के पारस्परिक समुचित समन्वय से ही किसी सफल–उपन्यास की रचना संभव होती है। अधिकांश विद्वानों ने एक सफल उपन्यास के लिए कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा–शैली तथा उद्देश्य के यथायोग्य संयोजन पर अधिक बल दिया गया है। 'जहाज़ का पंछी' इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित एक ऐसा उपन्यास है जिसमें लेखक ने समाज की विभिन्न विसंगतियों को उजागर करते हुए उन पर प्रहार किया है। इस उपन्यास में व्यक्ति और समाज के संघर्ष का चित्रण अत्यन्त यथार्थ वादी ढंग से किया गया है। उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर इस उपन्यास की विवेचना हम निम्नलिखित रूप से कर सकते हैं––

1. **कथावस्तु** – कथावस्तु उपन्यास की उस सामग्री का नाम है जिसे लेखक जीवन के विस्तृत आयाम से चुनता है। जब लेखक द्वारा चुनी गई यह सामग्री पात्रों, विभिन्न क्रिया–कलापों, घटनाओं आदि द्वारा निरूपित की जाती है तो उसे कथावस्तु अथवा कथानक कहते हैं। इसमें विश्वसनीयता, प्रामाणिकता , रोचकता, उत्सुकता, कार्य–कारण सम्बन्ध निर्वाह तथा जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं को उभारने और उनका समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए। 'जहाज़ का पंछी' एक ऐसे अनाम कथानायक की कहानी है जो बेकारी से छटपटा कर कलकत्ता (कोलकाता) आ पहुंचता है किन्तु यहां भी अनेक स्थलों पर भटकता है किन्तु कहीं स्थायी आश्रय नहीं प्राप्त कर पाता। यह भटकाव उसे जीवन की विभिन्न विसंगतियों से परिचित कराते हैं जिनसे जूझने के लिए वह बार–बार मिले हुए आश्रयों को भी छोड़ देता है। उपन्यास के अन्त में लीला के पास उसे स्थायी आश्रय मिलता है तो उसे भी छोड़कर वह रांची चला जाता है जहां एक स्वामी जी की प्रेरणा से वह लीला के साथ लौट आता है क्योंकि वह भी उसके साथ मिलकर समाज के पीड़ित और शोषित वर्ग की सेवा करना चाहती है। कथावस्तु प्रारम्भ में विभिन्न घटनाओं पर आधारित है जिनके आधार पर कथानायक अनेक कटु अनुभव प्राप्त करता है जो उसे सामाजिक विसंगतियों से जूझने के लिए प्रेरित करते हैं। उपन्यास के उत्तरार्द्ध में कथानायक विभिन्न विसंगतियों का सामना करते हुए लीला के सम्पर्क में आता है और अन्ततः उसके सहायोग से अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है।

   इस प्रकार 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की कथावस्तु छोटी–छोटी मर्मस्पर्शी घटनाओं से गुंफित है जो कथानायक के जीवन को प्रभावित करती हैं। इन्हीं के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त विकृतियों तथा विसंगतियों को यथार्थ के धरातल पर उभारा है। कथावस्तु में रोचकता तथा उत्सुकता बनी रहती है। समस्त घटनाएं विश्वसनीय तथा आम जीवन से जुड़ी हुई प्रतीत होती है।

2. **पात्र और चरित्र–चरित्र** – उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द ने उपन्यास को 'मानव चरित्र का चित्र' माना है। इस कारण उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण उन पात्रों के क्रियाकलापों के माध्यम से होता है जिन्हें उपन्यासकार अपने उपन्यास में प्रस्तुत करता है। पात्रों के चरित्र–चित्रण में स्वाभाविकता एवं सजीवता होनी चाहिए। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास के प्रमुख पात्र कथानायक भगत, लीला, बेला, करीम चाचा, मिस साइमन, स्वामी जी, प्यारे, भादुड़ी महाशय, दीप्ति, फ्लोरा, फ्रैंक आदि हैं। इन सभी पात्रों को लेखक ने यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। इनका चरित्र–चरित्र घटनाओं, विवरणों, पात्रों के क्रिया–कलापों, पारस्परिक वार्तालापों आदि के माध्यम से किया गया है। कथानायक अनाथ, बेकार, पढ़ा लिखा युवक है जो नौकरी की तलाश में कलकत्ता (कोलकाता) आकर अनेक स्थानों पर काम करते हुए विभिन्न कटु अनुभवों को प्राप्त कर समाज में हो रहे इन्सान के शोषण के विरुद्ध जंग करना चाहता है। लीला एक उच्चवर्गी सुसंस्कृत किन्तु दमित वासनाओं से ग्रस्त नारी होते हुए भी अपनी समस्त सम्पत्ति शोषितों के कल्याण के लिए स्वेच्छा से दानकर कथानायक के साथ मिलकर शोषण के .विरूद्ध संघर्ष में सम्मिलित हो जाती है। बेला अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए

स्वयं को कथानायक को समर्पित करना चाहती है क्योंकि वह एक अपूर्णकाम नारी है परन्तु कथानायक उसे नहीं अपनाता है। करीम चाचा कथानायक को आश्रय देने वाले एक सहृदय व्यक्ति हैं। मिस साइमन वेश्यालय चलाती है। स्वामी जी हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति पर आस्था रखने वाली योगी हैं तथा कथानायक को जीवन–संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। लेखक ने इन तथा अन्य सभी पात्रों को जैसा उसने देखा वैसा ही चित्रित किया है, जिससे उनकी स्वाभाविकता बनी रही है। इस कारण इनमें चेतना और स्पन्दन विद्यमान हैं। ये सभी हमें अपने आस–पास के चरित्र ही लगते हैं। पात्रों को उनके सहज रूप में प्रस्तुत करने में यह उपन्यास सफल रहा है।

3. **संवाद** – संवादों को कथोपकथन भी कहते हैं। इनसे कथावस्तु को सार्थकता तथा गति प्राप्त होती है। पात्रों के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन भी संवादों के माध्यम से होता है तथा कथावस्तु में रोचकता का समावेश हो जाता है। संवाद सहज, स्वाभाविक, संक्षिप्त, पात्रानुकूल एवं सटीक होने चाहिए। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास की संवाद–योजना अत्यनत स्वाभाविक है। कुछ संवाद लम्बे–लम्बे भाषणों जैसे हो गए हैं परन्तु इनसे वक्ता के विचारों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। इन संवादों के माध्यम से मानव–मनोविज्ञान का उद्‌घाटन, वातावरण निर्माण, उद्देश्य की अभिव्यंजना, अनतर्मन की अभिव्यक्ति आदि भी होती है। लीला जब नायक को लेने रांची आती है तो उस समय उन दोनों के सवांदों से उनके अन्तर्मन की समस्त भावनायें छलक उठती हैं– ''तो क्या मै यह समझूँ कि तुमने अपना मन स्थिर कर लिया है ?'' ब्राय के चले जाने पर मैंने कहा।

–'मेरा मन अस्थिर कब था ? तुम भी कभी–कभी बड़ा अजीब प्रश्न कर बैठते हो !'' उसकी कुछ–कुछ गीली आंखें सहसा दुष्टता–भरी मुस्कान की उजली धूप में चमकने लगीं।

''मेरा मतलब यह नहीं था.....'

''तब क्या था तुम्हारा मतलब ? ''फिर वही दुष्टतापूर्ण मुस्कान उसकी आंखों में खिल गयी, जिससे मैं बहुत घबराता था।

''मैं यह पूछना चाहता था कि मेरे प्रस्ताव को तुमने पूर्णतः निश्चित रूप से स्वीकार कर लिया है ?''

''एक संशोधन के साथ।'' सहसा गम्भीर होकर लीला बोली। इन सवादों में नाटकीयता और संक्षिप्तता के साथ–साथ पात्रों की मानसिक स्थिति का भी ज्ञान हो जाता है और कथा–प्रवाह में भी गति आती है।

4. **देशकाल और वातावरण** – उपन्यास की घटनाएं जिस स्थान तथा काल विशेष में घटित होती हैं उनका यथातथ्य चित्रण देशकाल तथा वातावरण के अन्तर्गत आता है। इससे युग विशेष की जीवन–पद्धति, आचार–विचार, रहन–सहन आदि का ज्ञान होता है। 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास में देशकाल और वातावरण का चित्रण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप किया है। कथानायक कलकत्ता (कोलकाता) में आश्रय के लिए भटक रहा है। इस भटकाव की स्थिति में वह सारा कलकत्ता (कोलकाता) घूम जाता है। एक स्थान का वर्णन उसने इस प्रकार किया है–– ''इस विराट नगर की बड़ी–बड़ी सड़कों को दोनों ओर से घेरे हुए जो बड़े–बड़े भवन, शोध–श्रेणियाँ और अट्‌टालिकाएं खड़ी थीं, उनकी ईंट–ईट के भीतर जैसे मनुष्य रूपी असंख्य कीट भरे पड़े थे, पर उनमें मेरे और मरे ही जैसे निःसंबल, जीवन–संघर्ष में थके–हारे युग–युग से भटकते हुए पथिकों के लिए कहीं तिल–भी स्थान नहीं था।'' इससे कलकत्ता (कोलकाता) नगर के भव्य भवनों का परिचय मिलता है। लीला का यह कथन कि वह बापू के साथ साल भर रही है तथा विनाबा जी के भूमि–दान आन्दोलन में उनके साथ थी––तत्कालीन समय का परिचय देता है। लेखक ने वेशभूषा, गृहसज्जा, रांची के मनोरोग चिकित्सालय, मिस साइमन के वेश्यालय आदि का सजीव चित्रण करते हुए तत्कालीन वातावरण की सजीव सृष्टि की है।

5. **भाषा–शैली** – एक सफल उपन्यास की रचना में भाषा के सहज, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल प्रयोग का बहुत महत्त्व होता है। भाषायी प्रयोग की दृष्टि में 'जहाज़ का पंछी' एक सफल रचना है। इस उपन्यास में मुख्य रूप से तत्सम–प्रधान शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग किया गया है जैसे स्तब्ध, मूक, उत्कट, विराट, दृष्टि, निर्दिष्ट, मरणोन्मुख आदि, परन्तु कहीं–कहीं अंग्रेजी, उर्दू तथा देशज शब्दों का भी सहजरूप से प्रयोग प्राप्त होता है, जैसे– पार्क, टैक्सी , हाई, कान्शेन्स, किताब, हिदायत, तख्त, इत्मीनान, दुरदुराकर, खदेड़ना, फाटक, अनमनी, लोअर आदि। बंगाली और विदेशी पात्र बिगड़ी

हुई हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं तथा लीला, कथानायक, स्वामी जी आदि परिनिष्ठित भाषा का व्यवहार करते हैं। इस उपन्यास की शैली आत्मकथात्मक है। कथानायक उत्तम पुरुष में अपने जीवन के विविध प्रसंगों को प्रस्तुत करता है।

6. **उद्देश्य** – उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास का उद्देश्य मानवीय जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर करना मानते हैं। इस दृष्टि से यदि इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज़ का पंछी' पर विचार करें तो यह एक सोद्देश्य रचना कही जा सकती है। इस उपन्यास में लेखक ने एक ऐसे बेरोज़गार तथा अनाथ नवयुवक के अस्तित्व के संघर्ष की कहानी को प्रस्तुत किया है जो अपनी आशाओं, आकांक्षाओं, आर्थिक–सामाजिक सांस्कारिक सीमाओं, विभिन्न द्वन्द्वों के मध्य कोई रास्ता निकालना चाहता है। समाज में व्याप्त शोषण, रूढ़ियों, विकृतियों आदि को दूर करना चाहता है। इस सबके लिए उसे लीला का सहयोग मिलता है तो वह इसी कार्य में जुट जाता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर एक सफल रचना है। जिसमें लेखक ने व्यक्ति तथा समाज के यथार्थ जीवन और संघर्ष का चित्रण करते हुए व्यक्ति के स्थान पर समाज को प्रतिष्ठा प्रदान की है।

अध्याय–7
'जहाज़ का पंछी' उपन्यास का नायकत्व

भारतीय काव्य–शास्त्र के अनुसार किसी कथा के फल का अधिकारी और भोक्ता पुरुष–पात्र नायक कहलाता है। वह सर्वप्रमुख पुरुष–पात्र होता है। वही कथा को फल की ओर अग्रसर करता है। उसे विनीत, त्यागी, मधुर भाषी, पवित्र, लोकप्रिय, दक्ष, कुलीन, आत्म सम्मानी, शूर, तेजस्वी, युवा, स्थिरचित, सम्पन्न, उत्साही आदि अनेक गुणों से युक्त होना चाहिए आधुनिक विचारकों ने नायक में इन गुणों का होना आवश्यक नहीं माना है। आज के युग में साधारण व्यक्ति तथा दुर्गुणों से युक्त व्यक्ति को भी किसी रचना का नायक बना दिया जाता है।

'जहाज़ का पंछी' उपन्यास का नायक भी एक सामान्य व्यक्ति है। इस सम्बन्ध में उपन्यासकार का कथन है कि ''वीर नायकों की गाथा लिखने वाले उपन्यासकारों की कमी नहीं है, पर दुर्बल–स्वभाव व्यक्तियों को कथा–नायक बनाने का सौभाग्य अकेले मुझे ही प्राप्त है।'' 'जहाज़ का पंछी' उपन्यास एक ऐसे निराश्रित और असाहय युवक की कथा है जो नौकरी की खोज में कलकत्ता (कोलकाता) आता है। नौकरी की खोज में भटकते हुए उसे जीवन और समाज के जो अनुभव होते हैं, उन्हें उसने, आत्मकथात्मक शैली में , इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार उपन्यास में वर्णित प्रत्येक घटना के केन्द्र में वह वर्तमान है। उपन्यास का समस्त कथानक उसके जीवन की गति के अनुरूप ही गठित हुआ है। चितरंजन एवेन्यू के पास पहुंच कर एक विशाल भवन देखकर उसमें नौकरी पाने की आशा करना, डलहौजी स्कवायर पर एक रैस्तरां में जाना आदि घटनाएं उसकी इच्छानुसार ही घटित हो रही हैं।

कथानायक की प्रारम्भिक वेशभूषा, शक्लसूरत पॉकेटमार जैसी है। इसी सन्देह में वह पुलिस के हाथों पड़ता है। पुलिस वालों से पिटकर अस्पताल पहुंच जाता है, यहां से भी वह निकाल दिया जाता है। वह फिर पकड़ा जाता है और हवालात में बंद कर दिया जाता है। इन घटनाओं से वह पुलिस और अस्पताल में व्याप्त अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार को उजागर करता है। यहीं वह करीम चाचा के सम्पर्क में आता है और उनके निर्देशन में व्यायाम करके अपना स्वास्थ्य सुधारता है। इसके बाद भादुड़ी महाशय तथा प्यारे के यहां नौकरी करते हुए उसे विभिन्न अनुभव होते हैं। प्यारे के यहां बेला का अपने प्रति आकर्षण उसे वहां से भागने के लिए विवश कर देता है। यहां से निकल कर उसे मिस़ साइमिन के घर काम मिलता है, जो वेश्यालय चलाती है। वह वेश्यावृत्ति में संलग्न लड़कियों का उद्धार करना चाहता है और फ्रैंक के सहयोग से 'टेलरिंग हाउस' खोलने में सफल हो जाता है। यहां भी कुछ लोग उसे पुलिस को सौंपना चाहता हैं पर वह वहां से भागकर लीला के यहां पहुंच जाता है। यहां उसे स्थायी आश्रय मिल जाता है परन्तु लीला को उच्चवर्गीय संस्कारों से युक्त समझकर उसे छोड़कर कर रांची चला जाता है। लीला अपने मुनीम से उसके बारे में जानकर उसे लेने रांची आती है और वह स्वामी जी के समझाने तथा यह जानकार कि लीला अपना सब कुछ पीड़ितों और शोषितों के उद्धार के लिए समर्पित कर रही है, उसके साथ कलकत्ता (कोलकाता) आ जाता है।

इस सम्पूर्ण कथा सूत्र में अनेक प्रासंगिक कथा–सूत्रों और पूर्ववृत्तों की नियोजना की गई है। प्रत्येक प्रासंगिक कथा–सूत्र और पूर्ववृत्त कथा नायक के स्वतंत्र अनुभव है और ये सभी अनुभव एक विशिष्ट प्रकार के हैं। प्रत्येक अनुभव से उसकी यह धारणा बनती चली जाती है कि सबके भीतर विकलता ओर विच्छिन्नता छाई हुई है। आज का मानव न स्वयं अपने को समझ पा रहा है, न दूसरों को समझना चाहता है। प्रत्येक संपन्न व्यक्ति बाहर में भरा–पूरा रहने पर भी, अपने निकट संकीर्ण अहम् में डूबा रहने के कारण, अपने भीतर किसी एक अनंत हाहाकार भरे अस्पष्ट अभाव का अनुभव कर रहा है और प्रत्येक अचिंकन व्यक्ति सारे जीवन को ही अभावमय, अर्थहीन और अनावश्यक मानकर जहां तक सामर्थ्य है उसके भार को किसी तरह ढोता चला जा रहा है। बीच वाले व्यक्ति प्रतिक्षण जीवन और जीवन और मृत्यु के झूले में झूलते हुए परस्पर विरोधी परिस्थितियों के क्रूर परिहास के शिकार बन रहे हैं। सर्वत्र भय, संशय, अनास्था और अविश्वास का बोल–बाला है सब कहीं झूठ और ढोंग का राज्य छाया हुआ है। सब

ओर जीवन अरक्षित और अव्यवस्थित है। सबके मन के अणु बिखरकर छितरा गए हैं और विस्फोटक तत्त्वों से भरे हुए हैं। सब लोग आत्मरक्षा के एक अंध और शुतुर–मुर्गीय प्रवृत्ति से प्रेरित होकर सामूहिक जीवन के मृत ढांचे को सचेत प्रयत्नों से विनष्ट करे उसके स्थान पर नए जीवन से घड़कता हुआ एक नया ही ढांचा खड़ा करने की बात किसी को नहीं सूझ रही हैं

इस प्रकार 'जहाज़ का पंछी' की प्रत्येक घटना के केन्द्र में कथानायक है तथा उसी को लेकर उपन्यास का सारा ताना–बाना बुना गया है। उपन्यास को प्रस्तुत भी इस प्रकार से किया गया है कि यह कथानायक की आत्मकथा लगती है। कथानायक कलकत्ता (कोलकाता) में भटकते हुए जीवन के विभिन्न अनुभव प्राप्त करता है। उसे समाज में व्याप्त वर्ग–संषर्ष, उत्पीड़न, रूढ़ियों के बंधन, बेरोज़गारी, वेश्यावृत्ति आदि विसंगतियां व्यथित कर देती हैं। वह इन सबका उन्मूलन करना चाहता है। उसकी विपन्नता तथा दीन–हीन दशा उसे यह सब नहीं करने देती परन्तु साधन–सम्पन्न लीला जब अपनी समस्त धन–सम्पत्ति इस कार्य के लिए समर्पित कर उसका साथ देने के लिए तैयार हो जाती है तो उसे अपना लक्ष्य प्राप्त होता दिखाई देता है।

अतः 'जहाज़ का पंछी' का कथानायक ही इस उपन्यास का नायक है जिसका लेखक ने कोई नाम नहीं दिया है। वह कलकत्ता (कोलकाता) की विशाल नगरी में निराश्रय भटकता हुआ पंछी है जो अन्त में लीला से सच्चा प्यार और संवेदना प्राप्त कर उसी के पास आश्रय लेता है। इस प्रकार लीला के समर्पण से कथानायक को फल की प्राप्ति होती है। इसलिए भी उपन्यास का नायक बनने का अधिकारी वही है। समस्त कथानक उसको ही केन्द्र में रखकर चला है। घटनाओं के घात–प्रतिघात भी उसी के कारण हैं तथा अन्य पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन भी उसके कारण ही हुआ है। इन समस्त विशेषताओं के कारण कथानायक ही उस उपन्यास का नायक कहा जाएगा।

अध्याय–8
'जहाज का पंछी' उपन्यास में निहित मनोवैज्ञानिकता

इलाचन्द्र जोशी मनोविज्ञान के पण्डित माने जाते हैं। इन पर फ्रॉयड, एडलर युग आदि मनोविश्लेषकों का विशेष प्रभाव है। इस कारण इनकी रचनाओं में व्यक्ति के अहं, काम–कुंठा, मनोविकारों आदि का विस्तृत चित्रण प्राप्त होता है। आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति बहुत अकेला तथा अस्थिर होता जा रहा है। उसकी इसी अतृप्ति, असन्तुष्टि, आकुलता आदि को इनके उपन्यासों में अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। 'जहाज का पंछी' भी एक मनोवैज्ञानिकता पर आधारित उपन्यास है, जिसमें लेखक ने व्यक्ति और समाज के संघर्ष का चित्रण मनोविश्लेषणात्मक रूप से किया है।

'जहाज का पंछी' उपन्यास का कथा–नायक जब आठ–दस महीने का ही था तभी उसकी मां का देहान्त हो गया । पालने करने वाली बुआ भी उसे ढाई–तीन–साल पालकर चल बसी। उसके पिता एक साधारण स्कूल के अध्यापक थे। अपने पुत्र के साथ न तो वे कभी हंसकर बात करते थे और न प्रसन्न ही रहते थे। सात–आठ साल के बाद पिता की भी छाया कथानायक के सिर पर से उठ गयी। और तब वह तन की भी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दर–दर की ठोकरें खाता हुआ भटकने लगा। उसे किसी का भी आन्तरिक स्नेह नहीं मिला। इस कारण उसमें हीनत्व का भाव पैदा हो जाता है।

कुशाग्र बुद्धि नायक ने पढ़ना–लिखना भी सीखा और अपनी अर्द्धचेतना के सहारे संगीत कला का ज्ञान भी प्राप्त किया। उसे सितार बजाना आता है। बांसुरी बजाने में वह निपुण है। अंग्रेज़ी बोलने की क्षमता उसमें है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का वह मर्मज्ञ है। बांग्ला और हिन्दी साहित्य का उसे पर्याप्त ज्ञान है। यह सब उसने कब और कहां सीखा, इसका कुछ भी कहीं वर्णन नहीं है। और कहां से छिटक कर वह कलकत्ता (कोलकात) पहुंच गया, इसका भी कहीं वर्णन नहीं है। उपन्यास–जगत् का प्रवेश–द्वार खोलने पर पाठक उसे कलकत्ता (कोलकाता) महानगरी के नरक में भटकने के लिए विवश पाता है। सभ्य संसार की इस फैशन की रंगीनी के आवरण के भीतर मानव–जगत् के मर्म में छिपे हुए इस कोढ़ केन्द्र में कथानायक केवल विवशता के कारण आता है।

कलकत्ता (कोलकाता) के स्वार्थी समाज में बिना पैसे के परिचय के वह भटकने लगता है। परिस्थितियों के प्रहार से उसका तन–मन क्षीण होने लगता है। उसकी हुलिया को देखकर लोग उसे गुंडा या गिरहकट समझने लगते हैं। उसमें आत्महीनता की जमी भावना उभरने लगती है। वह लोगों की जेबों की ओर अनजाने की एक नज़र डालना नहीं भूलता है। कथा–नायक जहां भी जाता है, केवल घरेलू काम ही करना पसन्द करता है। उसे किसी नारी का स्नेह नहीं मिलता। चौका–बर्तन करने तथा रोटी बनाने आदि घरेलू काम करके नारी की तरह और नारी के पास रहने के पीछे नारी संग प्राप्ति की अचेतन प्रेरणा भी हो सकती है। करीम चाचा के यहां अपना स्वास्थ्य सुधार कर तथा एक अध्यापक का पवित्र कार्य करके भी वह कहीं किसी कारखाने या आफिस में काम पाने की कोशिश नहीं करता है।

आत्मविश्वास के अभाव में वह किसी के अविश्वास को नहीं सह पाता है। करीम चाचा के अखाड़े में कुछ लोगों के अविश्वास का पात्र बनते ही वह वहां की सारी सुख–सुविधा त्यागकर फुटपाथ पर आ जाता है। खेमी को बचाना उसका धर्म था, फिर भी वह उन बिगड़े आदर्शवादियों का सामना न करके पलायन करना ही पसन्द करता है। प्यारे की आर्थिक प्रगति के लिए वह लाण्ड्री चलाता है, कीड़ों–मकोड़ों के बीच सोता है, यौन कुंठित बेला के उदार प्रेम–दान से भी कतराता है, फिर भी वह प्यारे की नज़रों से गिर जाता है।

कथानायक आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र मेंमिली पराजय को बौद्धिक और नैतिक क्षेत्र में विजय पाने के प्रयत्न में भुलाता है। उसमें उच्च कोटि की नैतिकता ओर जीने की प्रबल लालासा है। कठिन परिस्थितियों में भी वह अनैतिकता, असत्य और अधर्म का सहारा नहीं लेता है। वह सबके प्रति निःस्वार्थ भाव से उदार बना रहता है। चाहे समाज–परित्यक्ता पीड़ित युवती हो, चाहे रेसकोर्स में हारा–थका मूर्ख धूर्त हो, चाहे रास्ते में विलाप करके भिक्षा मांगने वाली छलिया दुखियारी हो, वह सबको यथाशक्ति सहयोग देता चलता है। वह अपने जीवन–रस को और कठिनाई से प्राप्त पैसे को बिना किसी प्रतिदान की आशा में लुटाता जाता है। रवीन्द्रनाथ टैगौर के व्यक्तित्व के विषय में लम्बा भाषण देना, राष्ट्रीय और अनतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आदर्शवादी विचार व्यक्त करना, संगीत ओर साहित्य के क्षेत्र में विशेष ज्ञान का परिचय देना आदि अहम् की रक्षा के लिए किये गये क्षतिपूरक प्रयत्न ही हैं। उसमें सम्पूर्तीकरण की यह प्रक्रिया अचेतन रूप में चलती रहती है।

कथानायक को लीला से प्रेम और पैसा सब कुछ मिलता है। यहां कथानायक के अन्दर मनोग्रस्तता रोग के कुछ लक्षाण दिखाई पड़ते हैं। वह रात–भर सोचता है और सिगरेट फूंका करता है। वह अपने मस्तिष्क की तीव्रता से सोचने की प्रक्रिया पर नियन्त्रण नहीं कर पाता है। वह लीला के सामने उसके पैसे से कल्याणकारी कार्य करने का प्रस्ताव रखता है। यहां भी वह धीरता, प्रसन्नता तथा विश्वास का परिचय नहीं देता है। लीला के मौन रहने पर अधीर, उदास और अविश्वासी बनकर चुपके से खिसक जाता है। स्वास्थ्य लाभ के लिए सक्रिय अचेतन मन की प्रेरणा से वह अपने को रांची के पागलखाने में पाता है। स्वामी जी से हर बात की सलाह लेने भी कथा–नायक के आत्मविश्वास की कमी का ही परिचायक है। लीला जब उसे अपनी सारी सम्पत्ति दे देती है तब भी वह स्वयं निर्णय नहीं ले पाता है, स्वामी जी से सलाह लेने उनकी कुटिया पर दौड़ा जाता है।

कथानायक समाज की बुराई की बात करता है किन्तु उसे दूर करने का कोई उपाय नहीं सोच पाता है। मिस साइमन के वेश्यालय को 'टेलरिंग हाउस' में बदलना उसका एक प्रशंसनीय कार्य है। लेकिन कथानायक अन्य जिन व्यक्तियों के बीच में भ्रमण करता है, उनको सुधारने अथवा उनके बीच नवजागृति पैदा करने का कोई उपाय न तो सोच पाता है और न ही कर पाता है। पतित समाज के उन्नयन और विकास के लिए जिस स्वस्थ मन की अपेक्षा होती है, वह उसमें नहीं है। कथानायक के अंतःकरण में विद्रोह है किन्तु वह कुण्ठाजन्य क्षोभ मात्र है। उसकी विद्रोही भावना का समाजीकरण नहीं हुआ है। वह केवल स्वप्न–द्रष्टा और आदर्शवादी विचारक है तथा मनोग्रस्तता रोग से पीड़ित व्यक्ति है।

कथानायक के अतिरिकत लेखक ने लीला को एक ऐसी नारी के रूप में चित्रित किया है जो उच्चवर्गीय सुसंस्कृत नारी है। परन्तु वह भी दमित वासनाओं से ग्रस्त है। जब वह कथानायक से मिलती है तो उसके कितने ही कुचले हुए अरमान उफन उठते हैं। बेला विधवा है–वह अपूर्णकाम नारी है। वह कथानायक के सम्मुख अपनी चिरदमित वासनाओं का और अधिक दमन न करे स्वयं को उसे समर्पित करना चाहती है। मिस साइमिन देह व्यापार की सरगना है। उसकी, क्रूरता, निर्दयता, राक्षसी मनोवृत्ति उसके पेशे के अनुरूप है। स्वामी जी धर्म के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार से व्यथित हैं। मिस्टर ब्राउन को उनके जीवन की असमर्थता ने अनेक कुण्ठाओं से युक्त कर दिया है।

इस प्रकार 'जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने मुख्य रूप से कथानायक के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का यथार्थ अंकन किया है। अन्य पात्र भी किसी न किसी मनोव्यथा से पीड़ित हैं। इन समस्त मनोवृत्तियों के यथार्थ अंकन के कारण इस उपन्यास कोमनोविश्लेषणात्मक उपन्यास कर सकते हैं।

अध्याय–9
'जहाज का पंछी' उपन्यास का उद्देश्य अथवा समस्या–चित्रण

साहित्य–रचना बिना उद्देश्य के सम्भाव नहीं है। जो लोग यह घोषित करते हैं कि 'कला' कला के लिए है और उसका कोई उद्देश्य होना आवश्यक नहीं है, वे कला को जीवन से काटने का अपराध करते हैं। जीवन से कट कर साहित्य अथवा कला निरर्थक हो जाती है। साहित्य रचना समाज में, समाज के लिए, प्राणियों द्वारा की जाती है। साहित्य जीवन दर्पण भी होता है और दीपक भी। साहित्य में जीवन का चित्रण भी रहता है और उसे सुधारने का संकेत भी। साहित्य जीवन के यथार्थ को प्रदर्शित करता है तथा उसके सामने आदर्श भी प्रस्तुत करता है। काव्य का लक्ष्य यदि आनन्द प्राप्ति है तो उपन्यास से भी आनन्द प्राप्त होता है। उपन्यास से मनोरंजन, ज्ञान, वृत्तियों के सुधार तथा उपदेश का काम लिया जा सकता है। प्रेमचन्द से पहले उपन्यास प्रायः मनोरंजन को मुख्य लक्ष्य बनाकर लिखे जाते थे, इसीलिए उस समय तिलस्मी, ऐयारी तथा जासूसी उपन्यास अधिक थे। मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को सामाजिक समस्याओं से जोड़ा और साथ ही उसमें कलात्मकता द्वारा मनोरंजन का अंश भी बनाए रखा। प्रेमचन्द ने उपन्यास का उद्देश्य 'मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर करना' माना है। वे उपन्यास को 'मानव जीवन की व्याख्या' भी मानते थे।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यदि इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' की समीक्षा करें तो ज्ञात होगा कि यह एक सोद्देश्य रचना है जिसमें लेखक ने एक अनाम, बेरोज़गार युवक को अपने अस्तित्व के लिए निरन्तर संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंचने की कथा कह कर आज के युवावर्ग को निराश न होकर सदा संघर्षशील रहने की प्रेरणा दी है। कथानायक कलकत्ता (कोलकाता) में अपने लिए नौकरी की तलाश में जिन कटु परिस्थितियों से गुज़रता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है उन सब का यथार्थ चित्रण करना ही लेखक का प्रमुख उद्देश्य हैं इनमें से प्रमुख विसंगतियां निम्नलिखित हैं––

1. **वेश्यावृत्ति की समस्या** – 'जहाज का पंछी' उपन्यास में वेश्यावृत्ति को एक मुख्य समस्या के रूप में चित्रित किया गया है। मिस साइमन के यहां नौकरी करते हुए कथानायक अमला, जुलेखा, सुखिया, फ्लोरा जैसी नास्यिों को असामाजिक तत्त्वों के हाथ में पड़कर वेश्यावृत्ति करने के लिए बाध्य देखकर व्यथित हो उठता है। वह लीला से बीस लाख रुपए का दान इसलिए करवाना चाहता है जिससे वह एक ऐसा संस्थान बना सके जो पृथ्वी तल से वेश्यावृत्ति का नामोनिशान मिटाने में सक्षम हों उसे उनकी दयनीय दशा सदा बेचैन करती रहती है। लीला को इनसे सम्बन्धित अपने अनुभव सुनाते हुए उसकी आंखें भर आती हैं।

2. **भ्रष्टाचार की समस्या** – लेखक ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी पर भी इस उपन्यास में व्यंग्य किया है। व्यवस्था के रखवाले स्वयं अव्यवस्था फैलाने लगते हैं। कथानायक को रूप–रेखा तथा वेश–भूषा से एक पॉकेटमार समझकर पुलिस का सिपाही थाने ले जाते हुए मार्ग में ही उससे कहता है कि माल–टाल जो छिपाए हो चुपचाप मेरे हवाले कर दो नहीं तो थाने में मार पड़ेगी। थाने का दीवान उसकी जेब से दस आने से अधिक पैसे न पाकर असंतुष्ट हो जाता है और हाथ लगे पैसों को अपनी जेब के हवाले कर देता है। एक सी॰ आई॰ डी॰ व्यक्ति कथानायक की जेब से सारे पैसे निकाल लेना चाहता है और न देने पर थाने में बन्द करने की धमकी देता है।

3. **दाम्पत्य–जीवन की विसंगतियां** – लेखक ने रांची के मनोरोग चिकित्सालय में उपचाराधीन मिस पवार और बीना को ऐसी नारियों के रूप में चित्रित किया है जो दाम्पत्य जीवन की विषमताओं से टूट कर नारकीय जीवन व्यतीत कर रही है। मिस पवार अभुक्त काम तथा बीना मन चाहा वर न मिलने से विक्षिप्त हो गयी है। लीला की कुण्ठा का कारण भी

उसका अभी तक विवाह न होना है। बेला भी काम की तृप्ति न हो सकने के कारण कथानायक के प्रति समर्पित होना चाहती थी। इस प्रकार लेखक ने इस समस्या को व्यापकता के साथ उभारा है।

4. **वर्ग–संघर्ष** – लेखक ने समाज में व्याप्त वर्ग–संघर्ष की समस्या को कथानायक–सेठ, कथानायक–भादुड़ी महाशय आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कथानायक की मान्यता है कि 'आज मनुष्य और मनुष्य के , व्यक्ति और व्यक्ति के, व्यक्ति ओर समूह के बीच पारस्परिक स्वार्थों का जो घात–प्रतिघात और संघर्ष देख रहा हूँ .....उससे मेरे मन का ऊपरी स्तर एक अजीब कुहरे से ढक गया है जो अपनी नमी से मेरी आत्मा को जैसे गलाता जा रहा है। वह इसी वर्ग–संघर्ष को समाप्त करने के लिए समाज के पीड़ित तथ दलित वर्ग की सहायता करने के लिए लीला का सहयोग मांगता है और उसके साथ मिलकर इसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है।

5. **अविश्वास की भावना** – आज का जीवन इतना अधिक भौतिकतावादी हो गया है कि कोई भी किसी पर विश्वास नहीं करता है। आज साफ–सुथरे , बने–ठने धूर्त व्यक्ति पर लोग विश्वास कर लेते हैं। परन्तु मैले–कुचैले वस्त्रों में दयनीय अवस्था के व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता है। इसी कारण मलीन वेशभूषा वाले कथानायक को पॉकेट मार समझ लिया जाता है। पुलिस उसे दसनम्बरी, पुस्तक विक्रेता गिरहकट, अग्रेज चोर और ठग कहता है। उसकी रूप–रेखा के कारण ही सब उसके प्रति अविश्वास व्यक्त करते हैं।उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिलती। इसके विपरीत जब करीम चाचा के पास रहते हुए उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है और वह ठीक–ठाक वस्त्र पहनने लगता है तो उसे नौकरी भी मिल जाती है और उसे लोगों का विश्वास भी प्राप्त हो जाता है।

6. **धार्मिक तथा सामाजिक रूढ़ियाँ** – लेखक ने समाज में व्याप्त विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए ढोंगी साधु–संन्यासियों से सावधान रहने के लिए कहा है जो अपने स्वार्थ के लिए भोली–भाली जनता को बहकाते हैं और समाज को गलत रास्ता दिखाते हैं। इसलिए रांची में स्वामी जी कथानायक को सावधान करते हुए कहते हैं कि आज भी भारत की अधिकांश जनता अपने परम्परागत विश्वासों और रूढ़ियों के बंधन को स्वीकार करती हुई प्रगति के विपरीत मार्ग पर चल रही है। धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त होता जा रहा है तथा आड़म्बरों की प्रधानता हो रही है।

इस प्रकार 'जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने सामान्य जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं पर विचार करते हुए माना है कि इन सभी कारणों में समाज में सर्वत्र भय, संशय, अनास्था और अविश्वास का बोलबाला हैं कथानायक इन सब समस्याओं से जूझना चाहता है परन्तु उसकी अपनी सीमाएं हैं। वह जानता है कि 'व्यर्थ की चिन्ताओं में पड़कर घुलते रहने से सचमुच किसी का कोई लाभ नहीं हो सकता क्योंकि उसके पास क्षमता कुछ नहीं है परन्तु प्रबल अनुभूति है। इसलिए वह अनुभव करता है कि 'आज आवश्यकता है कठोर यथार्थवादी उपायों और संगठित प्रयत्नों द्वारा जन–जीवन को व्यवस्थित और संतुलित करने की, सामूहिक विषमताओं को दूर करने की, आज तक की सभी सामाजिक , राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में मूलभूत सुधार द्वारा नई मानवता को एक नई समचेतना वस्था की उपलब्धि की ओर ले जाने की' और इसके लिए वह लीला जैसी समृद्ध नारी से उसकी सम्पत्ति दान करवा कर उसके साथ मिलकर समाज के पीड़ितों की सेवा करने के लिए निकल पड़ता है। इसे ही इस उपन्यास का उद्देश्य माना जा सकता है जिसे लेखक ने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कथानायक के इस कथन द्वारा लेखक ने यह संदेश देश के समस्त युवा वर्ग को देश के पीड़ितो और शोषितों की दयनीय दशा सुधारने के लिए दिया है।

अध्याय–10
'जहाज का पंछी' उपन्यास की भाषा–शैली

भावों को सुन्दरतम ढंग से प्रस्तुत करने का प्रमुख साधन भाषा है। जिस साहित्यकार के पास जितना अधिक समृद्ध भाषा–भण्डार होगा वह उतनी ही सहजता तथा मार्मिकता से अपने भावों को व्यक्त कर पायेगा। इलाचन्द्र जोशी को भाषा पर पूर्ण अधिकार है। इन्होंने मुख्य रूप से मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की रचना की है जिसके लिए इन्होंने तत्सम प्रधान शब्दावली से युक्त भाषा का प्रमुखता से प्रयोग किया है जिसमें प्रसंग तथा पात्रों के अनुकूल अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, देशज, बंगला आदि भाषाओं के शब्दों का भी सहज रूप में प्रयोग प्राप्त होता है। 'जहाज का पंछी' उपन्यास की भाषा–शैली की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

(1) **सरलता** –– इलाचन्द्र जोशी ने मुख्य रूप से तत्सम प्रधान शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग किया है किन्तु वर्णनात्मक प्रसंगों में इनकी भाषा अत्यन्त सरल, सहज, स्वाभाविक एवं सुबोध हो जाती है। जिसमें बोलचाल के विदेशी शब्दों का सहजता से प्रयोग देखा जा सकता है। जैसे–''सामने से एक टैक्सी खाली जा रही थी। उस आदमी ने टैक्सी रुकवाई। हम दोनों उस पर बैठ गए। रास्ते भर वह आदमी मुझ से एक शब्द भी न बोला। ईडन गार्डन्स के फाटक पर जब टैक्सी रुकी तब मैं उतर गया। वह आदमी बैठा ही रहा। उतरते ही मैंने परम प्रसन्न भाव से उसकी ओर हाथ जोड़ते हुए कहा, ''अच्छा, नमस्ते ! जल्दी ही।''

प्रस्तुत पंक्तियों में सामान्य बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग देखा जा सकता है।

(2) **अलंकृत काव्यात्मक भाषा** – इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में प्रकृति–चित्रण करते हुए तथा भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति करते समय अलंकृत काव्यमय भाषा का प्रयोग किया है। इन स्थलों पर इनकी भाषा कल्पना के पंखों पर उड़ती हुई बिम्बात्मक हो जाती है। जैसे––''सूरज पच्छिम में डूबने की तैयारियां कर रहा था। पच्छिम में कुछ देर से घिरे हुए गाढ़े काले बादल जलकर एकदम लाल हो गये थे, जैसे कोयलों के आकाश–व्यापी गोदाम में आग लग गई हो और सब कोयले सहासा एक साथ दहक उठे हों।''

''कटु यथार्थ के स्टीम रोलर द्वारा कुचला हुआ आज का साधारण मनुष्य न बंगाली है न पंजाबी– वह केवल मनुष्य है।'' इन स्थलों पर भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि हो जाती है।

(3) **पात्रानुकूलता** – 'जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने स्थिति, स्थान तथा व्यक्ति के स्तर पर मनोभावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इससे पात्रों का व्यक्तित्व उजागर हो जाता है। इस उपन्यास में लीला और कथानायक के अतिरिक्त पुलिस, वेश्या, घरेलू नौकर, डॉक्टर, पहलवान, धोबी, हिन्दू, मुस्लिम, अंग्रेज़ आदि अनेक पात्र हैं। लेखक ने इन सबकी स्थिति के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। जैसे सिपाही का यह कथन––''यह लीजिए दीवन जी, यह जहाजी आसामी है, पर मुर्गीवाले की पॉकेट में छेद है।'' इसी प्रकार से एक वेश्या दूसरी से कहती है– ''आखिर बुला ही लाई न अपने भतारों को। क्या कर लिया उन्होंने ? सत्यानासी, कीड़े पड़ेगे कीड़े। अगर गिद्ध और चील एक दिन बीच सड़क में तेरी लाश न नीचे तो कहना कि सुखिया झूठ बोलती थी, हां।'' बांग्ला महिला का यह कथन 'ऐखो न ओके पाठिये दाओ।' उसकी स्वाभाविकता को बनाये रखता है।

(4) **मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग** – भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से सरलता एवं प्रवाहमयता उत्पन्न हो जाती है। जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने यत्र–तत्र ऐसे अनेक प्रयोग किए हैं। जैसे आंखें चार होना, उम्मीद पर पानी फेरना, हवाई किले बांधना, 'दुइ न होहिं एक संग भुआलू, हंसब ठइाई फुलाडब गालू– नक्शा बदल जाना, गोड़ गिरना, सिटपिटा जाना आदि ।

(5) **चित्रात्मकता** – इलाचन्द्र जोशी रेखाचित्र अंकित करने में निपुण है। जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने शब्दों के माध्यम से स्थिति अथवा पात्र विशेष को सजीव कर दिया है। जैसे वेश्याओं की दशा का वर्णन करते हुए लेखक का यह कथन–'' एक भी लड़की का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। रात में बिजली के प्रकाश में रूज़ और पाउडर की रंगीनी के कारण उनके चमकते हुए चमड़े के भीतर उनकी ठठरियाँ किसी हद तक भले ही छिप जाती हों, पर रात–भर के जागरण के बाद जब सुबह कभी उनमें से किसी का चेहरा दिखाई देता था, तब भरी जवानी में भी निःसत्त्व मुख और जर्जर शरीर का वह दृश्य देखने पर क्षणभर के लिए सचमुच यह भ्रम होने लगता था कि यह कौन प्रेतनी किस श्मशान में राशनाभाव होने के कारण यहां चली आई है।''

(6) **भाषागत नवीनता** – 'जहाज का पंछी' उपन्यास में लेखक ने भाषा से सम्बन्धित कुछ नवीन प्रयोग भी किए हैं। जैसे दुबले–पतले व्यक्ति के लिए लेखक का 'दिया सलाई–मार्का आदमी' शब्द का प्रयोग करना। इसी प्रकार से ''कौन प्रेतनी किस श्मशान से राशनाभाव होने के कारण यहां चली आई'' वाक्य में राशन और अभाव शब्द मिलाकर राशनाभाव शब्द बनाया गया है जो अंग्रेज़ी और हिन्दी शब्दों का मिला–जुला रूप है। इसी प्रकार से लेखक ने 'युग–फैशन', 'आतंक के स्पंज', 'महादम्भ का अणुबम फुलाना', 'प्रधान स्विच ऑफ़' होना आदि शब्दों का सहजता से प्रयोग किया है।

(7) **शैली** – शैली उपन्यास की अनुभूत विषय वस्तु को सजाने का वह ढंग है, जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं भावपूर्ण बनाता है। 'जहाज का पंछी' उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में रचा गया है। कथानायक उत्तम पुरुष में अपने जीवन के विविध प्रसंगों को कहता चला जाता है। यह उसकी आप बीती है, जिसमें वह जगबीती भी जोड़ता चला जाता है। कथानायक पाठकों को अपने विषय में परिचित कराता है तथा समस्त प्रासंगिक कथाओं तथा पूर्ववृत्तों की नियोजना में भी वह विद्यमान है। कहीं–कहीं पूर्वदीप्ति शैली, वर्णनात्मक एवं संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि 'जहाज का पंछी' उपन्यास की भाषा अपने समंजित रूप में एक समान स्तर पर चलती है और उसमें तत्सम प्रधान शब्दों की अधिकता है। भाषा का सहज प्रवाह उसे काव्यमय बना देता है। पात्रों की स्थिति के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया गया है। पुलिस, वेश्याएँ, करीम चाचा, अंग्रेज़, बंगाली आदि अपनी विशेषताओं के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। कथानायक, लीला , स्वामी जी आदि ने परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग किया है। लेखक ने मुख्य रूप से आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है जिसमें कहीं–कहीं विचारात्मक, संवादात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक तथा व्याख्यात्मक शैलियों के भी दर्शन हो जाते हैं। भाषा–शैली की दृष्टि से 'जहाज का पंछी' एक सफल उपन्यास है।

अध्याय–11
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर नायक का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' उपन्यास आत्म कथात्मक शैली में रचित मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास के कथानायक के नाम से सम्बन्धित मात्र इतना संकेत मिलता है कि वह पुलिस को अपना नाम भगत बताता है। इस उपन्यास की समस्त कथावस्तु का वह केन्द्र है, इसलिए वह इस उपन्यास का नायक है। कथानायक के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **व्यक्तित्व** – कथानायक सत्ताईस वर्ष का नवयुवक है। उपन्यास के प्रारम्भ में उसका व्यक्तित्व अत्यन्त दयनीय है। उसके सिर के बाल अस्त–व्यस्त, घनी घास से भरी क्यारियों जैसे दो गुलमुच्छे तथा एक हफ्ते से न कटाये हुए दाढ़ी के छितराए कड़े बाल, क्षय के रोगियों के समान मुरझाया हुआ रक्तहीन दुबला चेहरा, धंसी हुई आंखें, गढ़े हुए गाल, मैला कुर्त्ता और मैली धोती पहने हुए वह पेशेवर गुण्डा अथवा गिरहकर लगता है। करीम चाचा की व्यायामशाला में कसरत करने से उसका शरीर भर गया था तथा व्यक्तित्व निखर गया था। वह अनाथ है। जब वह आठ–दस महीने का था तो उसकी मां का देहान्त हो गया था। उसकी बुआ ने उसे पाला। वह भी ढाई–तीन साल बाद चल बसी थी। सात–आठ साल बाद उसके पिता का भी देहान्त हो गया था। वह इधर–उधर भटकता हुआ ही बड़ा हुआ था।

2. **विद्वान** – कथानायक अनाथ होते हुए भी कुशाग्र बुद्धि का था। इसने पढ़ना–लिखना सीखा। बंगला और हिन्दी साहित्य का इसे पर्याप्त ज्ञान था । वह फर्राटे से अंग्रेज़ी बोलता है। उसे संगीत कला का भी ज्ञान है। वह सितार और बांसुरी बजाना जानता है। भादुड़ी महाशय के घर रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व पर भाषण देना उसकी विद्वता का उदाहरण है। लीला के घर पर सितार बजाता तथा उसके कहने पर संगीत सम्मेलनों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करता उसके निपुण संगीतकार होने के उदाहरण हैं।

3. **बेरोज़गार** – उपन्यास के प्रारम्भ में कथानायक कोलकाता में रोज़गार की तलाश में आता है। वह स्वयं कहता है कि, ''विश्वास मानिए, मैं केवल विवशता के कारण यहां आया हूँ, किसी प्रकार की ज्ञात या अज्ञात इच्छा, कौतूहल या जीवन की गन्दगी का ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता से प्रेरित होकर नहीं.....मैं निरन्तर इस चेष्टा में रहा कि कहीं किसी प्रकार की नौकरी मिल जाए और दो रोटियों का ठिकाना लग जाए।'' इसी प्रकार में वह कोलकाता में भटकता है तथा करीम चाचा, प्यारे, मिस साइमन, भादुड़ी महाशय आदि के पास नौकरी करते हुए जीवन के विभिन्न अनुभव प्राप्त करता है। अन्त में लीला के पास उसे आश्रय मिलता है।

4. **समझौतावादी** – कथानायक प्रत्येक स्थिति से समझौता करता चलता है। सात–आठ साल की आयु में ही वह अनाथ होकर इधर–उधर भटकता है। स्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल कर पढ़ता–लिखता है और सत्ताईस वर्ष की आयु में कोलकाता किसी स्थायी नौकरी की तलाश में आता है। यहां आकर मिस साइमन के वेश्यालय मं रसोइए का काम करता है, प्यारे की लाण्ड्री चलाता है, करीम चाचा के घर रहते हुए पहलवानी सीखता है, लीला के घर रह कर संगीत सम्मेलनों में भाग लेता है और प्रत्येक स्थिति के अनुरूप स्वयं को ढाल लेता है। यह सब उसके समझौतावादी होने के ही उदाहरण हैं।

5. **सन्देहास्पद** – कथानायक की वेशभूषा, रूप–रेखा आदि के कारण प्रत्येक व्यक्ति उसे संदेह की दृष्टि से देखता है।

उसकी दयनीय दशा के कारण लोग उसे चोर, गिरहकर आदि समझने लगते हैं। फुटपाथ, पार्क के बैंच, पुस्तक की दुकान, जहाज के कैबिन, अस्पताल आदि सभी स्थानों पर उसका बाह्य व्यक्तित्व उसे संदेह के घेरे में डाल देता है। लिबर्टी नामक जहाज में घूमते हुए एक कैबिन के अन्दर जब एक गोरा व्यक्ति उसे निरपराध ही पकड़ लेता है तो वह उसे धिक्कारता है कि उस जैसे पाश्चात्य देशवासी लिबर्टी के नाम पर धोखा देते हैं तथा अपने सामने दूसरों को तुच्छ समझते हैं। कथानायक की सफाई का उस गौर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह उसे कम्युनिस्ट कह कर पुलिस के हवाले कर देता है।

6. **चरित्रवान** – कथानायक नौकरी की तलाश में कोलकाता आता है जहां वह कई लोगों के यहां काम करता है। काम करते हुए उसके सम्पर्क में कई नारियां आती हैं, जो उससे किसी–न–किसी रूप से प्रभावित होता है। बेला और लीला उसके आगे समर्पण करने के लिए तत्पर रहती हैं, लेकिन वह स्वयं को नियन्त्रण में रखता है। जो उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। वह नारी के प्रति श्रद्धा के भाव रखता है। वह उनकी कमज़ोरियों का लाभ नहीं उठाता है। वह उनका उद्धार करने के लिए तत्पर रहता है। उसकी कमज़ोरियों का नाजायज़ लाभ नहीं उठाता है।

7. **पलायनवादी** – कथानायक अपने पेट के लिए प्रत्येक स्थिति से समझौता करता है। वह संघर्षमय जीवन व्यतीत करता है। वह जहां भी आश्रय लेता है उसके सम्मुख कोई न कोई समस्या आ जाती है। वह जिनके साथ रहता है वह उन्हें समस्या से निपटने के लिए सुझाव देता है और चला जाता है। पीछे मुड़कर नहीं देखता कि उसके सुझावों से किसी को कितना लाभ हुआ। वह हर छोटी–बड़ी बात भी अपने ऊपर लेकर वहां से चल देता है जैसे पहलवानों के यहां उसे कोई कुछ नहीं कहता है, बेला के व्यवहार से क्षुब्ध होकर वहां से चल देता है। इस प्रकार वह अपने सन्मुख आने वाली छोटी–बड़ी समस्याओं से घबराकर प्रत्येक स्थान से पलायन करता रहता है।

8. **दयालुता** – कथानायक के मन में दूसरों के प्रति करुणा है। अस्पताल से निकलते हुए एक डॉक्टर उस परदया करते हुए दस रुपए देता है जिसमें से पांच रुपए वह वह वहीं एक अधेड़ रोगिणी को दे देता है। पहलवान के यहां से निकलकर वे रेसकोर्स में जाता है जहां एक आदमी अपने सारे रुपए हार जाने पर रोता है तो उसे वह तीस रुपए देता है। वहीं एक भिखारिन के दो रुपए खो जाने पर उसे चार रुपए दे देता है। वह एक उच्च वर्गीय नारी लीला को अपनी आधी सम्पत्ति गरीबों के उद्धार में व्यय करने को कहता है। वह दलितों की निम्न दशा के लिए परेशान रहता है तथा उनकी समस्याओं को दूर करने के उपाय सोचता रहता है। इस प्रकार वह किसी की भी दयनीय दशा देखकर उसकी सहायता के लिए तैयार हो जाता है।

9. **दार्शनिक** – कथानायक आरम्भ में अपनी वेशभूषा के कारण ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं लगता है लेकिन जैसे–जैसे उसे जानने का अवसर मिलता है तो उसकी विद्वता का पता चलता है। वह युगों से द्रौपदी के चीर की तरह फैले हुए भारत माता के धूल–भरे आंचल को लेकर दुःखी है। जिस प्रकार युद्ध के समय से भारत माता जीवित होते हुए शव रूप में है उसी प्रकार आज स्वतन्त्रता के बाद भी उसका शोषित रूप बना हुआ है। उसकी सन्तान मूढ़, अशिक्षित, निर्धन और निःसंबल बनी हुई है। वह आज के नेताओं की वास्तविकता को प्रकट करता है। जिनके स्वार्थों के कारण सारी मानवता खून के आंसू रो रही है। वह जीवन के यथार्थ का वर्णन करता है। समाज का दलित वर्ग किस प्राकर अपना जीवन कीड़ों की तरह व्यतीत करता है। यह देखकर वह उनके उद्धार के लिए कुछ करना चाहता है। वह जीवन को संगीत से जोड़ता है। उसका मानना है कि अलौकिक आनन्द को संगीत में डूबकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

10. **प्रकृति–प्रेमी** – कथानायक प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी भी है। वह प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन बड़े मनोहारी ढंग से करता है। वर्षाकाल में विश्व को प्राण–दान देने वाले रस–भरे मेघ, श्रदकाल में वर्षा से धुली और निखली अश्रु–तरल उज्ज्वल प्रभात, सुनहरी सन्ध्याएं और चांदनी से नहाई रातें, बसन्त में मिट्टी को तोड़कर–फोड़कर अनेक रूपों में पल्लवित और पुष्पित होती है जिन्हें देखकर उसकी चेतना महाचेतना में घुल जाती है। हिमालय की शोभा, गंगा के तट, देवदारू से ढके पहाड़ उस अनिर्वचनीय आनन्द–प्रदान करते हैं। इससे पता चला है कि वह प्राकृतिक के बहुत समीप है। उसके प्रकृति वर्णन ऐसे ही मनमोहक हैं।

11. **भाग्य–विहीन** – कथानायक जन्म से ही भाग्य–विहीन है। उसे बचपन में मां का प्यार नहीं मिलता है तथा सात–आठ वर्ष की आयु में पिता भी मर जाता है। वह अनाथ होकर इधर–उधर भटकते हुए बड़ा होता है। जगह–जगह नौकरी करते हुए वह कई लोगों के सम्पर्क में आता है तथा स्नेह तथा सम्मान पाता है लेकिन सबका प्यार अस्थायी होता है। जो उसे थोड़े समय के लिए मिलता है वह फिर किसी विशेष घटना के कारण समाप्त हो जाता है। लीला के प्यार में स्थायित्व मिलता है लेकिन वहां भी वह अपनी सोच के कारण भाग जाता है।

12. **असफल व्यक्ति** – कथानायक की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता है क्योंकि वह व्यवहारिक नहीं है। वह संघर्ष के यथार्थ और कठोर जीवन से बार–बार भागता है। अवसर आने पर लम्बे–लम्बे सैद्धान्तिक भाषण देता है। जीवन में सफल होने के लिए सदैव व्यावहारिकता ही काम आती है जिसका उसमें अभाव है।

13. उपन्यासकार ने कथानायक के चरित्र में युग के इतने आयामों को बांधकर रखता है कि, उसका व्यक्तित्व एक अलौकिक आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। वह जीवन की प्रत्यके स्थिति का सामना करता है। दलित एवं कुण्ठित नारियों के उत्थान के लिए सजग रहता है। समस्त जीवन को नई राह दिखाता है। उसके नेत्रों के समक्ष युग–विश्व का सम्पूर्ण चित्र है जिसका वह विश्लेषण अपने समस्त बुद्धिबल से करता है। अन्त में वह लीला के साथ मिल कर दलितों के उद्धार में लगकर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

अध्याय–12
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर लीला का चरित्र–चित्रण

'इलाचन्द्र जोशी' द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' आत्मकथात्मक शैली में रचित मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है। कथा नायक के सम्पर्क में कई नारियां आती हैं लेकिन लीला नायक के मन पर अपनी छाप छोड़ती है तथा नायक के भटकते कदमों को स्थायित्व प्रदान करती है। इस कारण लीला इस उपन्यास की नायिका कही जा सकती है। लीला के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **व्यक्तित्व** – जीवन का व्यक्तित्व पहली नजर में कोई विशेष प्रभाव डालने वाला नहीं है। वह तीस वर्ष की अविवाहित उच्च वर्ग से सम्बन्धित नारी है। उसका सांवला रंग, दुबला–पतला शरीर तथा फुर्तीली चाल थी। उसकी आंखों में विशेष आकर्षण था, जिसे भूलाया नहीं जा सकता था। लीला जब नायक के सम्पर्क में आती है तो उसका सौन्दर्य निखर जाता है। वह ऊपर से अधिक सम्पन्न, आश्वस्त और सन्तुष्ट दिखने पर भी अन्दर से बहुत ही अस्त–व्यस्त, विपन्न और कुण्ठित है।

2. **समाज–सेविका** – लीला तीस वर्ष की आयु पार कर चुकी है लेकिन लखपति होने के बावजूद भी शारीरिक रूप से आकर्षक न होने के कारण, उसका विवाह नहीं हुआ है। इसलिए वह अनेक सांस्कृतिक सामाजिक और साहित्यिक कार्यों में स्वयं को व्यस्त रखती है। उसने बापू जी के साथ रहकर हरिजन आश्रमों में काम किया है। विनोबा जी के साथ भूमि–दान सम्बन्धी आन्दोलन में काम किया है। आजकल वह स्वयं ही तीन–चार संस्थाओं का संचालन कर रही है। नायक के सम्पर्क में आने पर जब उसे विभिन्न सामाजिक वैषम्यों, बाधाओं और अव्यवस्थाओं का ज्ञात होता है तो वह दलितों से सच्ची सहानुभूति प्रकट करती है तथा उनके उद्धार के लिए अपनी चालीस लाख की सम्पत्ति का दान करती है।

3. **मानसिक तृप्ति** – लीला मानसिक रूप से कुंठित नारी है। उसकी कुंठा का कारण उसकी शारीरिक असुन्दरता के कारण उसका विवाह का न होना है। इस कारण वह अपनी कोमल भावनाओं को दबाते रहती है जिससे उसके व्यक्तित्व में एक अभाव बन जाता है। उस अभाव को वह दूसरे कार्यों में व्यस्त रहकर पूरा करती है। लेकिन जब वह नायक के सम्पर्क में आती है तो उसकी कोमल भावनाएं जागृत होती है। इन भावनाओं को वह नायक के समक्ष स्वीकार भी करती है। वह नायक को शारीरिक ही नहीं मानसिक रूप से चाहने लगती है और वह नायक के चिन्तन को अपना चिन्तन मानकर उसका साथ निभाने में मानसिक तृप्ति प्राप्त करती है।

4. **एकान्तवासिनी** – लेखक ने लीला के परिवार के विषय में कुछ नहीं बताया है। वह अकेली रहती है। उसके कुछ मित्र हैं जिन्हें वह अपने कार्यक्षेत्र तक सीमित रखती है। नायक के सम्पर्क में आने से पूर्व वह अपने आप को सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों में व्यस्त रखती है। उसका कार्य क्षेत्र एवं अनुभव क्षेत्र सीमित थे।

5. **सरसता का अभाव** – लीला के जीवन में सरसता का अभाव है। क्योंकि उसके जीवन में अब तक कोई रोमांचक क्षण नहीं आए थे। नायक भी आरम्भ में उससे प्रभावित नहीं होता है लेकिन लीला अपने स्नेहमय व्यवहार, स्निग्ध आचरण और सहज भाव के बल पर उसे बांधकर रखने का प्रयत्न करती है। नायक भी उसके वार्तालाप में मिलने वाले माधुर्य के मोह को छोड़ नहीं पाता है।

6. **अद्‌भुत सौन्दर्य** – लीला अपनी शारीरिक असुन्दता को दूसरों के समक्ष स्वीकारे जाने पर कुण्ठाग्रस्त रहती है। जिससे उसका आन्तरिक सौन्दर्य दब जाता है। नायक के सम्पर्क में आने पर उसमें नारी के सहज स्वाभाविक गुणों में निखार आ

जाता है। वह अपने हृदय और मानस में उठने वाले नाना द्वन्द्वों को गोपन करने में समर्थ है, जिसके कारण उसके सूक्ष्म दोषों की सहज रूप से रक्षा होती है। इससे उसके व्यक्तित्व का ऐसा सौम्य रूप प्रकट होता है नायक को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो सका है। एक स्थान पर नायक कहता है ''सारे शृंगार में न तनिक आडम्बर था, न कुरुचि, न शील का अभाव था, न संयम की कमी।'' कुल मिलाकर उसका सारा व्यक्तित्व आज नहीं के बराबर परिवर्तन के कारण एक अनिंद्या शोभा के रूप में निखर कर उठा था। देख–रेख कर मेरी श्रद्धा बढ़ती चली जाती थी। अपनी सहजता एवं सौम्यता ने ही उसके अनाकर्षक रूप में आकर्षक बना दिया था।

7. **विदुषी** – लीला कथानायक के समान बहुत पढ़ी–लिखी तो नहीं है फिर भी उसके विचार काफी सुलझे हुए हैं वह अनेक विषयों में अपना निर्विवाद मत प्रस्तुत करती है। उसने शान्ति निकेतन में रहकर शिक्षा प्राप्त की है। उस समय गुरुदेव जीवित थे। वह कला, संगीत में निपुण है। वह कई सांस्कृतिक कला केन्द्र से जुड़ी हुई है। वह नायक की इस बात का विरोध करती है कि संगीत, कला आदि के क्षेत्र यथार्थ जीवन को मिट्टी से उत्पन्न नहीं है। वह मानती है कि कला का क्षेत्र यथार्थ के संघर्ष और सामान्य जीवन से कुछ ऊपर अवस्थित है। अपनी विद्वता के बल पर ही वह नायक को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होती है।

8. **मनोवैज्ञानिक दृष्टि** – लीला में आदमी को पहचानने की मनोवैज्ञानिक दृष्टि है।नायक आरम्भ में अपना परिचय रसोइए के रूप में करवाता है लेकिन लीला उसके बात करने के ढंग से उसकी योग्यता का अनुमान लगाकर नौकरी देती हैं। कथानायक को उसके घर रहते काफी समय हो जाता है तो वह लीला को बिना बताए भागने की सोचता है इतने में लीला आ जाती है और कहती है –''आखिर आपको मैंने पकड़ ही लिया न। आप तो भागना चाहते थे।'' ऐसी ही कई घटनाएं है जिससे लीला नायक के मन की बात जान लेती है।

9. **सरल एवं सहज** – लीला का स्वभाव सरल एवं सहज है। वह नायक से प्रथम साक्षात्कार से ही मालकिन होते हुए भी उससे बड़ा सरल व्यवहार करती है। उसे अपने सामने बैठकर खाना खिलाती है। कभी–कभी नायक की किसी बात से आहत भी होती है तो कुछ क्षण नाराज रहकर सहज हो उठती है। वह अपने सरल और सहज स्वभाव से ही नायक को अपनी ओर आकर्षित करती है तथा अपने साथ बांधने में सफल होती है।

10. **करुणामयी** – लीला का स्वभाव करुणामय है। वह उच्च वर्ग से सम्बन्धित होते हुए भी सादा जीवन व्यतीत करती है। वह दलितों तथा निम्न वर्ग की नारियों के उत्थान में अपना योगदान देती है। वह छुआ–छूत में विश्वास नहीं करती है। क्योंकि उसने बापू जी के साथ हरिजन आश्रमों में भी काम किया है। वह नायक के कहने पर अपनी चालीस लाख की सम्पत्ति दलितों एवं नारियों के उत्थान में देने को तैयार हो जाती है। नायक के साथ रहकर वह उसके दलितों के प्रति विचारों से प्रभावित होती है तथा उसका हृदय उनके प्रति करुणा से भर जाता है।

11. **भावुक** – लीला भावुक स्वभाव की भी है। जब वह नायक के जीवन के संघर्ष की तमाम घटनाओं के बारे में जानती है तो भावुक हो उछकी है तथा रोने लगती है। वह उस समय नायक से कहती है, ''मुझे भी अपने ही लोगों के साथ जानो इससे अधिक इस समय मैं और कुछ नहीं कह सकती।'' वह नायक को देवता रूप में पूजने लगती है तथा उसके समक्ष अपने प्यार को व्यक्त करती है। वह उसके साथ मिलकर जीवन व्यतीत करना चाहती है।

12. **व्यावहारिक** – व्यावहारिकता उसके चरित्र की एक ऐसी विशेषता है जो उसे पूर्ण नारी बनाती है। वह जानती है कि विश्व मात्रा सिद्धान्तों के सहारे नहीं चल रहा यहां व्यावहारिकता की आवश्यकता है। सिद्धांत और व्यवहार इन दोनों के संयोग से ही किसी कार्य में पूर्णता आ सकती है। नायक इसे उसका दुर्बल पक्ष समझता है किन्तु स्वयं बाद में अपनी भूल में संशोधन करता है। इसी व्यावहारिकता के कारण वह नायक को रांची से लाने में सफल होती है।

लीला का उपन्यास में प्रार्दुभाव उपन्यास के उत्तरार्द्ध में होता है। जिससे उसके चरित्र को उभरने में सफलता नहीं मिली है। फिर भी नायक के साथ रहते हुए उसके बारे में जानने को जो मिला है उससे पता चलता है कि लीला आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हुए भी सरल, सहज, भावुक तथा करुणामयी नारी थी। वह अपने समाज के युवकों द्वारा शारीरिक असुन्दरता के कारण अस्वीकार जाती थी वही नायक के साथ रहकर उसका आन्तरिक सौन्दर्य उभरकर सामने आता है जिससे बाहरी सुन्दरता भी प्रकट होने लगती है। लीला का व्यक्तित्व ही उपन्यास में नायक के भटकते कदमों को स्थायित्व प्रदान करता है। वह नायक को उसकी लक्ष्य पूर्ति में सहायक सिद्ध होती है।

अध्याय–13
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर करीम चाचा का चरित्र–चित्रण

लाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' में करीम चाचा का आगमन थोड़े समय के लिए होता है। उसमें वे अपना प्रभाव छोड़ते हैं। नायक का करीम चाचा से परिचय उस समय होता है जब वह कोलकाता की सड़कों पर भूखा–प्यासा भटक रहा था। करीम चाचा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **व्यक्तित्व** – करीम चाचा लगभग सत्तर वर्ष के हैं। उनके बाल आधे से ज्यादा पक चुके हैं। उनका चेहरा शान्त और सौम्य है। जहां वे रहते हैं वह पहलवानों की बस्ती है। करीम चाचा के व्यक्तित्व से वहां का वातावरण बिल्कुल मेल नहीं खाता है। वे अकेले रहते हैं। पहलवानों का सरदार उन्हें अपने बाप की तरह मानता है।

2. **अनुभवी** – करीम चाचा ने दुनिया को देखा और परखा है। उनका अनुभव क्षेत्र भी बहुत विशाल है। स्वयं उन्हीं के शब्दों में 'इन आंखों ने बहुत कुछ देखा, अभी न जाने क्या–क्या देखना बाकी है।' वह नायक को अपने अनुभव से परख लेते हैं कि यह आदमी पहलवान सरदार की लड़की को हिन्दी पढ़ाने के लिए ठीक है। उनके अनुभव के अनुसार पहले के समय की अपेक्षा आज की दुनिया अत्यधिक असुरक्षित, अव्यवस्थित और पतन के मार्ग की ओर अग्रसर है। इसलिए वे आधुनिकता को उचित नहीं मानते हैं।

3. **दयावान** – करीम चाचा कथानक को नौकरी दिलवाते हैं। वे उसके खाते–रहने की व्यवस्था करते है। जब कथानायक उनके पास आता है तो उसके कपड़े बहुत गन्दे होते हैं वे उसे अपने पास से पहनने के लिए कपड़े देते हैं। कथानायक की दयनीय दशा देखकर उनके मन में कथानायक के प्रति उत्पन्न करुणा उनके दयावान होने का ही उदाहरण है।

4. **व्यवहार–कुशल** – करीम चाचा व्यवहार–कुशल हैं। वे अपने व्यवहार के कारण पहलवानों के सरदार तथा अन्य लोगों से आदर प्राप्त करते हैं। सरदार उनसे बिना पूछे कोई कार्य नहीं करता है। वहां के झगड़े निपटाने में उनकी राय अवश्य ली जाती है, जिसे आखिरी फैसला माना जाता है। नायक भी उनके व्यवहार से प्रभावित होता है।

5. **पाक–कला में निपुण** – करीम चाचा के चरित्र की एक प्रमुख विशेषता है कि वे पाक कला में निपुण हैं। वे निरामिश एवं सामिष दोनों ही प्रकार के भोजन तैयार कर लेते हैं। पाक–कला सम्बन्धी छोटी–से – छोटी वस्तु का उन्हें पूरा ज्ञान है। कथानायक भी इनसे इस कला को सीखने के लिए उनका शिष्य बन जाता है। वे उसे पाक–कला सम्बन्धी बारीक से बारीक बात को पूरी तरह से खोलकर समझाते हैं। इनसे सीखकर कथानायक रसोइये का कार्य भी करता है।

6. **प्रेरणादायक** – करीम चाचा नायक के कमजोर स्वास्थ्य को देखकर उसे व्यायाम करने की प्रेरणा देते हैं। उनके अनुसार स्वास्थ्य एक अनुपम दौलत है। वे मानते हैं कि 'ठीक तन्दुरुस्ती हजार नयामत।' सेहत ठीक रहेगी तो कम–से–कम तबीयत के साथ जी ले सकोगे। मुसीबतें तो लगी रहती हैं। उन्हें झेलता, उनका मुकाबला करने, उनसे लड़कर आगे बढ़ते रहने ही में तो जिन्दगी का असली मजा है। जब नायक करीम चाचा के पास से जाने की बात करता है तो वे उसे रोकते हैं। लेकिन जब वह नहीं रुकता तो चाचा उसे आगे बढ़ने की सलाह देते हैं। जिससे वह जिन्दगी को सही ढंग से जी सके। इस प्रकार वे सदा सबके लिए प्रेरणा के स्रोत बने रहते हैं।

7. **ईमानदार** – करीम चाचा अपनी बस्ती के लोगों के प्रति ईमानदार हैं। जब नायक उनसे वहां के पहलवानों के व्यवहार में आए परिवर्तन की बात करता है तो वे उसे उसका वहम कहते हैं तथा उनका ही पक्ष लेते हैं उनके अनुसार शरीफों की अपेक्षा गुण्डे बदमाश में ज्यादा ईमानदारी है। इस प्रकार उनसे शिकायत करके नायक स्वयं ही अपराधी सिद्ध हो जाता है।

करीम चाचा का चरित्र बड़े ही निश्छल रूप में उपन्यास में प्रकट हुआ है। वे सत्यवादी, सहानुभूति, दयावान, व्यवहार–कुशल, पाक–कला में निपुण अनुभवी एवं प्रेरणादायक हैं। वे अपने इन गुणों के कारण एक प्रौढ़ के रूप में सामने आते हैं तथा अपना चिरस्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। वे सदा सबका भला चाहते हैं।

अध्याय–14
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर स्वामी जी का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' में स्वामी जी का चरित्र बिल्कुल अन्तिम पृष्ठों में आता है और नायक पर अपना प्रभाव छोड़ता है। अपने विचारों से स्वामी जी नायक के भटकते मन और कदमों को सही दिशा देते हैं। स्वामी जी के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं––

1. **परिचय** – स्वामी जी के पिता जी मध्य प्रदेश की एक काफी बड़ी रियासत के मालिक थे। वे अपने माता–पिता के इकलौते पुत्र थे। पिता के मरने के बाद वे विलासिता में डूब गए। उन्हें शीघ्र ही अपनी गलती का आभास हुआ। जब उन्हें उनके चचेरे भाई ने जहर देकर मारना चाहा तो वे सब कुछ त्याग कर वैरागी हो गए और हरिद्वार आ गए।

2. **व्यक्तित्व** – स्वामी जी असाधारण व्यक्तित्व के मालिक थे। उन्होंने गेरुए वस्त्र धारण किए हुए थे। देखने में सुशिक्षित संन्यासी लगते थे। उनकी आयु चालीस–पैंतालीस साल की थी। गौर वर्ण, स्वस्थ ललाट चमकता रहता था, सिर और दाढ़ी एकदम काले और घुंघराले थे। उनकी सुन्दर और भावपूर्ण आंखों में स्निग्ध शान्त शोभा झलक रही थी। नायक बिना किसी परिचय का स्वामी जी के बात करने पर मन ही मन झुंझलाता है पर ऊपर से प्रकट नहीं होने देता क्योंकि वह उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है।

3. **वैराग्य की भावना** – स्वामी का सम्बन्ध सामन्ती परिवार से था। उन्होंने किसानों और दलितों पर होने वाले अत्याचारों के विषय में सुन रखा था। जिससे उनके मन में दुःख, ग्लानि तथा विद्रोह की भावना उत्पन्न होने लगी। वे अपने नौकरों से दादा–भाई जैसा व्यवहार करते थे। उन पर विलासिता के साधन भी ज्यादा देर तक अपना प्रभाव नहीं जमा सके। चचेरे भाई द्वारा उन पर हमला करने की घटना से उनका मन सब चीजों से उठ गया तथा वे सब कुछ छोड़कर हरिद्वार आ गए जहां उन्होंने वैराग्य की दीक्षा ली। इस प्रकार वैराग्य उनके संस्कार में था।

4. **भारतीय सांस्कृतिक के उत्तराधिकारी** – स्वामी जी को जिन्होंने दीक्षा दी उन्होंने उन्हें भारतीय सांस्कृतिक परम्परा सम्बन्धी विषयों में पारंगत बना डाला। उन्होंने आश्रम की समुचित व्यवस्था के लिए, अपने मरने के बाद, स्वामी जी को उत्तराधिकारी बना दिया। स्वामी जी ने आश्रम में रहने वाले शिष्यों की उचित देख–रेख के उचित प्रबन्ध किए। वहां आने वाले शिष्यों को भारतीय सांस्कृतिक की शिक्षा दी।

5. **विज्ञापन बाजी से घृणा** – स्वामी जी के आश्रम में एक पण्डित थे, वे हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति में अपना मत रखते थे। वे उसका जोर–शोर से प्रचार करते थे, जिससे लोग पण्डित की ओर आकर्षित हुए। कई लोगों ने स्वामी जी से भी अनपे विचारों का प्रचार करने के लिए कहा लेकिन वे तैयार नहीं हुए। उनके अनुसार अखबार इस सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य को पूर्ण रूप से नहीं निभाते अपने स्वार्थ से प्रेरित कुछ प्रभावशाली व्यक्ति इन अखबारों को अपनी मुट्ठी में भर लेते हैं और प्रसिद्धि प्राप्त कर देश के नेता बन जाते हैं। इस प्रकार समाचार पत्रों द्वारा प्रचारित् सिद्धि से उन्हें घृणा हो जाती है। फलतः वे मौन सेवा व्रत धारण कर लेते हैं।

6. **क्षमाशील** – स्वामी जी के चरित्र की विशेषता उनका क्षमाशील होना भी है। जब दो नायक को अपने विषय में बता रहे थे उन्होंने एक स्थान पर बताया कि उनके चचेरे भाई ने विरासत का मालिक बनने के लिए उन्हें विष देकर मारने का प्रयास किया। लेकिन वे अपने विश्वासी नौकर के कारण बच गए। जब उन्हें अपने चचेरे भाई की इस हरकत का ज्ञान हुआ तो उन्होंने उसे हृदय से क्षमा कर दिया और सब कुछ उसके लिए छोड़कर चुपचाप वहां से भाग आए।

इससे स्पष्ट होता है कि साधारण वृत्तियों का आदमी इस अपराध के लिए कभी क्षमा नहीं करता लेकिन स्वामी जी ने उसे क्षमा ही नहीं किया अपितु अपनी तरफ से सच्चा प्यार देने का प्रयत्न किया। वह उसकी क्षमाशीलता के कारण ही हुआ।

7. **प्रतिद्वन्द्वियों के प्रति आदर** – स्वामी जी सिर्फ अपनों को ही नहीं अपने विरोधियों को भी आदर देते थे। जब स्वामी जी नायक को अपने बारे में बता रहे थे तो नए अध्यापक जिसने आश्रम में आकर सब कुछ अपनी मुट्ठी में कर लिया और सम्पूर्ण आश्रम के कर्त्ता–धर्त्ता बन गए उनके लिए भी आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे 'जिनका' , 'उनका', 'उन्होंने', 'नए स्वामी जी' आदि। यह स्वभाविक है कि एक असाधारण व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है कि जिस व्यक्ति से कटु अनुभव हुए हो और भौतिक पतन का कारण भी बना है। उसके लिए आदर की दृष्टि रखना इससे स्वामी जी की महानता तथा उदारता का पता चलता है।

8. **कर्मठ और उद्यमी** – स्वामी जी महान कर्मठ और उद्यमी होते हुए भी स्वयं को समाज की उपयोगिता की दृष्टि से परखते हैं वे अपना मूल्यांकन करते हैं न कि समाज को इस बात के लिए बाध्य करते हैं कि उनके महत्त्व को परखा जाए। उनके अनुसार ' जब मैंने हिन्दु धर्म के पुनरुद्धार के उद्देश्य से स्वामी जी और सेठ का अपूर्व सम्मिलित ओर सहयोग देखा तब उस आश्रम में अपनी कोई उपयोगिता न देखकर एक दिन चुपचाप वहां से चल दिया।' सम्भवतः ऐसे व्यक्ति बहुत ही कम होंगे जो अपने आप को संयमित बनाकर अपने विरोधियों के लिए अपना स्थान चुपचाप छोड़ देते हैं।

9. **हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण** – स्वामी जी का हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति अपना अलग दृष्टिकोण है। उनके अनुसार भारत की जनता ही नहीं, नेता और विद्वान लोग भी अभी तक सदियों से चिपक कर बंधी–बंधाई परम्परा का पालन कर रहे हैं। वे हिन्दू धर्म को साम्प्रदायिक बनाने के विरोधी हैं क्योंकि इससे भोली–भाली जनता अपने हित में कुछ नहीं सोचती। वे अन्धविश्वास में फंस जाते हैं। उनके अनुसार इस युग में ''प्रगतिवादी किन्तु आस्तिक ओर समृद्ध विचारों के पल्लवन की आवश्यकता है'' जिससे कि इस देश के युग–युगों के सभी बन्धनों को काटा जा सके और जनता को प्रगति की राह दिखाई जा सके।

10. **मानसिक रूप से पीड़ित** – स्वामी जी स्वामी को धर्म के निरन्तर पतनशील स्वरूप से मानसिक पीड़ा का अनुभव होता है। जब उन्होंने देखा कि पहले तो अपने स्वार्थ से प्रेरित कुछ व्यक्ति प्रसिद्धि के लिए धर्म की आड़ लेते हैं और धर्म के प्रचार से प्राप्त इस प्रसिद्धि को बाद में राजनीतिक प्रभाव की वृद्धि के लिए उपयोग में लाते हैं। यह उन्हे उचित नहीं प्रतीत होता। इस प्रकार की बुराइयों को देखते हुए उनका मानस उद्वेलित हो उठता है । उनके मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और अन्ततः वे मानसिक असंतुलन के शिकार बन जाते हैं।

11. **देश–प्रेम** – स्वामी जी के विचारों से उनका देश के प्रति प्रेम व्यक्त होता है। उनके अनुसार 'देश की अन्धविश्वासी जनता जरा सूझ–बूझ से काम ले तो देश की काया बदल सकती है।' उनकी समझ में नहीं आता कि एक विशिष्ट दिन लाखों आदमी गंगा स्नान करके किस प्रकार पुण्य लाभ लेती है। यदि मनुष्य के इस प्रकार के कार्यों में व्यय किए गए व्यर्थ श्रम को याद किसी उपकारक योजना से संलग्न कर दिया जाए तो राष्ट्र का स्वरूप एकदम परिवर्तित हो सकता है।

अतः कह सकते है कि स्वामी जी का चरित्र उपन्यास में अन्तिम पृष्ठों में आकर भी अपने व्यक्तित्व के कारण सब पर अपना प्रभाव छोड़ता है। आज के युग में स्वामी जी जैसे विचारकों की आवश्यकता है जो देश की नई प्रगति की राह पर अग्रसर कर सकें, लेकिन स्वार्थ प्रेरित , भ्रष्ट व्यक्तियों की कुमंत्रणाओं के कारण ऐसे लोग समाज से अलग हो जाते हैं और समाज, धर्म और संस्कृति और जनता को नवीन प्रकाश प्राप्त नहीं हो पाता। स्वामी जी हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के व्यापक स्वरूप पर विश्वास रखने वाले योगी हैं। अपने विचारों में वे प्रगतिवादी, क्रांतिकारी और रूढ़ि विध्वंसक के रूप में प्रकट हुए हैं। स्वामी जी न चरित्र और व्यक्तित्व दोनों ही दृष्टि से एक युग मनीषी के रूप में प्रकट हुए हैं।

अध्याय–15
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर बेला का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' में बेला को एक ऐसी नारी के रूप में चित्रित किया गया है जो परिस्थितियों के वशीभूत होकर अपूर्ण काम कर रह जाती है। बेला प्यारे नाम के धोबी की पुत्री है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है।––

1. **परिचय** – बेला एक विधवा युवती है। उसका विवाह पांच वर्ष की आयु में ही हो गया था। चौदह वर्ष की आयु में उसे ससुराल जाना पड़ा। तीन वर्ष बाद उसके पति की मृत्यु हो गई।

2. **व्यक्तित्व** – बेला आकर्षक व्यक्तित्व की सांवले रंग, कजरारी आंखें, कपाल के नीचे तक पत्तियों के रूप में संवारे गए बालों वाली, कपाल के केन्द्र में अंगारे के समान दहकती चमकीली बिंदी लगाने वाली युवती थी। वह कानों में लाला फूलनुमा कर्णाभूषण पहनती थी। उसकी चंचल चितवन थी। वह साड़ी पहनती थी।

3. **अध्ययनशीला** – बेला को पढ़ने–लिखने का बहुत शौक था। अपने घर के आप–पास की लड़कियों को स्कूल जाते देख उसने भी पढ़ने की जिद की थी। वह आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी जब उसे ससुराल जाना पड़ा था। वह अंग्रेजी के शब्द बोल लेती हैं कथानायक को वह कहती है 'कहिए मिस्टर वाशरमैन, क्या कर रहे हैं ?'' आपको वाशरमैन कहूँ या क्लर्क ?'

4. **ससुराल से भय** – बेला को ससुराल जाने से डर लगता है। उससे सुन रखा था कि ससुराल में मायके जैसी स्वतन्त्रता नहीं होती तथा वहां बहू को अनेक बन्धनों में जकड़कर रहना पड़ता है। इसलिए वह ससुराल जाने के नाम से ही रोने–धोने लगती थी। ससुराल में जाकर जब वह कपड़े धोने, इस्त्री करके, कलफ लगाने आदि का कार्य न कर सकी तो उसे ससुराल वालों के व्यंग्य बाण सहन करने पड़े।

5. **पति के प्रति वितृष्णा** – बेला का पति सदा उससे अजीब, अशिष्ट और अश्लील हरकतें करता रहता था। वह एक आंख टेढ़ी वाला व्यक्ति था। उसके दो दांत भी बाहर निकले हुए थे। उसे देखकर वह क्रोध, दुःख और लज्जा से स्वयं को छिपाने का प्रयास करती थी। उसके पति की इन हरकतों से तंग आकर स्वयं को फांसी लगाने का प्रयास भी किया था पर इसमें असफल रही और फिर मौका देखकर ससुराल से मायके भाग आई थी और मुड़कर नहीं गाई थी।

6. **जीवन में निष्क्रियता** – मायके आकर बेला पढ़ाई करना चाहती थी। परिवार वालों ने उसे पढ़ने न दिया तो वह सिनेमा देखने, कल्पना लोक में विचरण करने लगी। उसका मन कहीं नहीं लगता था। इससे उसके जीवन में निष्क्रियता घर कर गयी थी।

7. **दमित वासनाएं** – बेला का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं था। उसे वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हुआ था। पति का विकृत रूप उसकी कामनाओं को कोई सुख नहीं प्रदान कर सका था। इसलिए जब कथानायक उसके घर रहने लगा तो वह अवसर पाकर अजीब मोह–मग्न दृष्टि से नायक की ओर देखती थी। अकारण ही मुखरित होकर फिल्मी गाने गाते हुए उसके आस–पास चक्कर काटती रहती थी। एक दिन तो वासनाओं के आवेग में वह कथानायक के सम्मुख स्वयं को समर्पित करते हुए उसे अपने साथ कहीं भी ने जाने के लिए कहती है। उसका यह प्रणय निवेदन कथानायक को वहां से पलायन करने पर विवश कर देता है।

8. **जागरुकता** – बेला एक सामान्य धोबी की पुत्री होते हुए भी बदलते समय की परख रखती है। सिनेमा देखने से उसे दुनिया को समझने की नयी दृष्टि प्राप्त हो गई है। वह जानती है कि आज के युग में धोबियों की कोई कद्र नहीं है, परन्तु उसे यह भी विश्वास है कि एक दिन वह भी आयेगा जब उसके भी दिन बदलेंगे क्योंकि परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि बेला एक ऐसी युवती है जो परम्परागत रीति–रिवाजों के कारण बचपन में ही विवाह की वेदी पर अपना बलिदान देने के लिए विवश कर दी जाती है। पति से शारीरिक सुख प्राप्त न करने के कारण उसकी दमित वासनाएं उसे अन्य युवकों को ओर प्रेरित करती हैं। यदि उसे सही दिशा मिलती तो वह पढ़–लिखकर आदर्श युवती बन सकती थी। परन्तु समाज उसे पढ़ने भी नहीं देता है। उसकी विद्रोही प्रवृत्ति उसे समाज को बदलने के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

अध्याय–16
दीप्ति का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित 'जहाज का पंछी' उपन्यास में जब नायक भादुड़ी महाशय के घर नौकरी करने जाता है वहां उसकी मुलाकात दीप्ति से होती है। दीप्ति भादुड़ी महाशय की बेटी है। दीप्ति अपने पिता से विपरीत स्वभाव की है। दीप्ति के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं––

1. **व्यक्तित्व** – दीप्ति भादुड़ी महाशय की सुसंस्कृत, शिष्ट, साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न और सहृदय लड़की थी। कथानायक भी उसके व्यक्त्वि से प्रभावित था। वह बड़ी हंसमुख, ढीठ, स्वस्थ और सुन्दर लड़की थी। वह थोड़ी सी मोटी एवं लम्बी थी, उसका रंग गोरा, चेहरा गोल और लम्बा था । उसकी नाक लम्बी, उभरी हुई ओर कुछ–कुछ नुकीली थी। कथानायक के अनुसार वह अजनता को किसी गुफा की मूर्ति का सजीव चित्रण थी। उसका वास्तविक सौन्दर्य मुख की सुन्दरता पर निर्भर नहीं था। उसके कुण्ठारहित उदार और भावपूर्ण अन्तर को जो अव्यक्त छाया उसके चेहरे पर पड़ती थी वह किसी पर भी गहरा प्रभाव छोड़े बिना न रहती थी।

2. **साहित्यिक रुचि** – दीप्ति की साहित्य में रूचि थी। उसके घर में प्रायः राजनीतिक एवं साहित्यिक संगोष्ठियां होती रहती थीं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जन्म दिवस पर आयोजित एक गोष्ठी में वह रवीन्द्रनाथ की कहानियों पर निबन्ध पढ़ती है। निबन्ध काफी सुलझा हुआ था और विवेचना सन्तुलित ओर विश्लेषणात्मक थी। उसने मोपांसा और चेखव की कहानियों की तुलना में रवीन्द्रनाथ की विशिष्टता को दिखाने का प्रयास किया है। बंगला साहित्य के साथ–साथ उसकी विदेशी साहित्य में भी गहरी रुचि थी।

3. **दक्ष–आयोजिका** – दीप्ति में दक्ष आयोजिका के भी गुण हैं, जो उसके चरित्र में निखार लाते हैं। उनके घर में लड़के–लड़कियों की साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन दीप्ति या उसका भाई सुरेन्द्र करता है। वह अतिथियों के अनुसार मैनू तैयार करवाती थी तथा सबको साहित्य रूचि के अनुसार बोलने का अवसर देती थी। जब नायक रवीन्द्रनाथ के जन्मदिन के अवसर पर अपने विचार रखता है तो दीप्ति प्रकट रूप में उसकी प्रशंसा करती है और उसे सबके बीच बैठने के लिए आमन्त्रित करती है।

4. **ममतामयी नारी** – दीप्ति ने भादुड़ी महाशय के स्वभाव के विपरीत स्वभाव पाया है। वह गुणों की पहचान करके गुणों को आदर देना अपना कर्त्तव्य समझती है चाहे वह व्यक्ति उसके अभिजात वर्ग को निम्न स्तर का ही क्यों न हो। कथानायक को वह उसके कार्य के कारण पूरा आदर और सम्मान देती है। जब कथानायक को भादुड़ी महाशय के अकारण क्रोध के कारण उनका घर त्याग देने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है तो दीप्ति धक्का लगता है। किन्तु वह स्वयं लाचार है। वह नायक से जाते समय अन्तिम शब्द इस प्रकार कहती है– ''केवल इतना ही आशीर्वाद तुमसे चाहती हूं कि मैं भी जीवन में तुम्हारे ही समान अटूट आत्मविश्वास, तुम्हारी ही तरह का अडिग अन्तर्बल, तुम्हारी ही तरह का असीम धैर्य प्राप्त कर सकूं और तुम्हारे ही समान कटीले पथ की पथिक बन सकूं।'' अन्ततः वह झुककर नायक के चरण छू लेती है और कहती है ''जहाँ भी रहो अपनी इस बात को न भूलना।''

5. **मृदु व्यवहार** – दीप्ति का सबके प्रति व्यवहार मृदु है। वह किसी भी व्यक्ति से ऊँच–नीच का व्यवहार नहीं करती है। वह कथानायक से बहन का सम्बन्ध स्थापित करती है तथा उसके काम की प्रशंसा भी करती है। नायक ने भी उपन्यास में

खुले हृदय से दीप्ति के व्यवहार की प्रशंसा की है। नायक उसे कहता है कि वह उसके द्वारा अब तक दिए गए स्नेह का बदला नहीं चुका सकता है। दीप्ति से उसे बहन का प्यार मिला था। दीप्ति के मृदु व्यवहार के कारण उससे बिछुड़ कर उसे दुःख होता है।

अतः दीप्ति के आन्तरिक और बाहरी दोनों ही व्यक्तित्व संतुलित ढांचे में ढले हैं। नायक उसे शक्तिशालिनी एवं आत्मविश्वासी कहता है जो घोरसंकीर्ण वृद्धि, भ्रष्टाचार और शोषक समाज के वातावरण के बीच पत्नी होने पर भी केवल अपने अन्तर के पोषक तत्त्वों के बल पर, बर्फीली चट्टान के ऊपर सदा रहने वाले देवदारु की तरह स्थिर है। वह सद्‌गुणों का आदर करना जानती है।

अध्याय–17
सईद पहलवान का चरित्र–चित्रण

'जहाज का पंछी' इलाचन्द्र जोशी जी कृत एक आत्मकथात्मक शैली का मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है इसमें नायक को काम की खोज में या काम करते हुए कई लोगों से सामना होता है। ऐसे ही सईद पहलवान से उसकी लड़की को हिन्दी पढ़ाने के कारण मिलता है। सईद पहलवान के चरित्र अधिकांश रूप में करीम चाचा के वक्तव्य से उद्घाटित होता है।

1. **परिचय** – सईद पहलवान अखाड़े में व्यायाम करने वाले सभी पहलवानों का सरदार है और हृदय से बड़ा ही उदार, सहृदय और निश्छल व्यक्ति है। सईद पहलवान का पिता कादर अली अपनी मृत्यु के समय उसे करीम चाचा के पास छोड़कर गया था। इसलिए उसके चरित्र पर करीम चाचा के चरित्र का बड़ा प्रभाव है। पिता की मृत्यु के समय उसके अन्दर सभी आवारा किस्म की बुराईयां थी। करीम चाचा उसे धीरे–धीरे रास्ते पर लाए और वह सुधरता चला गया। उसने अपने बाप के नाम को चार चाँद लगा दिये।

2. **वचन का पक्का** – सईद पहलवान वचन का पक्का है । कला उसकी और चम्पाबाई की संतान है। मरते समय चम्पाबाई ने उसे कला का विवाह हिन्दू लड़के से करने के लिए कहा था। पहलवान किए गए वचन के अनुसार कला का विवाह पंचानन नाम के एक हिन्दू लड़के से तय करता है।

3. **उदार एवं सहृदय** – सईद पहलवान उदार एवं सहृदय व्यक्ति है। वह करीम चाचा को अपने बाप की जगह मानता है। उसके लिए उनकी राय आखिरी फैसला होती है। मुसलमान होते हुए भी वह अपनी लड़की का विवाह एक हिन्दू लड़के से करता है जो इस बात का प्रमाण है कि जातिवाद की संकुचित विचारधारा से ग्रस्त नहीं हैं। इससे उसके सहृदय तथा उदार होने का पता चलता है।

4. **कृतज्ञ** – वह कथानायक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। जब नायक वहां के बोझिल वातावरण से दुःखी होता है। वह नायक को अढ़ाई सौ रुपए देता है और कृतज्ञ भाव और सहानुभूति प्रकट करता है –''.....बीच–बीच में आते रहना और जब कभी किसी काम के लिए मेरी जरूरत पड़े तो बगैर किसी तकललुफ के आकर बताना। कला को बहुत रंज होगा। उसे तुमने बहुत जल्दी पंडितानी बना दिया।, इसके लिए शुक्रिया.....।

   अतः सईद पहलवान अखाड़े का सरदार होते हुए भी उदार, सहृदय, निष्कपट एवं सच्चा आदमी है। वह वचन का पक्का है तभी वह जात–पात से ऊपर उठकर अपनी लड़की का विवाह हिन्दु लड़के से करता है। करीम चाचा उसके सम्बन्ध में कहते हैं–''और आदमी ..... वह बड़ी तबीतय का है।''

अध्याय–18

पंचानन का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित 'जहाज का पंछी' में कथानायक पंचानन से परिचय सईद पहलवान की बेटी कला के भावी पति के रूप में होता है। पंचानन के चरित्र की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं––

1. **परिचय** – पंचानन पच्चीस–छब्बीस वर्ष का युवक है। वह बहुत ही शिष्ट, सहृदय और सुन्दर है। जब वह तीन वर्ष का था तभी अनाथ हो चुका था। उसे एक सज्जन पड़ोसी परिवार ने पाल–पोस कर बड़ा किया। जब तक उस परिवार का मुख्या जीवित था उसके बेटों का व्यवहार ठीक था लेकिन उसके मरने के बाद उसके बेटों ने उसे घर से निकाल दिया। जिस कारण उसकी पढ़ाई पूरी न हो सकी।

2. **उद्यमी और अध्यवसायी** – पंचानन उद्यमी ओर अध्यवसायी व्यक्ति के रूप में प्रकट हुआ है। नाना प्रकार की विषम परिस्थितियों को झेलते हुए वह अपनी राह बनाते हुए आगे बढ़ने के प्रयत्न में संलग्न है। उसकी इसी उद्यमशीलता से प्रभावित होकर पहलवान उसे अपना दामाद बनाने का निश्चय करता है।

3. **कृतज्ञ व्यक्ति** – पंचानन कृतज्ञ व्यक्ति है। जब वह भागकर कोलकाता आता है तब वह ट्यूशनों करके अपना गुजारा करता है। वह कुछ रुपए बचाकर बूढ़ी अम्मा को भेजता है क्योंकि उसके बेटे उसकी कोई परवाह नहीं करते हैं। विवाह के बाद वह अम्मा को अपने पास लाने का प्रयत्न करेगा। वह कथानायक का भी कृतज्ञ है क्योंकि उन्होंने इतनी जल्दी कला को हिन्दी पढ़नी एवं लिखनी सिखा दी है।

4. **साहसी एवं विशाल हृदय** – पंचानन का हृदय अत्यन्त विशाल है और समाज के सुधार की उसमें तीव्र लालसा है। एक वेश्या की बेटी से विवाह करने के साहस की आवश्यकता है। पंचानन जैसे व्यक्ति ही आज के युग में एक नए पथ का निर्माण करने का साहस कर सकते है। जिस पर समाज का यह उपेक्षित वर्ग चलकर अपने इस संसार का निर्माण करेगा जिससे उसे न तो फिर अपना परम्परागत मार्ग अपनाना पड़ेगा और न ही उसे घृणित माना जाएगा। इस प्रकार पंचानन निश्चय ही एक विश्व–व्यापी समस्या का अन्त करने के लिए प्रयत्नशील है।

5. **राष्ट्र भाषा से प्रेम** – पंचानन के चरित्र की एक अन्य प्रशंसनीय बात यह है कि उसे अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी से उत्कृष्ट प्रेम हैं वह अपनी भावी पत्नी कला के लिए हिन्दी की शिक्षा पर बराबर जोर डालता है।

   अतः कह सकते हैं कि पंचानन थोड़े समय के लिए उपन्यास में आता है और अपने शिष्ट व्यवहार एवं सहृदयता से सबको प्रभावित करता है। वह समाज में सर्वाधिक त्याज्य समझे जाने वाले वेश्याओं के परिवार से अपने लिए पत्नी चुनता है। उसे अपनी धर्मपत्नी बनाकर साहसपूर्ण कार्य करके समाज को एक नया मार्ग दिखाता है। वह मात्र समाज सुधार की बातें नहीं करता अपितु उसे व्यवहार में भी अपनाता है।

अध्याय–19
'जहाज का पंछी' उपन्यास के आधार पर प्यारे का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा लिखित उपन्यास 'जहाज का पंछी' में कथानायक के सम्पर्क में काफी लोग आते हैं। जिसमें प्यारे भी एक पात्र है। प्यारे का नायक से दो बार मिलन होता है। एक बार आरम्भ में अस्पताल में तथा दूसरी बार जब वह बेरोज़गार सड़कों पर भटक रहा था तब प्यारे से टकराता है। प्यारे के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं––

1. **व्यक्तित्व** – प्यारे जिसका नाम रामदास है की उम्र चालीस–पैतालिस वर्ष की है। वह न तो विशेष पढ़ा–लिखा है, न विशेष बुद्धिमान् है। वह साधारण देहाती किस्म का कुछ सीधा और कुछ टेढ़ी –मेढ़ी गांठ वाला लट्ठ सा लगता है। वह एक धोबी है। परिवार में पत्नी, बेटी, बेटा–बहू तथा एक भौजाई है। अस्पताल में वह तिल्ली का इलाज करवाने आया था।

2. **सरल एवं सहज** – प्यारे का स्वभाव सरल एवं सहज है उसकी सरलता ही उसे नायक से बात करने को प्रेरित करती है। वह बातचीत के दौरान नायक को अपने बारें में सब कुछ बता देता है। इससे उसकी सरलता का पता चलता है।

3. **सहृदय** – प्यारे एक सहृदय व्यक्ति है। वह हृदय से स्वयं जैसा है वैसा ही वह अन्य व्यक्तियों के विषय में भी सोचता है। यही कारण है कि वह अपनी युवा लड़की को भी निश्चल समझकर नायक के पास छोड़ कर घाट पर कपड़े धोने जाता है। जब वह नायक को अपने घर लेकर जाता है तो उसकी आवभगत करता है।

4. **महत्त्वाकांक्षी** – प्यारे एक महत्त्वाकांक्षी धोबी है । उसके अनुसार आजकल लोग धोबी से कपड़ा नहीं धुलवाते हैं। लोग लाण्ड्री में जाना पसन्द करते हैं। इसीलिए वह भी लाण्ड्री खोलना चाहता है। इसके लिए हिसाब–किताब करने के लिए उसे एक ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी। जब वह नायक से दोबारा मिलता है तो उसकी इच्छा पुनः जागृत होती है और नायक के साथ मिलकर लाण्ड्री खोलता है।

5. **चतुर** – प्यारे एक सीधा–सादा व्यक्ति है लेकिन एक चतुर व्यवसायी है। जब वह नायक को काम पर रखता है तो उसे रहने, खाने की व्यवस्था के साथ बीस रुपए माहवार के वेतन पर रखता है। जिससे बाद में झगड़ा न हो। दूसरों की लाण्ड्री से प्यारे को ज्यादा फायदा था क्योंकि धुलाई में लगने वाले सामान के साथ मज़दूरी उसके परिवार की स्वयं थी। इस तरह सीधा दिखने वाला व्यक्ति व्यापार में चतुर था।

   प्यारे का उपन्यास में दो बार आगमन होता है थोड़ी देर के लिए। इससे उसका चरित्र उभर कर नहीं आता। बाद में उसका नायक से कोई सम्पर्क नहीं होता है। प्यारे सरल सहृदय, दूसरों की सहायता के लिए तत्पर तथा व्यवसाय में चतुर व्यक्ति है।

अध्याय–20
भादुड़ी महाशय का चरित्र–चित्रण

इलाचन्द्र जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'जहाज का पंछी' में भादुड़ी महाशय नायक के सम्पर्क में नायक के सम्पर्क में दो बार आते हैं। दोनों बार उनका चरित्र अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ता है। वे एक सफल व्यापरी व राजनीतिज्ञ हैं। वे अहंकारी हैं। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं––

1. **परिचय** – भादुड़ी महाशय का पूरानाम रवेन्द्र मोहन भादुड़ी है। उनकी उम्र पचास साल के आस–पास है। उनके परिवार में पत्नी, पांच पुत्र, पांच पुत्रियां तथा एक विधवा बहन है। वह कुशल व्यवसायी तथा राजनीतिज्ञ हैं।

2. **व्यक्तित्व** – भादुड़ी महाशय से जब कथानायक का प्रथम साक्षात्कार होता है तो उनके व्यक्तित्व में धन की चमक होती है। उन्होंने सुनहरे रेशम का कुर्त्ता, ताजा धुली हुई चुन्नढ़दार ढाका की धोती ओर ग्लेस किड का चमकदार जूता पहने 'छैल चिकनिया' बने हुए थे। उनके एक चौथाई पके बाल तेल से तर थे। टेढ़ी मांग कढ़ी हुई थी, कुरते पर सुनहरी बटन चमक रहे थे, आंखों पर बिना 'रिम का अष्टकोणात्मक चश्मा चढ़ा हुआ था, बाएं हाथ में सुनहरी घड़ी और दाएं हाथ में अनामिका में माणिक जड़ी अंगूठी थी। उनके पहनावे से उच्च वर्ग के होने का पता चलता है।'

3. **अहंकारी** – भादुड़ी महाशय स्वभाव से अहंकारी हैं। जब कथानायक उनसे दयनीय हालत में नौकरी मांगने आता है तब वे उसे दुत्कार कर भगा देते हैं। वह धिानसभा के एम. एल. ए. हैं लेकिन उनके व्यक्तित्व और स्वभाव से जनता के लोक प्रतिनिधि–रूप का आभास नहीं मिलता है।

4. **कथनी और करनी में अन्तर** – भादुड़ी महाशय की कथनी और करनी में अन्तर है। उन्होंने अपने भवन का नाम 'सुदामा निवास' रखा हुआ है। जिससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। कथानक भी भवन का नाम पढ़कर प्रभावित होता है। उसे लगता है कि कोलकाता में यदि कहीं दया मिल सकती है तो यही मिल सकती है। वह सोचता है कि जिस व्यक्ति का सुदामा से प्रेम हो वह निश्चय ही उदारचरित और सहानुभूशील होगा। लेकिन भादुड़ी महाशय से मिलने के बाद उसकी धारणा पर कुठाराघात होता है। जब वे उससे कटु व्यवहार करते हैं।

5. **कान के कच्चे** – भादुड़ी महाशय स्वभाव से कान के कच्चे हैं। उनके घर में उनकी बड़ी बेटी ज्योति की बात मानी जाती है। उनके घर में होने वाली एक साहित्यिक संगोष्ठी में कथानायक भी अपने विचार प्रस्तुत करता है। जिससे सबको आश्चर्य होता है कि एक रसेइया भी साहित्यिक जानकारी रखता है। इस बात को लेकर जयोति अपने पिता के कथानायक के विरूद्ध कान भरती है। भादुड़ी महाशय बिना कथानायक की बात सुने उसे कम्युनिस्टों का जासूस मानकर घर से निकाल देते हैं।

   भादुड़ी महाशय का चरित्र उच्चवर्ग के उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। वह अपने धन, राजनीतिक, व्यावसायिक प्रभाव आदि के अहं में अन्य व्यक्तियों की प्रत्येक प्रकार की स्वतंत्रता का अपहरण करना चाहते हैं। उनका अपना कोई संस्कार नहीं है, जिसके माध्यम से व्यक्ति का व्यक्तित्व एक अनुपम आभा प्राप्त करता है। वे विधान सभा के सदस्य हैं लेकिन उनका लोक–प्रतिनिधि रूप कहीं भी अभिव्यक्त नहीं हुआ है। भादुड़ी महाशय के यहां अनेक राजनीतिक–व्यवसायिक संगोष्ठियों में षड्यन्त्रों और कुचक्रों का निर्माण होता है, क्योंकि आज के युग में इनमें बिना प्रगति करना भी बहुत कठिन है। भादुड़ी महाशय आधुनिक सत्तालोलुप नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सत्ता के लिए कुछ भी कर सकते हैं।